

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176065

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—730—28—4—81—10, 00.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. 1481
J4.25
Accession No. P.G. 14115
Author ज्ञानेश्वर
Title संक्षिप्त पदभाषा . 1950

This book should be returned on or before the date last marked below

संक्षिप्त पदमावत

अर्थात्

मलिक मुहम्मद जायसीकृत पदमावत
काव्य का संक्षिप्त संस्करण

संकलनकर्ता और संपादक

श्यामसुंदरदास, बी० ए०

और

सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९५०

चतुर्थ संस्करण]

[मूल्य २।।]

प्रकाशक
के. मित्रा
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

मुद्रक
श्री अमलकुमार बसु,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड
बनारस ब्रांच ।

खंड-सूची

			पृष्ठांक
[१]	पद्मावती खंड	...	१—१७
[२]	रतनसेन खंड	...	१८—३८
[३]	प्रेम खंड	...	३९—६०
[४]	भेंट खंड	...	६१—७१
[५]	नागमती खंड	...	७२—९४
[६]	राघव चेतन खंड	...	९५—११६
[७]	गोरा बादल खंड	...	११७—१३५
	टिप्पणी	...	१—४१

संक्षिप्त पदमावली

(१) पदमावती खंड

सुमिरौं आदि एक करतारू । जेहि जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू
कीन्हेसि प्रथम जोति परकासू । कीन्हेसि तेइ परबत कैलासू
कीन्हेसि अगिन, पवन, जल, खेहा । कीन्हेसि बहुतै रंग उरेहा
कीन्हेसि धरती, सरग, पतारू । कीन्हेसि बरन बरन औतारू
कीन्हेसि, दिन, दिनअर, ससि, राती । कीन्हेसि नखत, तराइन-पाँती
कीन्हेसि धूप, सीउ औ छाँहा । कीन्हेसि मेघ, बीजु तेहि माँहा
कीन्हेसि सप्त मही वरम्हंडा । कीन्हेसि भुवन चौदहो खंडा

कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाज न काहि ।

पहिले ताकर नाँव लै कथा करौं औगाहि ॥ १ ॥

धनपति उहै जेहिक संसारू । सबै देइ नीति, घट न भँडारू
जावत जगत् हस्ति औ चाँटा । सब कहँ भुगुति रात दिन बाँटा
ताकर दीठि जो सब उपराहीं । मित्र सत्रु कोइ बिसरै नाहीं
पंखि पतंग न बिसरै कोई । परगट गुपुत जहाँ लगि होई
भोग भुगुति बहु भौंति उपाई । सबै खवाइ, आप नहिं खाई

ताकर उहै जो खाना पियना । सब कहैं देइ भुगुति औ जियना
 सबै आस-हर ताकर आसा । वह न काहु के आस निरासा
 जुग जुग देत घटा नहिं उमै हाथ अस कीन्ह ।

और जो दीन्ह जगत महेँ सो सब ताकर दीन्ह ॥ २ ॥

आदि एक बरनौ सोइ राजा । आदि न अंत राज जेहि छाजा
 सदा सरबदा राज करेई । औ जेहि चहै राज तेहि देइ
 छत्रहिं अछत, निछत्रहिं छावा । दूसरि नाहिं जो सरवरि पावा
 परबत ढाह देख सब लोगू । चोँटहिं करै हस्ति सरि जोगू
 बज्रहिं तिनकहिं मारि उड़ाई । तिनहिं बज्र करि दंड बड़ाई
 ताकर कीन्ह न जानै कोई । करै सोइ जो चित्त न होई
 काहू भोग भुगुति सुख साग । काहू भूख बहुत दुख माग
 सबै नास्ति वह अहथिर ऐस साज जेहि केर ।

एक साजै औ भाँजै चहै सँवारै फेर ॥ २ ॥

अलख अरूप अवरन सो कर्ता । वह सब सों सब ओहि सों बरता
 परगट गुप्त सो सरब-बिआपी । धरमी चीन्ह, न चीन्है पापी
 ना ओहि पूत, न पिता न माता । ना ओहि कुटुंब, न कोई सँग नाता
 जना न काहु, न कोई ओहि जना । जहँ लगि सब ताकर सिरजना
 वै सब कीन्ह जहाँ लगि कोई । वह नहिं कीन्ह काहु कर होई
 हुत पहिले अरु अब है सोई । पुनि सो रहै रहै नहिं कोई
 और जो होइ सों बाउर अंधा । दिन दुइ चारि मरै करि धंधा
 बड़ गुनवंत गुसाई चहै सँवारै बेग ।

आ अस गुनी सँवारै जो गुन करै अनेग ॥ ४ ॥

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा । नाम मुहम्मद पृनो-करा
प्रथम जोति विधि ताकर साजी । औ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी
दीपक लेसि जगत कहँ दीन्हा । भा निरमल जग, मारग चीन्हा
जौ न होत अस पुरुष उजारा । सूझि न परत पंथ अँधियारा
दुसरे ठाँवँ दैव वै लिखे । भए धरमी जे पाढ़त सिखे
जेहि नहि लीन्ह जनमभरि नाऊँ । ता कहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ
जगत बसीठ दई ओहि कीन्हा । दुइ जग तरा नावँ जेहि लीन्हा

गुन अवगुन विधि पूछव होइहि लेख औ जोख ।

वह बिनउव होइ आगे करब जगत कर मोख ॥ ५ ॥

सेरसाहि देहली सुलतानू । चारिउ खंड तपै जस भानू
ओही छाज छात औ पाटा । सब राजै भुईँ धरा लिलाटा
जाति सूर औ खँड़े सूरा । औ बुधिवंत सबै गुन पूरा
सूर नवाए नव-खंड वई । सातउ दीप दुनी सब नई
तहँ लगि राज खड़ग करि लीन्हा । इसकंदर जुलकरन जो कीन्हा
हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी । जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी
औ अति गरू भूमिपति भारी । टेकि भूमि सब सिहिटि सँभारी
दीन्ह असीस मुहम्मद करहु जुगहि जुग राज ।

बादसाह तुम जगत के जग तुम्हार मुहताज ॥ ६ ॥

सैयद असरफ पीर पियारा । जेहि मोहिं पथ दीन्ह उजियारा
लेसा हिये प्रेम कर दीया । उठी जोति, भा निरमल हीया
मारग हुत अँधियार जो सूझा । भा अँजोर, सब जाना बूझा
खार समुद्र पाप मोर मेला । बोहित-धरम लीन्ह कै चेला

उन्ह मोर कर बूझत कै गहा । पायों तीर घाट जो अहा
जाकहँ ऐस होइ कंधारा । तुरत बेगि सो पावै पारा
दस्तगीर गाढ़े कै साथी । वह अवगाह, दीन्ह तेहि हाथी

जहाँगीर वै चिस्ती निहकलंक जस चाँद ।

वै मखदूम जगत के हौं ओहि घर कै बाँद ॥ ७ ॥

ओहि घर रतन एक निरमरा । हाजी सेख सबै गुन भरा
तेहि घर दुइ दीपक उजियारे । पंथ ' देइ कहँ दैव सँवारे
सेख मुहम्मद पून्यो-करा । सेख कमाल जगत निरमरा
दुआँ अचल ध्रुव डोलहिं नाहीं । मेरु खिखिद तिन्हहुँ उपराहीं
दीन्ह रूप औ जोति गोसाईं । कीन्ह खंभ दुई जग के ताईं
दुहूँ खंभ टेके सब मही । दुहूँ के भार सिहिटि थिर रही
जेहि दरसे औ परसे पाया । पाप हरा, निरमल भइ काया

मुहम्मद तेइ निचित पथ जेहि संग मुरसिद पीर ।

जेहिके नाव औ खेवक बेगि लाग सो तीर ॥ ८ ॥

गुरु मेहदी खेवक मैं सेवा । चलै उताइल जेहि कर खेवा
अगुआ भयउ सेख वुरहानू । पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियानू
अलहदाद भल तेहि कर गुरू । दीन दुनी रोसन सुरखुरू
सैयद मुहम्मद कै वै चेला । सिद्ध-पुरुष-संगम जेहि खेला
दानियाल गुरु पंथ लखाए । हजरत ख्वाज खिजिर तेहि पाए
भए प्रसन्न ओहि हजरत ख्वाजे । लिए मेरइ जहँ सैयद राजे
ओहि सेवत मैं पाई करनी । उधरी जीभ, प्रेम कबि बरनी

वै सुगुरु हौ चेला निति बिनवौ भा चेर ।

उन्ह हुत देखै पायउँ दरस गोसाईं केर ॥ ९ ॥

एक-नयन कबि मुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेहि कबि सुनी
चाँद जैस जग बिधि औतारा । दीन्ह कलंक, कीन्ह उजियारा
जग सूझा एकै नयनाहाँ । उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ
जौ लहि अंबहि डाभ न होई । तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई
कीन्ह समुद्र पानि जो खारा । तौ अति भयउ असूझ अपारा
जौ सुमेरु तिरसूल बिनासा । भा कंचन-गिरि लाग अकासा
जौ लहि घरी कलंक न परा । काँच होइ नहि कंचन-करा

एक नयन जस दरपन और निरमल तेहि भाउ ।

सब रुपवंतइ पाउँ गहि मुख जोहहि कै चाउ ॥ १० ॥

चारि मीत कबि मुहमद पाए । जोरि मिताई सरि पहुँचाए
यूसुफ मलिक पँडित बहु ग्यानी । पहिलै भेद-बात वै जानी
पुनि सलार कादिम मतिमाहाँ । खाँड़े दान उभै निति बाहाँ
मियाँ सलोने सिंध बरियारू । बीर खेत-रन खड़क जुभारू
सेख बड़े, बड़ सिद्ध बखाना । किए आदेस सिद्ध बड़ माना
चारिउ चतुरदसा गुन पढ़े । औ संजोग गोसाईं गढ़े
बिरिछ होइ जौ चंदन पासा । चंदन होइ बेद तेहि बासा

मुहमद चारिउ मीत मिलि भए जो एकै चित्त ।

एहि जग साथ जो निबहा ओहि जग बिछुरन कित्त ॥ ११ ॥

जायस नगर धरम-अस्थानू । तहाँ आइ कबि कीन्ह बखानू
औ बिनती पँडितन सन भजा । टूट सँवारहु, मेरवहु सजा

हौं पंडितन केर पछलग्ग। किछु कहि चला तबल देइ डगा
हिय भंडार नग अहै जो पूँजी। खोली जीभ तारु कै कूँजी
रतन-पदारथ बोल जो बोला। सुरस प्रेम मधु भरी अमोला
जेहि के बोल बिरह कै घाया। कहँ तेहि भूख, कहँ तेहि माया ?
फेरें भेख रहै भा तपा। धूरि-लपेटा मानिक छपा

मुहमद कवि जौ बिरह भा ना तन रक्त न माँसु।

जेइ मुख देखा तेइ हँसा सुनि तेहि आयउ आँसु ॥ १२ ॥

सन नव सै सैंतालिस अहा। कथा अरंभ बैन कवि कहा
सिंघल दीप पदमिनी रानी। रतनसेन चितउर गढ़ आनी
अलउदीन देहली सुलतानू। राघौ चेतन कीन्ह बखानू
सुना साहि गढ़ छेंका आइ। हिन्दू तुरकन्ह भई लराई
आदि अंत जस गाथा अहै। लिखि भाषा चौपाई कहै
कवि विआस रस-कँवला पूरी। दूरि सो नियर, नियर सो दूरी
नियरे दूर फूल जस काँटा। दूरि जो नियरे जस गुड़ चाँटा

भँवर आइ वनखंड सन लेइ कँवल कै बास।

दादुर बास न पावई भलहि जो आछै पास ॥ १३ ॥

सिंघलदीप कथा अब गावौ। औ सो पदमिनि बरनि सुनावौ
निरमल दरपन भाँति बिसेखा। जो जेहि रूप सो तैसइ देखा
धनि सो दीप जहँ दीपक बारी। औ पदमिनि जो दर्ई सँवारी
गंधबसेन सुगंध नरेसू। सो राजा, वह ताकर देसू
लंका सुना जो रावन राजू। तेहू चाहि बड़ ताकर साजू

अस्त्रपतिक-सिरमौर कहावै । गजपतीक आँकुस-गज नावै
नरपतीक कहँ और नरिंदू । भूपतीक जग दूसर इंदू
ऐस चकवै राजा चहूँ खंड भय होइ ।

सबै आइ सिर नावहिं सरवति करै न कोइ ॥ ४ ॥

जबहिं दीप नियरावा जाई । जनु कैलास नियर भा आई
घन अमराउ लाग चहुँ पासा । उठा भूमि हुत लागि अकासा
तरिवर सबै मलयगिरि लाई । भइ जग छाँह रैन होइ आई
मलय-समीर सोहावन छाँहा । जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ
ओही छाँह रैन होइ आवै । हरियर सबै अकास देखावै
पथिक जो पहुँचै सहि कै धाम् । दुख विसरै, सुख होई बिसराम्
जेइ वह पाई छाँह अनूपा । फिरि नहिं आइ सहै यह धूपा
अस अमराउ सघन घन वरनि न पारौ अंत ।

फूलै फरै छवौ रितु जानहु सदा बसंत ॥ १५ ॥

बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाखा । करहिं हुलास देखि कै साखा
भोर होत बोलहिं चुहचूही । बोलहिं पाँडुक “एकै तूही”
सारौ सुआ जो रहचह करहीं । कुरहिं परेवा और कबरहीं
‘पीव-पीव’ कर लाग पपीहा । ‘तुही-तुही’ कर गडुरी जीहा
‘कुहू-कुहू’ करि कोइलि राखा । औ भिंगराज बोल बहु भाखा
‘दही-दही’ करि महरि पुकारा । हारिल बिनवै आपन हारा
कुहुकहिं मोर सोहावन लागा । होइ कुराहर बोलहिं कागा
जावत पंखी जगत के भरि बैठे अमराउँ ।

आपनि आपनि भाखा लेहिं दई कर नाउँ ॥ १६ ॥

पैग पैग पर कुवाँ बावरी । साजी बैठक और पाँवरी
 और कुंड बहु ठावहिं ठाऊँ । सब तीरथ औ तिन्ह के नाऊँ
 मठ मंडप चहुँ पास सँवारे । तपा जपा सब आसन मारे
 मानसरोदक बरनौँ काहा । भरा समुद अस अति अवगाहा
 पानि मोति अस निरमल तासू । अमृत आनि कपूर सुबासू
 खँड खँड सीढ़ी भईं गरेरी । उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरी
 फूला कवँल रहा होइ राता । सहस सहस पखुरिन कर छाता

ऊपर पाल चहुँ दिसि अमृत-फल सब रूख ।

देखि रूप सरबर कै गै पियास औ भूख ॥ १७ ॥

आस पास बहु अमृत बारी । फरीं अपूर, होइ रखवारी
 पुनि फुलवारि लागि चहुँ पासा । बिरिछ बेधि चंदन भइ बासा
 सिंघलनगर देखु पुनि बसा । धनि राजा अस जेकै दसा
 ऊँची पौरी ऊँच अवासा । जनु कैलास इंद्र कर बासा
 राव रंक सब घर घर सुखी । जो दीखै सो हँसता-मुखी
 रचि रचि साजे चंदन चौरा । पोतें अगर मेढ़ औ गौरा
 मबै गुनी औ पंडित ग्याता । संसकिरित सब के मुख बाता

अस कै मँदिर सवारैं जनु सिवलोक अनूप ।

घर घर नारि पदमिनी मोहहिं दरसन रूप ॥ १८ ॥

पुनि आए सिंघलगढ़ पासा । का बरनौँ जनु लाग अकासा
 तरहिं करिन्ह वासुकि कै पोठी । ऊपर इंद्रलोक पर दीठी
 परा खोह चहुँ दिसी अस बाँका । काँपै जाँघ, जाइ नहिं भाँका
 अगम असृक् देखि डर गवाई । परै सो सपत-पतारहिं जाई

नव पौरी बाँकी नव खंडा । नवौ जो चढ़ै जाइ बरम्हंडा
कंचन कोट जरे नग सीसा । नखतहिं भरी बीजु जनु दीसा
लंका चाहि ऊँच गढ़ ताका । निरखि न जाइ, दीठि मन थाका

हिय न समाइ दीठि नहिं, जानहुँ ठाढ़ सुमेर ।

कहँ लगि कहौ उँचाई कहँ लगि बरनौ फेर ॥१९॥

निति गढ़ बाँचि चलै ससि सूरु । नाहिं त होइ बाजि-रथ चूरु
पौरी नवौ बज्र कै साजी । सहस सहस तहँ बैठे पाजी
फिरहिं जाँच कोतवार सुभौरी । काँपै पावँ चपत वह पौरी
पौरिहि पौरि सिंह गढ़ि काढ़े । डरपहिं लोग देखि तहँ ठाढ़े
बहु बिधान वै नाहर गढ़े । जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े
दारहिं पूँछ पसारहिं जीहा । कुंजर डरहिं कि गुंजरि लीहा
कनक-सिला गढ़ि सीढ़ी लाई । जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताई

नवौ खंड नव पौरी औ तहँ बज्र केवार ।

चारि बसेरे सौ चढ़ै, सत सौ उतरै पार ॥२०॥

नव पौरी पर दसवाँ दुवारा । तेहि पर बाज राज-घरियारा
घरी सो बैठि गने घरियारी । पहर पहर सो आपनि बारी
जबहीं घरी पूजि तेहि मारा । घरी घरी घरियार पुकारा
परा जो डाँड़ जगत सब डाँड़ा । का निचिंत माटी कर भांडा ?
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ काँचे । आएहु रहै, न थिर होइ बाँचे
घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ । का निचिंत होइ सोड बटाऊ ?
पहरहिं पहर गजर निति होई । हिया बजर, मन जाग न सोई

मुहमद जीवन जल भरन रहँट घरी कै रीति ।

घरी जो आई ज्यों भरी, ढरी, जनम गा बीति ॥२१॥

गढ़ पर बसहिं भारि गढ़पती । असुपति गजपति भू-नर-पती
सब धौराहर सोने साजा । अपने अपने घरं सब राजा
रूपवंत धनवंत सभागे । परस-पखान पौरि तिन्ह लागे
भोग विलास सदा सब माना । दुख चिंता कोई जनम न जाना
मँदिर मँदिर के चौपारी । बैठि कुँवर सब खेलहिं सारी
पासा ढरहिं खेल भल होई । खड़गदान सरि पूज न कोई
भाँट वरनि कहि कीरति भली । पावहिं हस्ति घोड़ सिंघली
मँदिर मँदिर फुलवारी चोवा चंदन बास ।

निसि दिन रहै बसंत तहँ छवौ ऋतु बारह मास ॥२२॥

पुनि चल देखा राज-दुआरा । मानुष फिरहिं पाइ नहिं बारा
हस्ति सिंघली बाँधे बारा । जनु सजीव सब ठाढ़ पहाग
कौनौ सेत पीत रतनारे । कौनौ हरे धूम औ कारे
पुनि बाँधे रज-बार तुरंगा । का बरनौ जस उन्हकै रंगा
मन तें अगमन डोलहिं वागा । लेत उसास गगन सिर लागा
पौन समान समुद्र पर धावहिं । बूढ़ न पाँव, पार होइ आवहिं
थिर न रहहिं रिस लोह चवाहीं । भाँजहिं पूँछ, सीस उपराहीं
अस तुषार सब देखे जनु मन के रथवाह ।

नैन-पलक पहुँचावहिं जहँ पहुँचा कोई चाह ॥२३॥

राजसभा ; पुनि देख बईठी । इन्द्रसभा जनु परि गै डीठी
धनि राजा असि सभा सँवारी । जानहु फूलि रही फुलवारी

मुकुट बाँधि सब बैठे राजा । दर निसान नित जिन्हके बाजा
रूपवंत, मनि दिपै लिलाटा । माथे छात, बैठ सब पाटा
मानहुँ कैवल सरोवर फूले । सभा क रूप देखि मन भूले
पान कपूर मेद कस्तूरी । सुगँध बास भरि रही अपूरी
माँझ ऊँच इंद्रासन साजा । गंधर्वसेन बैठ तहँ राजा

छत्र गगन लागि ताकर, सूर तबै जस आप ।

सभा कैवल अस बिगसइ, माथे बड़ परताप ॥ २४ ॥

साजा राजमंदिर कैलासू । सोने कर सब धरति अकासू
सात खंड धौराहर साजा । उहै सँवारि सकै अस राजा
वरनौ राजमंदिर रनिवासू । जनु अछरीन्ह भरा कैलासू
सोरह सहस पदमिनी रानी । एक एक तें रूप बखानी
अति सुरूप औ अति सुकुवारी । पान फूल के रहहि अधारी
तेहि ऊपर चंपावति रानी । महा सुरूप पाट-परधानी
सकल दीप महँ जेती रानी । तिन्ह महँ दीपक बारह-बानी

कुँवरि बतीसा लच्छनी अस सब माँह अनूप ।

जावत सिंघलदीप के सबै बखानै रूप ॥ २५ ॥

चंपावति जो रूप सँवारी । पदमावति चाहै औतारी
भै चाहै असि कथा सलोनी । मेदि न जाइ लिखी जस होनी
सिंघलदीप भयउ तब नाऊँ । जो अस दिया बरा तेहि ठाऊँ
प्रथम सो जोति गगन निरमई । पुनि सो पिता माथे मनि भई
पुनि बह जोति मातु-घट आई । तेहि ओदर आदर बहु पाई

जस अवधान पूर होइ मासू । दिन दिन हिये होइ परगासू ।
जस अंचल महँ छिपै न दीया । तस उँजियार दिखावै हीया
सोने मँदिर सँवारहिँ औ चंदन सब लीप ।

दिया जो मनि सिवलोक महँ उपना सिंघलदीप ॥ २६ ॥
भए दस मास पूरि भइ घरी । पदमावति कन्या औतरी
जानौ सूर किरिन हुति काढ़ी । सूरुज कला घाटि, वह बाढ़ी
भा निसि महँ दिनकर परकासू । सब उजियार भयउ कैलासू ।
इते रूप मूर्ति परगटी । पूनौ ससी छीन होइ घटी
घटतहि घटत अमावस भई । दिन दुइ लाज गाढ़ि मुई गई
पुनि जो उठि दुइज होइ नई । निहकलंक ससि बिधि निरमई
पदुम-गंध बेधा जग बासा । भौर पतंग भए चहुँ पासा
इते रूप भै कन्या जेहिँ सरि पूज न कोइ ।

धनि सो देस रूपवंता जहाँ जनम अस होइ ॥ २७ ॥
भै छठि राति छठीं सुख मानी । रहस कूद सौँ रैन बिहानी
भा बिहान पंडित सब आए । काढ़ि पुरान जनम अरथाए
कन्यारासि उदय जग कीया । पदमावती नाम अस दीया
कहेन्हि जनमपत्री जो लिखी । देइ असीस बहुरे जोतिषी
पाँच बरस महँ भै सो बारी । दीन्ह पुरान पढ़ै बैसारी
भै पदमावति पंडित गुनी । चहुँ खंड के राजन्ह सुनी
सात दीप के बर जो ओनाहीं । उत्तर पावहिँ फिरि फिरि जाहीं
राजा कहै गरब कै अहाँ इंद्र सिवलोक ।
को सरवरि है मोरे कासौँ करौँ बरोक ॥ १८ ॥

वारह वरस माँह भै रानी । राजें सुना सँयोग सयानी
सात खंड धौराहर तासू । सो पदमिनि कहैं दीन्ह निवासू
औ दीन्हीं सँग सखी सहेली । जो सँग करें रहसि रस-केली
सवै नवल पिउ मंग न सोई । कवैल पास जनु विगसीं कोई
सुआ एक पदमावति ठाऊँ । महा पंडित हीरामन नाऊँ
दई दीन्ह पंखिहि असि जोती । नैन रतन, मुख मानिक मोती
कंचन-बरन सुआ अति लोना । मानहुँ मिला सोहागहि सोना
रहाहि एक सँग दोऊ पढ़हि सासतर बेद ।

बरम्हा सोस डोलावहीं सुनत लाग तस भेद ॥ २९ ॥
भै अनंत पदमावति बारी । रचि रचि विधि सब कला सँवारी
जग बेधा तेहि अंग-सुबासा । भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासा
बेनी नाग मलयगिरि पैठी । ससि माथे होइ दूइज बैठी
भौह धनुक साधे सर फेरै । नयन कुरंग भूलि जनु हेरै
नासक कीर, कवैल मुख सोहा । पदमिनि रूप देखि जग मोहा
मानिक अधर, दसन जनु हीरा । हिय हुलसे कुच कनक-जँभीरा
केहरि लंक, गवन गज हारे । सुर नर देखि माथ भुईँ धारे
जग कोइ दीठि न आवै आछहि नैन अकास ।

जोगि जती संन्यासी तप साधहि तेहि आस ॥ ३० ॥
एक दिवस पदमावति रानी । हीरामनि तई कहा सयानी
'सुनु, हीरामनि, कहौ बुझाई । दिन दिन मदन सतावै आई
पिता हमार न चालै बाता । आसहि बोलि सकै नहि माता
देस देस के बर मोहि आवहि । पित हमार न आँखि लगावहि

जोवन मोर भयउ जस गंगा । देह देह हम लाग अनंगा
हीरामनि तब कहा बुझाई । 'बिधि कर लिखा मेटि नहि जाई
अग्या देउ देखौ फिरि देसा । तोहि जोग बर मिलै नरेसा

जौ लगि मैं फिरि आवौ मन चित धरहु निवारि' ।

सुनत रहा कोइ दुरजन राजहि कहा बिचारि ॥ ३१ ॥

राजा सुना दीठि भै आना । बुधि जो देहि सँग सुआ सयाना
भयउ रजायसु 'मारहु सूआ' । सूर सुनाव चाँद जहँ ऊआ
शत्रु सुआ के नाऊ बारी । सुनि धाए जस धाव मैजारी
तब लगि रानी सुआ छपावा । जब लगि व्याध न आवै पावा
'पिता क आयसु माथे मोरे । कहहु जाय बिनवौ कर जोरे
पंखि न कोई होइ सुजानू । जानै भुगुति, कि आन उड़ानू
सुआ जो पढ़ै पढ़ाए बैना । तेहि कत बुधि जेहि हिये नैना

मानिक मोती देखि वह हिये न ग्यान करेइ ।

दारिउँ दाखि जानि के अर्वाहि ठोर भरि लेइ' ॥ ३२ ॥

वै तौ फिरे उतर अस पावा । बिनवा सुआ हिये डर खावा
'रानी, तुम जुग जुग सुख पाऊ । होइ अग्या बनबास तौ जाऊँ
ठाकुर अंत चहै जेहि मारा । तेहि सेवक कर कहाँ उबारा ?'
रानी उतर दीन्ह कै माया । 'जौ जिउ जाइ रहै किमि काया ?
हीरामन, तू प्रान परेवा । धोख न लाग करत तोहि सेवा
तोहि सेवा बिछुरन नहि आखौ । पीजर हिये घालि कै राखौ
हौ मानुस, तू पंखि पियारा । धरम क प्रीति तहाँ केइ मारा' ?

सुअटा रहै खुरुक जिउ अबहिं काल सो आव ।

सत्रु अहै जो करिया कबहुँ सो बोरै नाव ॥ ३१ ॥

एक दिवस पून्यो तिथि आई । मानसरोदक चली नहाई
पदमावति सब सखी बुलाई । जनु फुलवारि सबै चलि आई
खेलत मानसरोवर गई । जाइ पाल पर ठाढ़ी भई
धरी तीर सब कंचुकि सारी । सरबर महुँ पैठीं सब बारी
लागीं केलि करै मम नीरा । हंस लजाइ बैठ ओहि तीरा
बाद मेलि कै खेल पसारा । हार देइ जो खेलत हारा
सखी एक तेइ खेल न जाना । मै अचेत मनि-हार गवाँना
लागीं सब मिलि हेरै बूढ़ि बूढ़ि एक साथ ।

कोइ उठी मोती लेइ काहू घोंघा हाथ ॥ ३४ ॥

कहा मानसर 'चाह सो पाई । पारस-रूप इहाँ लागि आई
भा निरमल तिन्ह पायन्ह परसे । पावा रूप रूप के दरसे
मलय-समीर बास तन आई । भा सीतल, गै तपनि बुभाई
न जनौ कौन पौन लेइ आवा । पुन्य-दसा भै, पाप गँवावा'
ततखन हार बेगि उतराना । पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना
बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा । भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा
पावा रूप रूप जस चहा । ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा
नयन जो देख कबँल भा, निरमल नीर सरीर ।

हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोत मग हीर ॥ ३५ ॥

पदमावति तहँ खेल दुलारी । सुआ मँदिर महुँ देखि मजारी
कहेसि 'चलौ जौ लहि तन पाँखा' । जिउ लै उड़ा ताकि बन-ढाँखा

जाइ परा बनखँड जिउ लीन्हें । मिले पंखि, बहु आदर कीन्हें
 आनि धरोन्हि आगे फरि साखा । भुगुति भेंट जौ लहि बिधि राखा
 पाइ भुगुति सुख तेहि मन भयऊ । दुख जो अहा बिसरि सब गयऊ
 ए गुसाईँ तूँ ऐस विधाता । जावत जीव सबन्ह भुकदाता
 पाहन महीं नहिँ पतँग बिसारा । जहँ तोहि सुमिर दीन्ह तुई चारा

तौ लहि सोग बिछोह कर भोजन परा न पेट ।

पुनि बिसरन भा सुमिरना जेव संपति भै भेंट ॥ ३६ ॥

पदमावति पहुँ आइ भँडारी । कहेसि मँदिर महीं परी मजारी
 सुआ जो उतर देत रह पूछा । उड़िगा, पिँजर न बोलै छूँछा
 रानी सुना सबहि सुख गयऊ । जनु निसि परी, अस्त दिन भयऊ
 गहने गही चाँद कै करा । आँसु गगन जल नखतन्ह भरा
 दूट पाल सरवर बहि लागे । कवँल बूड़, मधुकर उड़ि भागे
 एहि विधि आँसु नखत होइ चूए । गगन छाँड़ि सरवर महीं ऊए
 चिहुर चुई मोतिन कै माला । अब सँकेत बाँधा चहुँ पाला

‘उड़ि यह सुअटा कहँ बसा खोजु सखी सो बासु ।

दहुँ है धरती की सरग, पौन न पावै तासु’ ॥ ३७ ॥

चहुँ पास समुभावहि सखी । ‘कहाँ सो अब पाउब, गा पँखी
 जौ लहि पींजर अहा परेवा । रहा बंदि महीं कीन्हेसि सेवा
 तेहि बंदि हुति छुटै जो पावा । पुनि फिरि बंदि होइ कित आवा ?
 वै उड़ान-फर तहियै खाए । जब भा पंखि, पाँख तन आए
 पींजर जेहि क सौपि तेहि गयऊ । जो जाकर सो ताकर भयऊ

दस दुआर जेहि पींजर माहों । कैसे बाँच मैंजारी पाहों ?
यह धरती अस केतन लीला । पेट गाढ़ अस, वहुरि न ढीला
जहाँ न राति दिवस है जहाँ न पौन न पानि ।

तेहि वन सुअटा चलि बसा कौन मिलावै आनि' ? ॥३८॥
सुए तहाँ दिन दस कल काटी । आय बियाध दुका लेइ टाटी
पैग पैग भुइँ चापत आवा । पंखिन्ह देखि हिये डर खावा
वै तौ बड़े और वन ताका । पंडित सुआ भूलि मन थाका
बँधिका सुआ करत सुख-केली । चूरि पाँख मेलेसि धरि डेली
तहवाँ बहुत पंखि खरभरहीं । आपु आपु महँ रोदन करहीं
'जौ न होत चारा कै आसा । कित चिरिहार दुकत लेइ लासा ?
एहि भूठी माया मन भूला । ज्यों पंखी तैसै तन फूला
हम तौ बुद्धि गँवावा बिख-चारा अस खाइ ।

तैं सुअटा पंडित होइ कैसे बाभा आइ ?' ॥३९॥
सुए कहा 'हमहुँ अस भूले । टूट हिंडोल गरब जेहि भूले
केरा के बन लीन्ह बसेरा । परा साथ तहँ बैरी केरा
भूले हमहुँ गरब तेहि माहों । सो बिसरा पावा जेहि पाहों
पंखिन्ह जौ बुधि होइ उजारी । पढ़ा सुआ कित धरै मैंजारी
तादिन ब्याधि भए जिउलेवा । उठे पाँख, भा नावँ परेवा
भै बियाधि तिसना सँग खाधू । सूभै भुगुति, न सूभ बियाधू
हम निचित वह आव छिपाना । कौन बियाधहि दोष अपाना
सो औगुन कित कीजिए जिउ दीजै जेहि काज ।

अब कहना है किछु नहीं मस्ट भला पखिराज' ॥४०॥

(२) रतनसेन खंड

चित्रसेन चितउर गढ़ राजा । कै गढ़ कोट चित्र सम साजा
तेहि कुल रतनसेन उजियारा । धनि जननी जनमा अस बारा
पंडित गुनि सामुद्रिक देखा । देखि रूप औ लखन बिसेखा
रतनसेन यह कुल निरमरा । रतन-जोति मनि माथे परा
पदुम पदारथ-लिखी सो जोरी । चाँद सुरुज जस होइ अँजोरी
जस मालति कहँ भौर बियोगी । तस ओहि लागि होइ यह जोगी
सिंघलदीप जाइ यह पावै । सिद्ध होइ चितउर लेइ आवै
भोग भोज जस माना, बिक्रम साका कीन्ह ।

परखि सो रतन पारखी, सबै लखन लिखि दीन्ह ॥ १ ॥

चितउरगढ़ कर एक बनिजारा । सिंघलदीप चला बैपारा
बाम्हन हुत एक निपट भिखारी । सो पुनि चला चलत बैपारी
रिन काहू कर लीन्हैसि काढ़ी । मकु तहँ गए होइ किछु बाढ़ी
मारग कठिन बहुत दुख भयऊ । नौधि समुद्र दीप ओहि गयऊ
देखि हाट किछु सूझ न ओरा । सबै बहुत, किछु देख न थोरा
पै सुठि ऊँच बनिज तहँ केरा । धनी पाव, निधनी मुख हेरा
लाख करोरिन्ह बस्तु बिकाई । सहसन केरि न कोउ ओनाई
सबहीं लीन्ह बेसाहना और घर कीन्ह बहोर ।

बाम्हन तहँवा लेइ का ? गाँठि साँठि सुठि थोर ॥ २ ॥

‘भूरै ठाढ़ हौं, काहे क आवा । बनिज न मिला रहा पछितावा
लाभ जानि आयउँ एहि हाटा । मूर गँवाइ चलेउँ तेहि बाटा
अपने चलत सो कीन्ह कुबानी । लाभ न देख, मूर भै हानी’
तबहीं व्याध सुआ लेइ आवा । कंचन-बरन अनूप सुहावा
बेचै लाग हाट लै ओही । मोल रतन मानिक जहँ होही
बाम्हन आइ सुआ सों पूछा । ‘दहूँ गुनवंत कि निरगुन छूछा
पंडित हौ तौ सुनावहु बेदू । बिनु पूछे पाइय नहिं भेदू

हौ बाम्हन औ पंडित कहु आपन गुन सोइ ।

पढ़े के आगे जो पढ़े दून लाभ तेहि होइ’ ॥ ३ ॥

‘तब गुन मोहि अहा, हो देवा । जब पिंजर हुत छूट परेवा
अब गुन कौन जो बँद, जजमाना । घालि मँजूसा बेचै आना
रोवत रक्त भयउ मुख राता । तन भा पियर, कहौं का बाता ?’
सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू । ‘करि पंखिन्ह कहँ मया, न मारू
निठुर होइ जिव बधसि परावा । हत्या केरि न तोहि डर आवा’
कहसि ‘पंखि का दोस जनावा । निठुर तेइ जे परमँस खावा
जौ न होहि अस परमँस, खाधू । कित पंखिन्ह कहँ धरै वियाधू ?’

बाम्हन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गरंथ ।

मिला आइ कै साथिन्ह भा चितउर के पंथ ॥ ४ ॥

‘तब लागि चित्रसेन सब साजा । रतनसेन चितउर भा राजा
आइ बात तेहि आगे चली । ‘राजा, बनिज आए सिंघली
हैं गजमोति भरी सब सीपी । और वस्तु बहु सिंघलदीपी
बाम्हन एक सुआ लेइ आवा । कंचन-बरन अनूप सोहावा

राते स्याम कंठ दुइ काँठा। राते डहन लिखा सब पाठा
औ दुइ नयन सुहावत राता। राते ठोर अमीरस बाता
मस्तक टीका काँध जनेऊ। कवि बियास, पंडित सहदेऊ

बोल अरथ सों बोलै सुनत सीस सब डोल।

राज मँदिर महुँ चाहिय अस वह सुआ अमोल' ॥ ५ ॥

मै रजाइ जन दस दौराए। बाम्हन सुआ बेगि लेइ आए
विप्र असीसि विनति औधारा। सुआ जीउँ नहिँ करौ निरारा
सुआ असीस दीन्ह बड़ साजू। 'बड़ परताप अखंडित राजू
भागवंत बिधि बड़ आतारा। जहाँ भाग तहुँ रूप जोहारा
कोइ बिनु पूछे बोल जो बोला। होइ बोल माँटी के मोला
गुनी न कोई आपु सराहा। जो बिकाइ गुन कहा सो चाहा
जौ लहि गुन परगट नहिँ होइ। तौ लहि मरम न जानै कोई

चतुरवेद हौ पंडित हीरामन मोहि नावँ।

पदमावति सौ मेरवौ सेव करौ तेहि ठावँ' ॥ ६ ॥

रतनसेन हीरामन चीन्हा। एक लाख बाम्हन कहँ दीन्हा
विप्र असीसि जो कीन्ह पयाना। सुआ सो राजमँदिर महुँ आना
वगनौ काह सुआ कै भाखा। धनि सों नावँ हीरामन राखा
जौ बोलै राजा मुख जोवा। जानौ मोतिन हार परोवा
जौ बोलै तौ मानिक मूँगा। नाहित मौन बाँधि रह गूँगा
मनहुँ मारि मुख अमृत मेला। गुरु होइ आप, कीन्ह जग चेला
सुरुज चाँद कै कथा जो कहेऊ। पेम क कहनि लाइ चित ग हेऊ

जो जो सुनै धुनै सिर राजहि प्रीति अगाहु ।

अस गुनवंता नाहि भल बाउर करिहै काहु ॥ ७ ॥

दिन दस पाँच तहाँ जो भए । राजा कतहुँ अहेरै गए
नागमती रूपवंती रानी । सब रनिवास पाट-परधानी
कै सिंगार कर दरपन लीन्हा । दरसन देखि गरब जिउ कीन्हा
बोलहु सुआ 'पियारे-नाहाँ । मोरे रूप कोइ जग माहाँ ?'
हँसत सुआ पहुँ आई सो नारी । दीन्ह कसौटी ओपनिवारी
सुआ 'वानि कसि कहु कस सोना । सिंघलदीप तोर कस लोना ?
कौन रूप तोरी रूपमनी । दहुँ हौं लोनि कि वै पदमिनी ?

जो न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कै आन ।

है कोई एहि जगत महुँ मोरे रूप समान' ॥ ८ ॥

सुमिरि रूप पदमावति केरा । हँसा सुआ, रानी मुख हेरा
'जेहि सरबर महुँ हंस न आवा । बगुला तेहि सर हंस कहावा
दई कीन्ह अस जगत अनूपा । एक एक तें आगरि रूपा
कै मन गरब न छाजा काहु । चाँद घटा औ लागेउ राहु
लोनि बिलोनि तहाँ को कहै । लोनी सोई कंत जेहि चहै
का पूछहु सिंघल कै नारी । दिनहिं न पूजै निसि अधियारी
पुहुप सुबास सो तिन्ह कै काया । जहाँ माथ का बरनौ पाया ?

गढ़ी सो सोने सोधै भरी सो रूपै भाग' ।

सुनत रुखि भइ रानी हिये लोन अस लाग ॥ ९ ॥

'जो यह सुआ मँदिर मँह अहई । कबहुँ बात राजा सौं कहई
सुनि राजा पुनि होइ बियोगी । छाँड़ै राज, चलै होइ जोगी

बिष राखिय नहिं, होइ अँकूरू । सबद न देइ भोर तमचूरू'
 धाय दामिनी-बेग हँकारी । ओहि सौपा हीये रिस भारी
 'देखु, सुआ यह है मँदचाला । भयउ न ताकर जाकर पाला
 मुख कह आन, पेट बस आना । तेहि औगुन दस हाट बिकाना
 पंखि न राखिय होइ कुभाखी । लेइ तहँ मारु जहाँ नहिं साखी

जेहि दिन कहँ मैं डरति हौं रैन छपावौं सूर ।

लै चह दीन्ह कवँल कहँ मोकहँ, होइ मयूर' ॥ १० ॥

धाय सुआ लेइ मारै गई । समुझि गियान हिये मति भई
 सुआ सो राजा कर बिसरामी । मारि न जाइ चहै जेहि स्वामी
 यह पंडित—खंडित बैरागू । दोष ताहि जेहि सूझ न आगू
 जो तिरिया के काज न जाना । परै धोख, पाछे पछताना
 नागमती नागिनि-बुधि ताऊ । सुआ मयूर होइ नहिं काऊ
 जो न कंत के आयसु माहीं । कौन भरोस नारि कै वाही ?
 मकु यह खोज होइ निसि आए । तुरय-रोग हरि-माथे जाए

तुइ सो छपाए ना छपै एक हत्या, एक पाप ।

अंतहिं करहिं बिनास लेइ सेइ साखी देइँ आप ॥ ११ ॥

राखा सुआ धाय, मति साजा । भयउ खोज निसि आयउ राजा
 रानी उतर मान सौ दीन्हा । 'पंडित सुआ मँजारी लीन्हा
 मैं पूछा सिंघल पदमिनी । उतर दीन्ह, तुम्ह को नागिनी ?
 वहजस दिन, तुम निसि अँधियारी । कहौं बसंत करील क बारी
 का तोर पुरुष रैन कर राऊ । उलू न जान दिवस कर भाऊ

का वह पंखि कूट मुँह कूटे । अस बड़ बोल जीभ मुख छोटे
जहर चुबै जो जो कह बाता । अस हतियार लिए मुख राता
माथे नहि बैसारिय जौ सुठि सुआ सलोन ।

कान दुटैं जेहि पहिरे का लेइ करब सो सोन ? ॥ १२ ॥
राजै सुनि बियोग तस माना । जैसे हिय बिक्रम पछिताना
वह हीरामन पंडित सूआ । जो बोलै मुख अमृत चूआ
'की परान घट आनहु मती । की चलि होहु सुआ सँग सती'
चौद जैस धनि जजियरि अही । भा पिउ-रोस, गहन अस गही
परम सोहाग निबाहि न पारी । भा दोहाग सेवा जब हारी
ऐसे गरब न भूलै कोई । जेहि डर बहुत पियारी सोई
रानी आइ धाय के पासा । सुआ भुआ सेँवर के आसा

‘मैं पिउ-प्रीति भरोसे गरब कीन्ह जिउ माँह ।

तेहि रिस हौं परहेली, रूसेउ नागर नाहँ’ ॥ १३ ॥
उतर धाय तब दीन्ह रिसाई । ‘रिस आपुहि, बुधि औरहि खाइ
मैं जो कहा रिसजिनि करु बाला । को न गयउ एहिरिस कर घाला ?’
जुआ-हारि समुझी मन रानी । सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी
‘मानु, पीय, हौं गरब न कीन्हा । कंत तुम्हार मरम मैं लीन्हा
मिलतहु महाँ जनु अहौ निरारे । तुम्ह सौं अहै अँदेस, पियारे !
मैं जानेउं तुम्ह मोही माहाँ । देखौं ताकि तौ हौ सब पाहाँ
का रानी, का चेरी कोई । जा कहँ मया करहु भल सोई
तुम्ह सौं कोई न जीता हारे बररुचि भोज ।

पहिले आपु जो खोवै करै तुम्हार सो खोज’ ॥ १४ ॥

राजै कहा 'सत्य कहु, सूआ । बिनु सतजस सेंवर कर भूआ
 होइ मुख रात सत्य के बाता । जहाँ सत्य तहँ धरम सँघाता'
 'सत्य कहत, राजा, जिउ जाऊ । पै मुख असत न भाखौ काऊ
 पदमावति राजा कै बारी । पदुम-गंध ससि बिधि औतारी
 ससि मुख, अंग मलयगिरि रानी । कनक सुगंध दुआदस बानी
 अहँ जो पदमिनि सिंघल माहाँ । सुगँध रूप सब तिन्हकै छाहाँ
 हीरामन हौ तेहि क परेवा । कंठा फूट करत तेहि सेवा
 जौ लहि जिअौ राति-दिन सवँरौ ओहि कर नावँ ।

मुख राता, तन हरियर दुहँ जगत लेइ जावँ ॥ १५ ॥
 हीरामन जो कवँल बखाना । सुनि राजा होइ भँवर भुलाना
 'अहा जो कनक सुवासित ठाऊँ । कस न होइ हीरामन नाऊँ
 का राजा, कस दीप उतंगू । जेहि रे सुनत मन भयउ पतंगू
 कहु सुगंध धनि कस निरमली । भा अलि-संग कि अबहीं कली'
 'का राजा हौ वरनौ तासू । सिंघलदीप आहि कैलासू
 गंध्रवसेन तहाँ बड़ राजा । अछरिन्ह महँ इन्द्रासन माजा
 सो पदमावति तेहि कर बारी । जो सब दीप माँह उजियारी
 उअत सूर जस देखिय चाँद छपै तेहि धूप ।

ऐसै सबै जाहि छपि पदमावति के रूप' ॥ १६ ॥
 सुनि रवि नावँ रतन भा राता । 'पंडित फेरि उहे कहु बाता
 तैं सुरंग मूरति वह कही । चित महँ लागि चित्र होइ रही
 जनु होइ सुरुज आइ मन बसी । सब घट पूरि हिये परगसी
 अब हौ सुरुज चाँद वह छाया । जल बिनु मीन रकत बिनु काया'

‘पेम सुनत मन भूल न राजा । कठिन पेम, सिर देइ तौ छाजा
पेम-फाँद जो परा न छूटा । जीउ दीन्ह पै फाँद न टूटा’
‘अब मैं पेम-पंथ सिर मेला । पाँव न ठेलु, रखि कै चेला

जस अनूप, तैं बरनेसि, नखसिख बरनु सिँगार ।

है मोहि आस मिलै कै जौ मेरवै करतार’ ॥१७॥

‘का सिँगार ओहि बरनौ, राजा । ओहि क सिँगार ओही पै छाजा
प्रथम सीस कस्तूरी केसा । बलि बासुकि, का और नरेसा ?
भौर केस, वह मालति रानी । विसहर लुरे लेहि अरवानी
बेनी छोरि झार जौ बारा । सरग पतार होइ अंधियारा
कोंवर कुटिल केस नग कारे । लहरन्हि भरे भुअँग बैसारे
बेधे जनौ मलयगिरि बासा । सीस चढ़े लोटहि चहुँ पासा
घुँघुरवार अलकैं विषभरी । सँकरैं पेम चहैं गिउ परी

अस फँदवार केस वै परा सीस गिउ फाँद ।

अस्टौ कुरी नाग सब अरुभ केस के बाँद ॥१८॥

वरनौ माँग सीस उपराहीं । सेंदुर अबहि चढ़ा जेहि नाही
विनु सेंदुर अस जानहु दीआ । उजियर पंथ रैन महीं कीआ
कंचन-रेख कसौटी कसी । जनु घन महीं दामिनि परगसी
सुरुज-किरिन जनु गगन बिसेखी । जमुना माँह सुरसती देखी
खड़ै धार रुहिर जनु भरा । करवत लेइ बेनी पर धरा
तेहि पर । पूरि धरे जो मोती । जमुना माँह गंग कै सोती
करवत तपा लेहि होइ चूरु । मकु सो रुहिर लेइ देइ सेंदूरु

कनक दुवादस बानि होइ चह सोहाग वह माँग ।

सेवा करहिं नखत सब उवै गगन जस गाँग ॥१९॥

कहौ लिलार दुइज कै जोती । दुइजहि जोति कहाँ जग ओती
सहस किरिन जो सुरुज दिपाई । देखि लिलार सोउ छपि जाई
का सरवरि तेहि देउँ मयंकू । चाँद कलंकी, वह निकलंकू
औ चाँदहि पुनि राहु गहासा । वह बिनु राहु सदा परगासा
तेहि लिलार पर तिलक बईठा । दुइज-पाट जानहु धुव दीठा
कनक-पाट जनु बैठा राजा । सबै सिँगार अत्र लेइ साजा
ओहि आगे थिर रहा न कोऊ । दहूँ का कहँ अस जुरै सँजोऊ

खरग, धनुक, चक; बान दुइ जग-मारन तिहि नावँ ।

सुनि कै परा मुरुछि कै 'मोकहँ हए कुठावँ' ॥२०॥

'भौहँ स्याम धनुक जनु ताना । जा सहुँ हेर मार बिष-बाना
हनै धुनै उन्ह भौहनि चढ़े । केइ हथियार काल अस गढ़े ?
नैन बाँक, सरि पूज न कोऊ । मानसरोदक उलथहिं दोऊ
राते कँवल करहिं अलि भवाँ । घूमहिं माति चहहिं अपसवाँ
उठहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा । चाहहिं उलथि गगन कइँ लागा
जग डोलै डोलत नैनाहँ । उलटि अड़ार जाहिं पल माहँ
समुद-हिलोर फिरहिं जनु भूले । खंजन लरहिं, मिरिग जनु भूले

सुभर सरोवर नयन वै मानिक भरे तरंग ।

आवत तीर फिरावहीं काल भौर तेहि संग ॥२१॥

बरुनी का बरनौ इमि बनी । साथे बान जानु दुइ अनी
जुरी राम-रावन कै सैना । बीच समुद्र भए दुइ नैना

नासिक खरग देउँ कह जोगू । खरग खीन, वह बदन-सँजोगू
नासिक देखि लजानेउ सूआ । सूक आइ बेसरि होइ ऊआ
पुहुप सुगंध करहि एहि आसा । मकु हिरकाइ लेइ हम पासा
अधर दसन पर नासिक सोभा । दारिउँ बिब देखि सुक लोभा
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं । दहुँ वह रस कोउ पाव कि नाहीं

देखि अमिय-रस अधरन्ह भयउ नासिका कीर ।

पौन बास पहुँचावै अस रम छाँड़ि न तीर ॥ २२ ॥

अधर सुरंग अमी-रस-भरे । बिब सुरंग लाजि बन फरे
हीरा लेइ सो बिद्रुम-धारा । बिहँसत जगत होइ उजियारा
अस कै अधर अमी भरि राखे । अबहि अछूत, न काहू चाखे
दसन चौक बैठे जनु हीरा । औ बिच बिच रँग स्याम गँभोरा
जस भादौ-निसि दामिनि दीसी । चमकि उठै तस बनी बतीसी
जेहि दिन दसनजोति निरमई । बहुतै जोति जोति ओहि भई
जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी । तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी

हँसन दसन अस चमके पाहन उठे छरकि ।

दारिउँ सरि जो न कै सका, फाटेउ हिया दरक्कि ॥ २३ ॥

रसना कहौ जो कह रस-बाता । अमृत-बैन सुनत मन राता
भरे प्रेम-रस बोलै बोला । सुनै सो माति घूमि कै डोला
पुनि बरनौ का सुरंग कपोला । एक नारँग दुइ किए अमोला
तेहि कपोल बाँए तिल परा । जेइ तिल देख सो तिल तिल जरा
अगिनि-बान जानौ तिल सूभा । एक कटाछ लाख दस जूभा

सो तिल गाल भेटि नहिं गयऊ । अब वह गाल काल जग भयऊ
देखत नैन परी परछाहीं । तेहि तें रात साम उपराहीं

सो तिल देखि कपोल पर गगन रहा ध्रुव गाढ़ि ।

खिनहिं उठै, खिन बूढ़ै, डोलै नहिं तिल छाँड़ि ॥ २४ ॥

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे । कुंडल कनक रचे उजियारे
मनि-कुंडल भलकैं अति लोने । जनु कौधा लौकहिं दुइ कोने
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज चमकाहीं । नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं
वरनौं गीउ कंबु कै रीसी । कंचन-तार लागि जनु सीसी
कुंदै फेरि जानु गिउ काढ़ी । हरी पुछार ठगी जनु ठाढ़ी
गए मयूर तमचूर जो हारे । उहै पुकारहिं सौँभ सकारे
धनि ओहि गीउ दीन्ह बिधि भाऊ । दहुँ का सौँ लेइ करै मेराऊ
कंठसिरी मुकतावली सोहै अभरन गीउ ।

लागै कंठहार होइ को तप साधा जीउ ? ॥ २५ ॥

कनक-दंड दुइ भुजा कलाई । जानौं फेरि कुँदेरै भाई
कदलि-गाभ कै जानौं जोरी । औ राती ओहि कँवल-हथोरी
जानौ रक्त हथोरी बूढ़ी । रवि-परभात तात, वै जूड़ी
हिया थार, कुच कंचन लारू । कनक कचोर उठे जनु चारू
बेधे भौर कंट केतकी । चाहहिं बेध कीन्ह कंचुकी
जोबन बान लेहि नहिं बागा । चाहहिं हुलसि हिये हठि लागा
उतंग जँभीर होइ रखवारी । छुइ को सकै राजा कै बारी

राजा बहुत मुए तपि लाइ लाइ भुइँ माथ ।

काहू छुवै न पाए गए मरोरत हाथ ॥ २६ ॥

पेट परत जनु चंदन लावा । कुहँ कुहँ केसर बरन सुहावा
 साम भुअंगिनि रोमावली । नाभी निकसि कैवल कहँ चली
 आइ दुअौ नारँग बिच भई । देखि मयूर ठमकि रहि गई
 मनहु चढ़ी भौरन्ह कै पाँती । चंदन खाँभ बास कै माती
 वैरिनि पीठ लीन्ह वह पाछे । जनु फिरि चली अपछरा काछे
 मलयागिरि कै पीठ सँवारी । बेनी नागिनि चढ़ी जो कारी
 लहरें देति पीठ जनु चढ़ी । चीर-ओहार केंचु ली मढ़ी
 पन्नग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ बईठ ।

छत्र, सिंघासन, राज, धन ताकहँ होइ जो डीठ ॥ २७ ॥
 लंक पहुमि अस आहि न काहू । केहरि कहाँ न ओहि सरि ताहू
 बसा-लंक बरनै जग भीनी । तेहि ते अधिक लंक वह खोनी
 परिहँस पियर भए तेहि बसा । लिए डंक लोगन्ह कहँ डसा
 मानहुँ नालखंड दुइ भए । दुहुँ बिच लंक तार रहि गए
 हिय के मुरे चले वह तागा । पैग देत कित सहि सक लागा ?
 नाभिकुंड सो मलय-समीरू । समुद भँवर जस भँवै गँभीरू
 तीवइ कैवल-सुगन्ध सरीरू । समुद-लहरि सोहै तन चीरू

बरनि सिंगार न जानेउँ नखसिख जैस अभोग ।

तस जग किछुइ न पायउँ उपमा देउँ ओहि जोग' ॥ २८ ॥

सुनतहि राजा गा मुरछाई । जानौ लहरि सुरुज कै आइ
 पेम-धाव-दुख जान न कोई । जेहि लागै जानै पै सोई
 परा सो पेम-समुद्र अपारा । लहरहि लहर होइ बिसँभारा

बिरह-भौर होइ भाँवरि देई । खिन खिन जीउ हिलोरा लेई
 खिनहिँ उसास बूढ़ि जिउ जाई । खिनहिँ उठै निसरै बौराई
 खिनहिँ पीत, खिन होइ मुख सेता । खिनहिँ चेत, खिन होइ अचेता
 कठिन मरन ते प्रेम-बेवस्था । ना जिउ जियै, न दसवँ अवस्था

जनु लेनिहार न लेहिँ जिउ हरहिँ तरासहिँ ताहि ।

एतनै बोल आव मुख करै “तराहि तराहि” ॥ २९ ॥

जहँ लगि कुटुँब लोग औ नेगी । राजा राय आय सब बेगी
 जावत गुनी गारुड़ी आए । ओम्हा, बैद, सयान बोलाए
 राजहिँ आहि लखन कै करा । सकति-बान मोहा है परा
 नहिँ सो राम, हनिवँत बड़ि दूरी । क ‘लेइ आव सजीवन-मूरी ?
 जब भा चेत उठा बैरागा । बाउर जनै सोइ उठि जागा
 आवत जग बालक जस रोआ । उठा रोइ ‘हा ग्यान सो खोआ’
 अव जिउ उहाँ, इहाँ तन सूना । कब लगि रहै परान-बिहूना
 अहुठ हाथ तन-भरवर, हिया कैवल तेहि माहँ ।

नैनहि जानहु नीयरे, कर पहुँचत औगाह ॥ ३० ॥

सबन्ह कहा ‘मन समुझहु राजा । काल सेंति कै जूझ न छाजा
 तासैं जूझ जात जो जीता । जानत क्रिस्न तजा गोपीता
 औ न नेह काहू सैं कीजै । नावँ मिटै, काहे जिउ दीजै’
 सुए कहा ‘मन बूझहु राजा । करब पिरीति कठिन है काजा
 तुम राजा जेई’ घर पोई । कवँल न भेटेउ, भेटेउ कोई
 जानहिँ भौरि जो तेहि पथ लूटे । जीउ दीन्ह औ दियहु न छूटे
 कठिन आहि सिंघल कर राजू । पाइय नाहिँ जूझ कर साजू

साधन्ह सिद्धि न पाइय जौ लगि सधै न तप्प ।

सो पै जानै बापुरा करै जो सीस कलप्प ॥ ११ ॥

का भा जोग-कथनि के कथे । निकसै घीउ न बिन दधि मथे
जौ लहि आप हेराइ न कोई । तौ लहि हेरत पाव न सोई
तू राजा का पहिरसि कंथा । तोरे घरहि माँझ दस पंथा
काम, क्रोध, तिस्ना, मद, माया । पाँचौ चोर न छाँड़हि काया'
सुनि सो बात राजा मन जागा । पलक न मार, पेम चित लागा
'गुरु बिरह-चिनगी जो मेला । जो सुलगाइ लेइ सो चेला
अब करि फनिग भृंग कै करा । भौर होहुँ जेहि कारन जरा
फूल फूल फिरि पूँछौ, जौ पहुँचौ ओहि केत ।

तन नेवछावरि कै मिलौ ज्यौ मधुकर जिउदेत' ॥ ३२ ॥

बंधु मीत बहुतै समुभावा । मान न राजा कोउ भुलावा
उपजी पेम-पीर जेहि आई । परबोधत होइ अधिक सो आई
तजा राज, राजा भा जोगी । औ किँगरी कर गहेउ बियोगी
तन बिसँभर, मन बाउर लटा । अरुभा पेम, परी सिर जटा
चंद्र-बदन औ चंदन-देहा । भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा
कंथा पहिरि दंड कर गहा । सिद्ध होइ कहँ गोरख कहा
मुद्रा स्रवन, कंठ जपमाला । कर उदपान, काँध बघछाला
चला भुगुति माँगै कहँ साधि कया तप जोग ।

सिद्ध होइ पदमावति जेहि कर हिये बियोग ॥ ३३ ॥

गनक कहहिँ गनि 'गौन न आजू । दिन लइ चलहु, होइ सिध कानू'
पेम-पंथ दिन घरी न देखा । तब देखै जब होइ सरेखा

जेहि तन पेम कहाँ तेहि माँसू । कया न रकत नैन नहि आँसू
 पंडित भूल न जाने चालू । जीउ लेत दिन पूछ न कालू
 सती कि बौरी पूछहि पाँडे । औ घर पैठि कि सैतै भाँडे
 मरै जो चलै गंग-गति लेई । तेहि दिन कहाँ घरी को देई ?
 मैं घर बार कहाँ कर पावा । घरी क आपन, अंत परावा

हौं रे पथिक पखेरू जेहि बन मोर निबाहु ।

खेलि चला तेहि बन कहँ तुम अपने घर जाहु' ॥ ३४ ॥

चहुँ दिसि आन साँटिया फेरी । भै कटकाई राजा केरी
 'राजा चला साजि कै जोगू । साजहु बेगि चलहु सब लोगू
 गरब जो चढ़े तुरय की पीठी । अब भुईँ चलहु सरग कै डीठी'
 बिनवै रतनसेन कै माया । 'माथे छात, पाट नित पाया
 बिलसहु नौ लख लच्छि पियारी । राज छाँड़ि जिनि होहु भिखारी
 निति चंदन लागै जेहि देहा । सो तन देख भरत अब खेहा
 सब दिन रहेहु करत तुम भोगू । सो कैसे साधव तप जोगू ?

राजपाट, दर, परिगह तुम्ह ही सौँ उजियार ।

बैठि भोग रस मानहु कै न चलहु आँधियार' ॥ ३५ ॥

'मोहिं यह लोभ सुनाव न माया । काकर सुख, काकर यह काया ?
 जो निआन तन होइहि छारा । माटिहि पोखि मरै को भारा ?
 जौ भल होत राज औ भोगू । गोपिचंद नहिं साधत जोगू'
 रोवहिं नागमती रनिवासू । 'केइ तुम्ह कंत दीन्ह बनबासू
 अब को हमहिं करहि भोगिनी । हमहू साथ होब जोगिनी

तुम्ह अस बिछुरै पीउ पिरिता । जहँवाँ राम तहाँ सँग सीता
जौ लहि जिउ सँग छाँड़ि न काया । करिहौं सेव, पखरिहौं पाया
देहिं असीस सबै मिलि तुम्ह माथे निति छात ।

राज करहु चितउरगढ़ राखहु पिय अहिवात' ॥ ३६ ॥

‘तुम्ह तिरिया मति हीन तुम्हारी । मूरख सो जो मतै घर-नारी
राघव जो सीता सँग लाई । रावन हरी, कौन सिधि पाई ?
यह संसार सपन कर लेखा । बिछुरि गए जानौं नहिं देखा’
रोवत माय, न बहुरत बारा । रतन चला, घर भा अधियारा
‘बार मोर जो राजहि रता । सो लै चला, सुआ परबता’
रोवहिं रानी, तजहिं पराना । नोचहिं बार, करहिं खरिहाना
चूरहिं गिउ-अभरन, उर-हारा । ‘अब का पर हम करब सिंगारा ?’
टूटे मन नौ मोती फूटे मन दस काँच ।

लीन्ह समेटि सब अभरन होइगा दुख कर नाच ॥ ३७ ॥

निकसा राजा सिंगी पूरी । छाँड़ा नगर मेलि कै धूरी
राय रान सब भए बियोगी । सोरह सहस कुँवर भए जोगी
नगर नगर औ गाँवहिं गाँवाँ । छाँड़ि चले सब ठाँवहिं ठाँवाँ
का कर मढ़, का कर घर माया । ताकर सब जाकर जिउ काया
आगे सगुन सगुनियै ताका । दहिने माछ रूप के टाँका
भरेकलस तरुनी जल आई । ‘दहिउ लेहु’ ग्वालनि गोहराई
मालिनि आव मौर लिए गाँथे । खंजन बैठ नाग के माथे
जा कहँ सगुन होहिं अस औ गवनै जेहि आस ।

अष्ट महासिधि तेहि कहँ जस कवि कहा बियास ॥ ३८ ॥

भयउ पयान चला पुनि राजा । सिंगि-नाद जोगिन कर बाजा
 कहेन्हि 'आजु किछु थोर पयाना । काल्हि पयान दूरि है जाना
 ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई । तब हम कहब पुरुष भल सोई
 है आगे परबत कै बाटा । बिषम पहार अगम सुठि घाटा
 करहु दीठि थिर होइ बटाऊ । आगे देखि धरहु भुइँ पाऊ
 पाँयन पहिरि लेहु सब पौरी । काँट धसै, न गड़ै अँकरौरी
 परे आइ बन परबत माहाँ । दंडाकरन बीभ-वन जाहाँ

एक बाट गइ सिंघल, दूसरि लंक समीप ।

हैं आगे पथ दूऔ दहुँ गौनब केहि दीप' ॥ ३९ ॥

ततखन दोला सुआ सरेखा । 'अगुआ सोइ पंथ जेइ देखा
 सुनु मत, काज चहसि जौ साजा । पहुँचहु नगर बिजयगिरि राजा'
 मासेक लाग चलत तेहि बाटा । उतरे जाइ समुद के घाटा
 रतनसेन भा जोगी-जती । सुनि भेंटै आवा गजपती
 'आए भलेहि, मया अब कीजै । पहुनाई कहैं आयसु दीजै'
 'सुनहु, गजपती, उतर हमारा । हम तुम्ह एकै, भाव निरारा
 इहै बहुत जौ बोहित पावौ । तुम्ह तैं सिंघलदीप सिधावौ

जहाँ मोहि निजु जाना कटक होउँ लेइ पार ।

जौ रे जिऔ तौ बहुरौ मरौ त ओहि के बार' ॥ ४० ॥

गजपति कहा 'सीस पर माँगा । बोहित नाव न होइहि खाँगा
 ए सब देउँ आनि नव-गाढ़े । फूल सोइ जो महेसुर चढ़े
 पै गोसाईँ सन एक बिनाती । मारग कठिन जाब केहि भाँती'
 'गजपति' यह मन सकती-सीऊ । पै जेहि पेम कहाँ तेहि जीऊ

जौ पै जीउ बाँध सत बेरा । बरु जिउ जाइ फिरै नहिं फेरा
हौं पदमावति कर भिखमंगा । दीठि न आव समुद औ गंगा
जेहि कारन गिउ काथरि कंथा । जहाँ सो मिलै जावँ तेहि पंथा

सरग सीस, धर धरती, हिया सो पेम-समुंद ।

नैन कौड़िया होइ रहे लेइ लेइ उठहिं सो बुंद ॥४१॥

सो न डाल देखा गजपती । राजा सत्त दत्त दुहुँ सँती
निहचै चला भरम जिउ खोई । साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई
निहचै चला छौंड़ि कै राजू । बोहित दीन्ह, दीन्ह सब साजू
चढ़ा बेगि, सब बोहित पेले । धनि सो पुरुष पेम जेइ खेले
जम बन रेंगि चलै गज-ठाटी । बोहित चले, समुद गा पाटी
धावहिं बोहित मन उपराहीं । सहस कोस एक पल महँ जाहीं
समुद अपार सरग जुनु लागा । सरग न घाल गनै बैरागा

‘दस महँ एक जाइ कोइ करम, धरम, तप, नेम ।

बोहित पार होइ जब तबहिं कुसल औ खेम’ ॥४२॥

राजै कहा ‘कीन्ह मैं पेमा । जहाँ पेम कहँ कुसल खेमा
सायर तरै हिये सत पूरा । जौ जिउ सत, कायर पुनि सूरा
तेइ सत बोहित कुरी चलाए । तेइ सत पवन पंख जुनु लाए
सत साथी, सत कर संसारू । सत्त खेइ लेइ आवै पारू’
उठै लहरि जुनु ठाढ़ पहारा । चढ़ै सरग औ परै पतारा
डोलहिं बोहित जहरै खाहीं । खिन तर होहिं, खिनहिं उपराहीं
राजै सो सत हिरदै बाँधा । जेहि सत टेकि करै गिरि काँधा

खार समुद सो नाँवा आए समुद जहँ खीर ।

मिले समुद वै सातौ बेहर बेहर नीर ॥४३॥

खीर समुद का बरनौ नीरू । सेत सरूप, पियत जस खीरू
दधि-समुद्र देखत तह दाधा । पेम क लुबुध दगध पै साधा
आए३ उदधि समुद्र अपारा । धरती सरग जरै तेहि भारा
सुरा समुद पुनि राजा आवा । महुआ मद-छाता देखरावा
पुनि किलकिला समुद महँ आए । गा-धीरज, देखत डर खाए
उठै लहरि परबत कै नाई । फिरि आवै जोजन सौ ताई
धरती लेइ सरग लहि वाढ़ा । सकल समुद जानहुँ भा ठाढ़ा
गै औसान सबन्ह कर देखि समुद कै बाढ़ि ।

नियर होत जनु लीलै रहा नैन अस काढ़ि ॥४४॥

हीरामन राजा सौ बोला । 'एही समुद आए सत डोला
सिंघलदीप जो नाहिं निबाहू । एही ठाँवँ साँकर सब काहू
एहि किलकिला समुद्र गँभीरू । जेहि गुन होइ सो पावै तीरू
इहै समुद्र-पंथ मँभधारा । खाँड़े कै असि धार निनारा'
राजै दीन्ह कटक कहँ बीरा । 'सुपुरुष होहु, करहु मन धीरा'
ठाकुर 'जेहिक सूर भा कोई । कटक सूर पुनि आपुहि होई
जौ लहि सती न जिउ सत बाँधा । तौ लहि देइ कहाँ न काँधा
कान समुद धँसि लीन्हेसि भा पाछे सब कोइ ।

कोइ काहू न सँभारै आपनि आपनि होइ ॥४५॥

कोइ बोहित जस पौन उड़ाहीं॥ कोई चमकि बीजु अस जाहीं
कोई जस भल धाव तुखारू । कोई जैस बैल गरियारू

कोइ जानहुँ हरुआ रथ हाँका । कोइ गरुअ भनर बहु थाका
कोइ रेंगहि जानहुँ चाँटी । कोइ टूटि होहि तर माटी
कोइ खाहि पौन कर भोला । कोइ करहि पात अस डोला
कोइ परहि भौर जल माहाँ । फिरत रहहि, कोइ देइ न बाहाँ
राजा कर भा अगमन खेवा । खेवक आगे सुआ परेवा

कोइ दिन मिला सबेरे, कोइ आवा पछ-राति ।

जाकर जस जस साजु हुत सो उतरा तेहि भाँति ॥ ४६ ॥

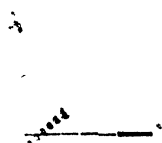
सतएँ समुद मानसर आए । मन जो कीन्ह साहस, सिधि पाए
गा अंधियार, ॐ रैन-मसि छूटी । भा भिनसार किरिन-रबि फूटी
'अस्ति अस्ति' सब साथी बोले । अंध जो अहै नैन बिधि खोले
कवल बिगस तस बिहँसी देहीं । भौर दसन होइ कै रस लेहीं
पूछा राजै 'कहु गुरु सूआ । न जनौं आजु कहाँ दहुँ ऊआ
कबहुँ न ऐस जुड़ान सरीरु । परा अगिनि महँ मलय-समीरु
निकसत आव किरिन-रबि-रेखा । तिमिर गए निरमल जग देखा

और दखिन दिसि नीयरे कंचन-मेरु देखाव ।

जनु बसत रिनु आवै तैसि बास जग आव' ॥ ४७ ॥

'तू राजा जस बिकरम आदी । तू हरिचन्द बैन सतबादी
जीत पेम तुइँ भूमि अकासू । दीठि परा सिंहल-कैलासू
तहाँ देखु पदमावति रामा । भौर न जाइ, न पंखी नामा
कंचन-मेरु देखाव सो जहाँ । महादेव कर मंडप तहाँ
माघ मास, पाछिल पछ लागे । सिरी-पंचमी होइहि आगे

उघरिहि महादेव कर बारू । पूजिहि जाइ सकल संसारू
 पदमावति पुनि पूजै आवा । होइहि इहि मिस दीस-मेरावा
 तुम्ह गौनहु ओहि मंडप, हौं पदमावति पास ।
 पूजै आइ वसंत जब तब पूजै मन-आस' ॥ ४८ ॥



(३) प्रेम खंड

पदमावति तेहि जोग सँजोगा । परी पेम-बस गहे बियोगा
नींद न परे रैनि जौ आवा । सेज कँवाच जानु कोइ लावा
दहै चंद औ चंदन चीरू । दगध करै तन बिरह गँभीरू
कलप समान रैन तेहि बाढ़ी । तिल तिल भर जुगजुग जिमि गाढ़ी
गहै बीन मकु रैन बिहाई । ससि-बाहन तहँ रहै आनाई
पुनि धनि सिंघ उरेहै लागै । ऐसिहि विथा रैन सब जागै
कहँ वह भौर कँवल-रस-लेवा । आइ परै होइ धिरिनि परेवा

सो धनि बिरह पतंग भइ जरा चहै तेहि दीप ।

कंत न आव भिरिंग होइ का चंदन तन लीप ? ॥ १ ॥

परी बिरह बन जानहुँ घेरी । अगम असूझ जहाँ लगि हेरी
चतुर दिसा चितवै जनु भूली । सो बन कहँ जहँ मालति फूली ?
कँवल भौर ओही बन पावै । को मिलाइ तन-तपनि बुझावै ?
अंग अंग अस कँवल सरीरा । हिय भा पियर कहै पर पीरा
चहै दरस, रबि कीन्ह बिगासू । भौर-दीठि मनो लागि अकासू
पूँछै धाय, 'बारि, कहु बाता । तुइँ जस कवँल फूल रँग राता
केसर-बरन हिया भा तोरा । मानहुँ मनहिं भयउ किछु भोरा

पौन न पावै संचरै भौर न तहाँ बईठ ।

भूलि कूरंगिनि कस भई जानु सिंघ तुइँ डीठ' ॥ २ ॥

‘धाय’ सिंह बरु खातेउ मारी । की तसि रहति अही जसि बारी
 जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू । तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू
 अब जोबन-बारी को राखा । कुंजर-बिरह बिधंसे साखा
 मैं जानेउँ जोबन रस-भोगू । जोबन कठिन सँताप बियांगू
 ‘पदमावति, तुई समुद सयानी । तोहि सरि समुद न पूजै, रानी
 नदी समाहिं समुद महाँ आई । समुद डोलि कहु कहाँ समाई ?
 अबहीं कवँल-करी हिय तोरा । आइहि भौर जो तो कहँ जोरा

जब लगि पीउ मिलै नहि साधु पेम कै पीर ।

जैसे सीप सेवाति कहँ तपै समुद मँझ नीर’ ॥ ३ ॥

‘देहै, धाय, जोबन एहि जीऊ । जानहुँ परा अगिनि महाँ वीऊ
 करवत सहौं होत दुइ आधा । सहि न जाइ जोबन के दाधा
 विरह समुद्र भरा असँभारा । भौर मेलि जिउ लहरिन्ह मारा’
 कहेसि ‘पेम जौ उपना, बारी । बाँधु सत्ता, मन डोल न भारी
 सती जो जरै पेम सत लागी । जौ सत हिये तौ सीतल आगी
 पौन बाँध सो जोगी जती । काम बाँध सो कामिनि सती
 आव बसंत फूल फुलवारी । देव-बार सब जैहैं बारी

तुम्ह पुनि जाहु बसंत लेइ पूजि मनावहु देव ।

जीउ पाइ जग जनम है पीउ पाइ कै सेव’ ॥ ४ ॥

जब लगि अवधि आइ नियराई । दिन जुग जुग बिरहिनि कहँ जाई
 तेहि बियोग हीरामन आवा । पदमावति जानहु जिउ पावा
 कंठ लाइ सूआ सौं रोई । अधिक मोह जौ मिलै बिछोई
 रही रोइ जब पदमिनि रानी । हँसि पूछहि सब सखी सयानी

‘मिले रहस भा चाहिय दूना । कित रोइय जौ मिलै बिछूना’ ?
तेहि क उतर पदमावति कहा । ‘बिछुरन-दुख जो हिये भरि रहा
मिलत हिये आयउ सुख भरा । वह दुख नैन-नीर होइ ढरा

बिछुरंता जब भेंटै सो जानै जेहि नेह ।

सुख सुहेला उगवै दुःख भरै जिमि मेह’ ॥ ५ ॥

पुनि रानी हँसि कूसल पूछा । ‘कित गवनेहु पीजर कै छूँछा’
‘रानी’ तुम्ह जुग जुग सुख पादू । छाज न पंखिहि पीजर-ठादू
जब भा पंख कहाँ थिर रहना । चाहै उड़ा पंखि जौ डहना
पीजर मह जो परेवा घेरा । आइ मजारि कीन्ह तहँ फेरा
दिन एक आइ हाथ पै मेला । तेहि डर बनोबास कहँ खेला
तहाँ बियाध आइ नर साधा । छूटि न पाव मीचु कर बाँधा
वै धरि बेचा बाम्हन हाथा । जंबूदीप गयउ तेहि साथा

तहाँ चित्र चितउरगढ़ चित्रसेन कर राज ।

टीका दीन्ह पुत्र कहँ, आपु लीन्ह सब साज ॥ ६ ॥

बैठ जो राज पिता के ठाउँ । राजा रतनसेन ओहि नाउँ
बरनौ काह देस मनियारा । जहँ अस नग उपना उँजियारा
धनि माता औ पिता बखाना । जेहि के बंस अस अस आना
लछन बतीसौ कुल निरमला । बरनि न जाइ रूप औ कला
वै हौं लीन्ह, अहा अस भागू । चाहै सोने मिला सोहागू
सो नग देखि हीछा भइ मोरी । है यह रतन पदारथ जेरी
है ससि जोग इहै पै भानू । तहाँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू

कहाँ रतन रतनागर कंचन कहाँ सुमेरु ।

दैव जो जौरी दुहुँ लिखी मिलै सो कौनेहु फेर ॥ ७ ॥

सुनत बिरह-चिनगी ओहि परी । रतन पाव जौ कंचन-करी
कठिन पेम बिरहा दुख भारी । राज छांड़ि भा जोगि-भिखारी
कहेसि पतंग होइ धन लेऊँ । सिंघलदीप जाइ जिउ देऊँ
हीरामन जो कही यह वाता । सुनि कै रतन पदारथ राता
जस सूरुज देखे होइ ओपा । तस भा बिरह, काम दल कोपा
सुनि कै जोगी केर बखानू । पदमावात मन भा अभिमानू
‘कंचन-करी न काँचहि लोभा । जौ नग होइ पाव तब संभा
मरग इंद्र डरि काँपै वासुकि डरै पतार ।

कहाँ सो अस बर प्रियमी मोहि जोग संसार’ ॥ ८ ॥

‘तू, रानी, ससि कंचन-करा । वह नग रतन सूर निरमरा
बिरह-बजागि बीच का कोइ । आगि जो छुवै जाइ जरि सोई
आगि बुझाई परे जल गाढ़ै । वह न बुझाई आपु ही वाढ़ै
सुनि कै धनि, जारी अस कया । तब भा मयन, हिये मै मया
‘देखैं जाइ जरै कस भानू । कंचन जरे अधिक होइ बानू
जौ वह जोग सँभारै छाला । पाइहि भुगुति, देहुँ जयमाला
आव बसंत कुसल जौ पावैं । पूजा मिसि मंडप कहँ आवैं
कँवल-भवैर तुम्ह वरना मैं माना पुनि सोइ ।

चाँद-सूर कहँ चाहिय जौ रे सूर वह होइ’ ॥ ९ ॥

हीरामन जो सुना रस वाता । पावा पान भयउ मुख राता
चला सुआ, रानी तब कहा । ‘भा जो परावा कैसे रहा ?’

‘सुनु रानी, हौं रहतेउँ राधा । कैसे रहौं बचन कर बाँधा’
 आवा सुआ बैठ जहँ जोगी । मारग नैन, बियोग बियोगी
 आइ पेम-रस कहा सँदेसा । ‘गोरख मिला, मिला उपदेसा
 तुम्ह कहँ गुरु मया बहु कीन्हा । कीन्ह अदेस, आदि कहि दीन्हा
 सबद, एक उन्ह कहा अकेला । गुरु जस भिंग, फनिग जस चेला

आवै रितू बसंत जब तब मधुकर, तब बासु ।

जोगी जोग जो इमि करै सिद्धि समापत तासु’ ॥ १० ॥

दैउ दैउ कै रितु सो गँवाई । सिरी-पचमी पहुँची आई
 भयउ हुलास नवल रितु माहाँ । खिन न सोहाइ धूप औ छाहाँ
 पदमावति सब सखी हँकारी । जावत सिंघलदीप कै बारी
 आजु बसंत नवल रितुराजा । पंचमि होइ, जगत सब साजा
 नवल सिँगार बनस्पति कीन्हा । सीस परासहि सेंदुर दीन्हा
 बिगसि फूल फूले बहु बासा । भौर आइ लुबुधे चहुँ पासा
 पियर-पात-दुख भरे निपाते । सुख-पल्लव उपने होइ राते

अवधि आइ सो पूजी जो हींछा मन कीन्ह ।

चलहु देवमढ़ गोहने चहहुँ सो पूजा दीन्ह ॥ ११ ॥

फिरी आन, रितु-बाजन बाजे । औ सिँगार बारिन्ह सब साजे
 कवँल-कली पदमावति रानी । होइ मालति जानौ बिगसानी
 तारा-मँडल पहिरि भल चोला । भरे सीस सब नखत अमोला
 सखी कुमोद सहस दस संगी । सबै सुगंध चढ़ाए अंगा
 सब राजा रायन्ह कै बारी । बरन बरन पहिरे सब सारी

सबै सुरुप, पदमिनी जाती । पान, फूल, सेंदुर सब राती
करहि किलोल सुरंग-रंगीली । औ चोवा चंदन सब गोली
चहुँ दिसि रही सो बासना फुलवारी अस फूलि ।

वै बसंत सौ भूली गा बसंत उन्ह भूलि ॥ १२ ॥

भै आग्या पदमावति चली । छत्तिस कुरि भइँ गोहन भली
कवल सहाय चलीं फुलवारी । फर फूलन सब करहि धमारी
आपु आपु महँ करहि जोहारु । यह बसंत सबकर तिवहारु
चहै मनोरा भूमक होई । फर औ फूल लियेउ सब कोई
फागु खेलि पुनि दाहब होरी । सैतब खेह, उड़ाउब भोगी
भा आयसु पदमावति केरा । 'बहुरि न आइ करब हम फेरा
तस हम कहँ होइहि रखवारी । पुनि हम कहाँ, कहाँ यह बारी
पुनि रे चलब घर आपने पूजि बिसेसर-देव ।

जेहि काहुहि होइ खेलना आजु खेलि हैंसि लेव' ॥ १३ ॥

काहू गही आव कै डारा । काहू जाँबु बिरह अति भागा
पुनि बीनहि सब फूल सहेली । खोजहि आस-पास सब बेली
फर फूलन्ह सब डार ओढ़ाई । मुंड बाँधि कै पंचम गाई
बाजहि ढोल दुंदुभी भेरी । मादर, तूर, भाँभ चहुँ फेरी
रथहि चढ़ीं सब रूप सोहाई । लेई बसंत मठ-मैडप सिधाई
नवल बसंत, नवल सब बारी । सेंदुर बुक्का होइ धमारी
खिनहिं चलहिं, 'खिन चाँचरि होई । नाँच कूद भूला सब कोई
सेंदुर-खेह उड़ा अस, गगन भयउ सब रात ।

राती सगरिउ धरती, राते बिरछन्ह पात ॥ १४ ॥

एहि बिधि खेलति सिंघलरानी । महादेव-मढ़ जाइ तुलानी
 पदमावति गै देव-दुआरा । भीतर मँडप कीन्ह पैसारा
 एक जोहार कीन्ह औ दूजा । तिसरे आइ चढ़ाएसि पूजा
 फर फूलन्ह सब मँडप भरावा । चंदन अगर देव नहवावा
 लेइ सेंदुर आगे भै खरी । परसि देव पुनि पायन्ह परी
 'और सहेली सबै बियाहीं । मो कहँ, देव, कतहुँ बर नाही
 हौं निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा । गुनि निरगुनि दाता तुम्ह, देवा
 बर सौं जोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि ।

जेहि दिन हींछा पूजै बेगि चढ़ावहुँ आनि' ॥ १५ ॥

ततखन एक सखी बिहँसानी । 'कौतुक आइ न देखहु रानी
 पुरुब द्वार मढ़ जोगी छाप । न जनौ कौन देस तें आए
 जनु उन्ह जोग तंत तन खेला । सिद्ध होइ निसरे सब चेला
 उन्ह महुँ एक गुरु जो कहावा । जनु गुड़ देइ काहू बौरावा
 कुँवर बतीसौ लच्छन राता । दसएँ लछन कहै एक बाता
 जानौं आहि गोपिचंद जोगी । की सो आहि भरथरी बियोगी
 वै पिंगला गए कजरी-आरन । ए सिंघल आए केहि कारन ?

यह मूरति यह मुद्रा हम न देख अवधूत ।

जानौं होहि न जोगी कोइ राजा कर पूत' ॥ १६ ॥

सुनि सो बात रानी रथ चढ़ी । कहँ अस जोगी देखौं मढ़ी
 लेइ सँग सखी कीन्ह तहँ फेरा । जोगिन्ह आइ अपछरन्ह घेरा
 नयन चकोर पेम-मद-भरे । भइ सुदिष्टि जोगी सहुँ ढरे
 जोगी दिष्टि दिष्टि सौं लीन्हा । नैन रोपि नैनहिं जिउ दीन्हा

जेहि मद चढ़ा परा तेहि पाले । सुधि न रही ओहि एक पियाले
परा माति गोरख कर चेला । जिउ तन छाँड़ि सरग कहैं खेला
किंगरी गहे जो हुत बैरागी । मरतिहु बार उहै धुनि लागी

जेहि धंधा जाकर मन लागै सपनेहु सूझ सो धंध ।

तेहि कारन तपसी तप साधहि, करहिं पेम मन बंध ॥ १७ ॥

पदमावति जस सुना बखानू । सहस-करा देखेसि तस भानू
मेलेसि चंदन मकु खिन जागा । अधिकौ सूत, सीर तन लागा
तब चंदन आखर हिय लिखे । 'भीख लेइ तुई जोग न सिखे
वरी आइ तब गा तूँ सोई । कैसे भुगुति परापति होई' ?
कीन्ह पयान सबन्ह रथ हाँका । परबत छाँड़ि सिंघलगढ़ ताका
बलि भए सबै देवता बली । हत्यारिन हत्या लेइ चली
बिनु जिउ पिंड छार कर कूरा । छार मिलावै सो हित पूरा

परी क्या भुईँ लोटै, कहाँ रे जिउ बलि भीउँ ।

को उठाइ बैठारै बाज पियारे जीउ ॥ १८ ॥

पदमावति सो मंदिर पईठी । हँसत सिंघासन जाइ बईठी
निसि सूती सुनि कथा बिहारी । भा बिहान कह सखी हँकारी
'देव पूजि जस आइउँ, काली । सपन एक निसि देखिउँ आली
जनुससि उदय पुरुब दिसि लोन्हा । औ रवि उदय पछिउँ दिसि कीन्हा
पुनि चलि सूर चाँद पहुँ आवा । चाँद सुरुज दुहुँ भयउ मेरावा
दिन औ राति भए जनु एका । गम आइ रावन गढ़ छेका
तस किछु कहा न जाइ निखेधा । अरजुन-वाम राहु गा बेधा

जनहुँ लंक सब लूटी हनुवैं बिधंसी बारि ।

जागि उठउँ अस देखत, सखि, कहु सपन बिचारि' ॥१९॥

सखो सो बोली सपन-बिचारु । 'काल्हि जो गइहु देव के बारु
पूजि मनाइहु बहुतै भाँती । परसन आइ भए तुम्ह राती ।
सूरुज पुरुष चाँद तुम रानी । अस बर दैउ मेरावै आनी
पच्छिउँ खँड कर राजा कोई । सो आवा बर तुम्ह कहँ होई
किछु पुनि जूझ लागि तुम्ह रामा । रावन सौँ होइअ सँगरामा
चाँद सुरज सौँ होइ बियाहू । बारि बिधंसब बेधव राहू
जस ऊषा कहँ अनिरुध मिला । मेटि न जाइ लिखा पुरबिला
सुख सोहाग जो तुम्ह कहँ पान फूल रस भोग ।

आजु काल्हि भा चाहै अस सपने का सँजोग' ॥ २० ॥

कै बसंत पदमावति गई । राजहि तब बसंत सुधि भई
जो जागा न बसंत न बारी । ना वह खेल न खेलनहारी
ना वह ओहि कर रूप सुहाई । गै हेराइ, पुनि दिस्टि न आई
केइ यह बसत बसंत उजारा ? । गा सो चाँद, अथवा लेइ तारा
बिरह-दवा को जरत सिरावा ? । को पीतम सौँ करै मेरावा ?
जस बिछोह जल मीन दुहेला । जल हुँत काढ़ि अग्नि महुँ मेला
चदन-आँक दाग हिय परे । बुझाहि न ते आखर परजरे
आइ बसंत जो छपि रहा होइ फूलन्ह के भेस ।

केहि बिधि पावौ भौर होइ कौन गुरु-उपदेस ॥२१॥

रोवै रतन-माल जनु चूरा । जहँ होइ ठाढ़, होइ तहँ कूरा
'कहाँ सो मूरति परी जो डीठी । काढ़ि लिहेसि जिउ हिये पईठी

अरे मलिङ्ग बिसवासां देश । कित मैं आइ कीन्ह तोरि सेवा
 सुफल लागि पग टेकेउँ तोरा । सुआ क सेंवर तू भा मोरा
 पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा । सां ऐसे बूझै मैंभधारा
 पाहन सेवा कहाँ पसीजा ? । जनम न आद होइ जौ भाँजा
 वाउर सोइ जो पाहन पूजा । सकत को भार लेइ सिर दूजा ?

सिंध तरेंदा जेइ गहा पार भए तेहि साथ ।

ते पै बूड़े वाउरे भेंड़-पूछि जिन्ह हाथ ॥२२॥

आनहिं दोस देहुँ का काहू । संगी क्या मया नहिं ताहू
 हता पियारा मीत विछोई । साथ न लाग आपु गै सोई
 का मैं कीन्ह जो काया पोषी । दूपन मोहिं, आप निरदोषी
 फागु वसंत खेलि गई गोरी । मोहि तन लाइ बिरह कै होरी
 अब अस कहाँ छार सिर मेलौ ? । छार जो होहुँ फाग तब खेलौ
 कित तप कीन्ह छाँड़ि कै राजू । गयउ अहार न भा सिध काजू
 पायउँ नहिं होइ जोगी जती । अब सर चढ़ौ जरौ जस सती

आइ जो पीतम फिरि गा मिला न आइ वसंत ।

अब तन होरी घालि कै जारि करौं भसमंत' ॥ २३ ॥

हनुमत वीर लंका जेहि जारी । परवत उहै अहा रखवारी
 बैठि तहाँ होइ लंका ताका । छठएँ मास देइ उठि हाँका
 जाइ तहाँ वै कहा सँदेसू । पारवती औ जहाँ महेसू
 ततखन पहुँचे आइ महेसू । बाहन बैल, कुस्टि कर भेसू
 सेसनाग जाके कँठमाला । तनु भभूति, हस्ती कर छाला

चँवर, घंट औ डँवरू हाथा । गौरा पारबती धनि साथा
अवतहि कहेन्हि 'न लावहु आगी । तेहि कै सपथ जरहु जेहि लागी
की तप करै न पारेहु, की रे नसाएहु जोग ?

जियत जीउ कस काढ़हु ? कहहु सा मोहि बियोग' ॥२४॥
कहेसि 'मोहि वातन्ह बिलैमाँवा । हत्या केरि न डर तोहि आवा
जरै देहु, दुख जरौ अपारा । निस्तर पाइ जाउँ एक वारा
जस भरथरी लागि पिंगला । मो कहँ पदमावति सिंगला
मैं पुनि तजा राज औ भोगू । सुनि सो नावँ लीन्ह तप जोगू
एहि मढ़ सेएउँ आइ निरासा । गइ सो पूजि, मन पूजि न आसा
तैं यह जिउ डाढ़े पर दाधा । आधा निकसि रहा, घट आधा
जो अधजर सो बिलैब न लावा । करत बिलंब बहुत दुख पावा,
एतना बोल कहत मुख उठी बिरह कै आगि ।

जौ महेस न बुभावत जाति सकल जग लागि ॥ २५ ॥
पारबती मन उपना चाऊ । देखौ कुँवर कंर सत भाऊ
ओहि एहि बीच, कि पेमहि पूजा । तन मन एक, कि मारग दूजा
भइ सुरूप जागहुँ अपछरा । बिहँसि कुँवर कर आँचर धरा
'सुनहु, कुँवर, मो सौँ एक बाता । जस मोहि रंग न औरहिं राता
औ बिधि रूप दीन्ह है तोका । उठा सो सबद जाइ सिव-लोका
तब हौ तो पहुँ इंद्र पठाई । गइ पदमिनि, तैं अछरी पाई
अब तजु जरन, मरन, तप, जोगू । मो सौँ मानु जनम भरि भोगू
हौ अछरी कैलास कै जेहि सरि पूज न कोइ ?

मोहि तजि सँवरि जो ओहि मरसि, कौन लाभ तोहि होइ' ? २६

‘भलेहिँ रंग अछरी तोर राता । मोहि दुसरे सौ भाव न बाता
मोहि ओहि सँवरि मुए तस लाहा । नैन जो देखसि पूछसि काहा ?
अबहिँ ताहि जिउ देइ न पावा । तोहि असि अछरी ठाढ़ि मनाव
जौ जिउ देइहौ ओहि कै आसा । न जनौ कहा होइ कैलासा’
गौरइ हँसि महेस सौ कहा । ‘निहचै एहि बिरहानल दहा
बदन पियर जल डभकहिँ नैना । परगट दुवौ पेम के बैना
एहू कहँ तस मया करेहू । पुरवहु आस, कि हत्या लेहू’
तस रोवै जस जिउ जरै गिरै रक्त औ माँसु ।

रोवँ रोवँ सब रोवहिँ सूत सूत भरि आँसु ॥ २७ ॥

रोवत बूढ़ि उठा संसारु । महादेव तब भयउ मयारु
कहेन्हि ‘न रोव, बहुत तैं रोवा । अब ईसर भा, दारिद खोवा
जो दुख सहै होइ सुख ओका । दुख बिनु सुख न जाई सिवलोक
अब तैं सिद्ध भयसि सिधि पाई । दरपन-कया छूटि गइ काई
गढ़ तस बाँक जैसि तोरि काया । पुरुष देखु ओही कै छाया
नौ पौरी तेहि गढ़ मभियारा । औ तहँ फिरहिँ पाँच कोतवाग
दसवँ दुवार गुप्त एक ताका । अगम चढ़ाव, बात सुठि बाँका
जस मरजिया समुद्र धँस हाथ आव तब सीप ।

ढूँढ़ि लेइ जां सरग-दुआरी चढ़ै सो सिंघलदीप ॥ २८ ॥

दसवँ दुआर ताल कै लेखा । उलाटि दिस्टि जो लाव सो देखा
परगट लोकचार कहु बाता । गुप्त लाउ मन जासौ राता
“हौ हौ” कहत सबै मति खोई । जौ तू नाहिँ आहि सब कोई
सिधि-गुटिका राजै जब पावा । गुनि भइ सिद्धि गनेस मनाव

जब संकर सिधि दीन्ह गुटेका । परी हूल, जोगिन्ह गढ़ छेंका
पौरि पौरि गढ़ लाग केवारा । औ राजा सौं भई पुकारा
'जोगी आइ छेंकि गढ़ मेला । न जनौ कौन देस तें खेला'

भयउ रजायसु 'देखौ को भिखारि अस ठीठ ।

वेगि बरजि तेहि आवहु जन दुइ पठै बसीठ' ॥ २९ ॥

उतरि बसीठन्ह आइ जोहारे । 'की तुम जोगी, की बनिजारं
भयउ रजायसु आगे खेलहि । गढ़ तर छाँड़ि अनत होइ मेलहि
हौ जोगी तौ जुगुति मौं माँगौ । भुगुति लेहु, लै मारग लागौ'
'आनु जो भीखि हौ आयउं लेई । कस न लेउँ जौ राजा देई
पदमावति राजा कै बारी । हौं जोगी ओहि लागि भिखारी
सोई भुगुति-परापति भूजा । कहाँ जाउँ अस बार न दूजा
तुम्ह बसीठ राजा के ओरा । साखि होहु एहि भीख निहोरा

जोगी बार आव सो जेहि भिच्छा कै आस ।

जो निरास दिढ़ आसन कित गीनै केहु पास ?' ॥ ३० ॥

सुनि बसीठ मन उपनी रीसा । जौ पीसत घुन जाइहि पीसा
'जोगी अस कहूँ कहै न कोई । सो कहु बात जोग जो होई
वह बड़ राज इंद्र कर पाटा । धरती परा सरग को चाटा ?
जौ यह बात जाइ तहँ चलो । छूटहि अबहि हस्ति सिघली'
'तुम्हरे जोर सिघल के हाथी । हमरे हस्ति गुरु हैं साथी
अस्ति नास्ति ओहि करत न बारा । परबत करै पावँ कै छारा
जोर गिरे गढ़ जावत भए । जे गढ़ गरब करहि ते नए

जोगिहि कोह न चाहिय, तस न मोहि रिस लागि ।

जोग तंत ज्यों पानी, काह करै तेहि आगि ?' ॥ ३१ ॥

बसिटन्ह जाइ कही अस बाता । राजा सुनत कोह भा राता
ठाँवहिं ठाँव कुँवर सब माखे । 'केइ अब लीन्ह जोग, केइ राखे ?
अबहीं बेगिहि करौ सँजोऊ । तस मारहु हत्या नहिं होऊ'
मंत्रिन्ह कहा 'रहौ मन बूझे । पति न होइ जोगिन्ह सौं जूझे
ओहि मारे तौ काह भिखारी । लाज होइ जौं माना हारी
ना भल मुए, न मारे मोखु । दुवौ बात लागै सम दोखू
रहै देहु जौं गढ़ तर मेले । जोगी कित आछैं बिनु खेले ?

आछै देहु जो गढ़ तरे, जनि चालहु यह बात ।

तहँ जो पाहन भख करहिं अस केहि के मुख दाँत' ॥ ३२ ॥

गए बसीठ पुनि बहुरि न आए । राजै कहा बहुत दिन लाग
न जनों सरग बात दहुँ काहा । काहु न आइ कही फिरि चाहा
पंख न काया, पौन न पाया । केहि विधि मिलौ होइ कै छाया
सँवरि रक्त नैनहिं भरि चूआ । रोइ हैंकारेसि माभी सूआ
परीं जो आँसु करत कै दूटी । रेंगि चलीं जस बीर-बहूटी
ओही रक्त लिखि दीन्हीं पाती । सुआ जो लीन्ह चोंच भइ राती
बाँधी कंठ परा जरि कौठा । बिरह क जरा जाइ कित नाठा ?

मसिनैना, लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकथ ।

आखर दहै, न कोइ छुवै, दीन्ह परेवा हथ ॥ ३३ ॥

कंचन-नार बाँधि गिउ पाती । लेइ गा सुआ जहाँ धनि राती
जैसे कवँल सूर के आसा । नीर कंठ लहि मरत पियासा

बिसरा भोग सेज सुख-बासा । जहाँ भौर सब तहाँ हुलासा
तौ लगि धीर, सुना नहिं पीऊ । सुना त घरी रहै नहिं जीऊ
तौ लगि सुख, हिय पेम न जाना । जहाँ पेम कत सुख बिसरामा ?
अगर चँदन सुठि दहै सरीरू । आ भा अग्नि कया कर चीरू
कथा कहानी सुनि जिउ जरा । जानहुँ घीउ बसंदर परा

बिरह न आपु संभारै, मैल चीर, मिर रूख ।

पिउ पिउ करत राति-दिन जस पपिहा मुख सूख ॥ ३४ ॥

ततखन गा हीरामन आई । मरत पियास छाँह जनु पाई
‘भल तुम्ह, सुआ, कीन्ह है फेरा । कहहु कुसल अब पीतम केरा
बाट न जानौ, अगम पहारा । हिरदय मिला न होइ निनारा
मरम पानि कर जान पियासा । जो जल मँहँ ताकहँ का आसा ?’
‘का रानी यह पूछहु बाता । जिनि कोइ होइ पेम कर राता
तुन्हरे दरसन लागि बियोगी । अहा सो महादेव मठ जोगी
तुम्ह वसंत लेइ तहाँ सिधाई । देव पूजि पुनि ओहि पहुँ आई

दिस्टि-बान तस मारेहु घायल भा तेहि ठाँव ।

दूसरि बात न बोलै लेइ पदमावति नाँव ॥ ३५ ॥

तुम्ह तौ खेलि मँदिर मँहँ आई । ओहिक मरम प जान गोसाईं
कहेसि जरै का वारहि वारा । एकहि वार होहुँ जरि द्वारा
उलटा पंथ पेम के वारा । चढ़ै सरग जो परै पतारा
अब धँसि लीन्ह चहै तेहि आसा । पावै साँस कि मरै निरासा
कहि कै सुआ जो छाँड़ेसि पाती । जानहु दीप छुवत तस ताती

रोइ रोइ सुआ कहै सो बाता । रक्त कै आँसु भयउ मुख राता
 'वह तोहि लागि क्या सब जारी । तपत मीन, जल देहि पवारी
 तोहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन दाहि ।

तू असि निठुर निछोही बात न पूछै ताहि' ॥ ३६ ॥
 कहेसि 'सुआ, मो सौं सुनु बाता । चहौं तौ आज मिलौं जस राता
 पै सो मरम न जाना मोरा । जानी प्रीति जो मरि कै जोरा
 हैं जानति हैं अबही काँचा । ना जेइ प्रीति रंग थिर राँचा
 ना जेइ भयउ मलयगिरि वासा । ना जेइ रबि होइ चढ़ा अकासा
 ना जेइ भयउ भौर कर रंगू । ना जेइ दीपक भयउ पतंगू
 ना जेइ करा भृंग कै होई । ना जेइ आपु मरै जिउ खोई
 ना जेइ पेम औटि एक भयऊ । ना जेहि हिचै माँझ डर गयऊ
 तेहि का कहिय रहव जिउ रहै जो पीतम लागि ?

जौं वह सुनै लेइ धँसि, का पानी, का आगि' ॥ ३७ ॥
 पुनि घनि कनक-पानि मसि माँगी । उतर लिखत भीजी तन आँगी
 'तस कंचन कह चहिय सोहागा । जौं निरमल नग होइ तौ लागा
 हैं जो गई सिव-मंडप भोरी । तहँवां कस न गांठि तैं जोरी ?
 भा विसँभार देखि कै नैना । सखिन्ह लाज का बोलौं बैना—?
 खेलहि मिस मैं चंदन घाला । मकु जागसि तौ देउ जयमाला
 तबहुँ न जागा, गा तू सोई । जागे भेंट, न सोए होई
 अब जौं सूर होइ चढ़ै अकासा । जौं जिउ देइ त आवै पासा
 तौ लागि भुगुति न लेइ सका रावन सिय जब साथ ।
 कौन भरोसे अब कहौं जीउ पराए हाथ ॥ ३८ ॥

अब जौ सूर गगन चढ़ि आवै । राहु होइ तौ ससि कहँ पावै
बहुतन्ह ऐस जीउ पर खेला । तू जोगी कित आहि अकेला
हौ पुनि इहाँ ऐस तोहि राती । आधी भेंट पिरितम-पाती
तहुँ जौ प्रीति निबाहै आँटा । भौर न देख केत कर काँटा
होइ पतंग अधरन्ह गहु दीया । लेसि समुद्धँसि होइ मरजीया
चातक होइ पुकारु पियासा । पीउ न पानि सेवाति कै आसा
होहि चकोर दिस्टि ससि पाहाँ । औ रबि होहि कँवलदल माहाँ
महुँ ऐसै होउ तोहि कहँ, सकहि तौ ओर निबाहु ।

राहु बेधि अरजुन होइ जीतु दुरपदी व्याहु' ॥ ३९ ॥

राजा इहाँ ऐस तप भूरा । भा जरि बिरह छार कर कूरा
नैन लाइ सो गयउ बिमोही । भा बिनु जिउ, जिउ दीन्हसि ओही
सुऐ जाइ जब देखा तासू । नैन रकत भरि आए आँसू
सदा पिरितम गाढ़ करेई । ओहि न भुलाइ, भूलि जिउ देई
देखेसि जागि सुआ सिर नावा । पाती देइ मुख वचन सुनावा
गुरु क वचन स्रवन दुइ मेला । 'कीन्हि सुदिस्टि, बेगि चलु चेला
तोहिअलि कीन्ह आप भइ केवा । हौ पठवा गुरु बीच परेवा
आवहु सामि सुलच्छना जीउ बसै तुम्ह नावँ ।

नैनहिं भीतर पंथ है हिरदय भीतर ठावँ' ॥ ४० ॥

सुनि पदमावति कै असि मया । भा वसंत, उपनी नइ कया
सुआ क बोल पौन होइ लागा । उठा होइ, हनुवँत अस जागा
चाँद मिलै कै दीन्हसि आसा । सहसौ कला सूर परगासा
पाति लीन्हि, लेइ सीस चढ़ावा । दीठि चकोर चंद जस पाव

उठा फूलि हिरदय न समाना । कंथा दूक दूक बेहराना
लोन्हे सिधि सौसा मन मारा । गुरु मछंदरनाथ सँभारा
खोजि लीन्ह सो सरग-दुवारा । बअ जो मूँदे जाइ उघारा

वाँक चढ़ाव सरग-गढ़ चढ़त गयउ होइ भोर ।

भइ पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंधि देइ चोर ॥ ४१ ॥

राजै सुनि जोगी गढ़ चढ़े । पूछै पास जो पंडित पढ़े
'जोगी गढ़ जो सेंधि दै आवहि' । बोलहुं सबद सिद्धि जस पावहि'
कहहि' बेद पढ़ि पंडित बेदी । 'जोगि भौर जस मालति-भेदी'
राँध जो मंत्री बोले सोई । ऐस जो चोर सिद्ध पै कोई
सिद्ध निसंक रैन-दिन भवैहीं । ताका जहाँ तहाँ अपसवहीं
सिद्ध निडर अस अपने जीवा । खड़ग देखि कै नावहि' गोवा
सिद्ध अमर, काया जस पारा । छरहि' मरहि' बर जाइ न मारा

छरही काज कृष्ण कर राजा चढ़ै रिसाइ ।

सिध गिध दिष्टि गगन पर, विनु छर किछु न बसाइ ॥ ४२ ॥

अबहीं करहु गुदर मिस साजू । चढ़हि' बजाइ जहाँ लगि राजू'
चौविस लाख छत्रपति साजे । छपन कोटि दर बाजन बाजे
देखि कटक औ मैमैत हाथी । बोलै रतनसेन कर साथी
'होत आव दल बहुत असूभा । अस जानिय किछु होइहि जूभा
राजा तू जोगी होइ खेला । एही दिवस कहँ हम भए चेला
जहाँ गाढ़ ठाकुर कहँ होई । संग न छाँड़ै सेवक सोइ
गुरु केर जौ आयसु पावहि' । सौह होहि' औ चक्र चलावहि'

आजु करहिं रन भारत सत बाचा देइ राखि ।

सत्य देख सब कौतुक, सत्य भरै पुनि साखि' ॥ ४३ ॥

गुरु कहा 'चेला सिध होहू । पेम-बार होइ करहु न कोहू
एहि सेंति बहुरि जूझनहि करिए । खड़ग देखि पानी होइ ढरिए
पानिहि काह खड़ग कै धारा । लौटि पानि होइ सोइ जो मारा'
गजै छेंकि धरे सब जोगी । दुख ऊपर दुख सहै बियोगी
नाग-फाँस उन्ह मेला गीवा । हरष न बिसमौ एकौ जीवा
भलेहि आनि गिउ मेली फाँसी । है न सोच हिय, रिस अस नासी
मैं गिउ फाँद ओहि दिन मेला । जेहि दिन पेम-पंथ होइ खेला
परगट गुप्त सकल महँ पूरि रहा सो नावँ ।

जहँ देखौ तहँ ओही, दूसर नहिं जहँ जावँ ॥ ४४ ॥

जब लगि गुरुहौं अहा न चीन्हा । कोटि अंतरपट बीचहिं दीन्हा
जब चीन्हा तब और न कोई । तन मन जिउ जीवन सब सोई
'हौं हौं' करत धोख इतराहीं । जब भा सिद्ध कहौं परिछाहीं ?
मारै गुरु, कि गुरु जियावै । और को मार ? मरै सब आवै
सो पदमावति गुरु, हौं चेला । जोग-तंत जेहि कारण खेला
माँगै सीस देउँ सह गीवा । अधिक तरौं जौं मारै जीवा
अपने जिउ कर लोभ न मोहीं । पेम-बार होइ माँगौं ओही
दरसन ओहि कर दिया जस हौं सो भिखारि पतंग ।

जौ करवत सिर सारै मरत न मोरौं अंग' ॥ ४५ ॥

पदमावति कवला ससि-जोती । हँसै फूल रोवै सब मोती
जबहिं सुरुज कहँ लागा राहू । तबहिं कँवल मन भयउ अगाहू

परगट ढारि सकै नहिँ आँसू । घटि घटि माँसु गुपुत होइ नासू
 पदमावात संग सखी सयानी । गनत नखत सब रैन बिहानी
 जानहिँ मरम कँवल कर कोई । देखि बिथा बिरहिनि कै रोई
 बिरहा कठिन काल कै कला । बिरह न सहै, काल बरु भला
 काल काढ़ि जिउ लेइ सिधारा । बिरह-काल मारे पर मारा

तन रावन होइ सर चढ़ा बिरह भयउ हनुवंत ।

जारे ऊपर जारै चित मन केरि भसमंत ॥ ४६ ॥

घरी चारि इमि गहन गरासी । पुनि विधि हिये जोति परगासी
 निसँस ऊभि भरि लीन्हैसि साँसा । भा आधार, जीवन कै आसा
 बिनवहिँ सखी छूट ससि राहू । तुम्हरी जोति जोति सब काहू
 तू ससि-बदन जगत उजियारी । केइ हरि लीन्ह, कीन्ह अधियारी
 तू गजगामिनि गरब-गहेली । अब कस आस छाँड़ु तू, बेली
 तू हरि लंक हराए केहरि । अब कित हारि करति है हिय हरि ?
 तू कोकिल-बैनी जग मोहा । केइ व्याधा होइ गहा निछोहा ?

कँवल-कली तू पदमिनि, गइ निसि, भयउ बिहान ।

अबहुँ न संपुट खोलसि जब रे उआ जग भानु' ॥ ४७ ॥

भानु-नावँ सुनि कँवल बिगासा । फिरि कै भौर लीन्ह मधु बासा
 सरद-चंद मुख जबहिँ उघेली । खंजन-नैन उठे करि केली
 बिरह न बोल आव मुख ताई । मरि मरि बोल जीउ बरियार्ई
 दवै बिरह दारुन, हिय काँपा । खोलि न जाइ बिरह दुख माँपा
 उदधि-समुद जस तरंग देखावा । चख घूमहिँ, मुख बात न आवा

यह सुनि लहरि लहरि पर धावा । भँवर परा, जिउ थाह न पावा
'सखी, आनि बिष देहु तौ मरऊँ । जिउ न पियार, मरै का डरऊँ ?

खिनहि उठै, खिन बूड़ै अस हिय कँवल सँकेत ।

हीरामनहिं बुलावहि, सखा ! गहन जिउ लेत' ॥४८॥

चेरी धाय सुनत खिन धाई । हीरामन लेइ आइ बोलाई
जनहु बैद ओषद लेइ आवा । रोगिया राग मरत जिउ पावा
सुनत असीसनैन धनि खोले । बिरह-बैन कोकिल जिमि बोले
कँवलहिं बिरह-बिथा जस बाढ़ी । केसर-बरन पीर हिय गाढ़ी
और दगध का कहौ अपारा । सती सो जरै कठिन अस भारा
होइ हनुवत पैठ है कोई । लंका दाहु लागु करै सोई
लंका बुझी आगि जौ लागी । यह न बुझाई आँच बज्रागी
जहँ लगि चंदन मलयगिर औ सायर सब नीर ।

सब मिलि आइ बुझावहिं बुझै न आगि सरीर ॥ ४९ ॥

हीरामन जौ देखेसि नारी । प्रीति-बेल उपनी हिय-वारी
कहेसि 'कस न तुम्ह होहु दुहेली । अरुभी पेम जो पीतम बेली
प्रीति-बेलि जिनि अरुभै कोई । अरुभे, मुए न छूटै सोई'
पदमावति उठि टेकै पाया । 'तुम्ह हूँत देखौ पीतम-छाया
कहत लाज औ रहै न जोऊ । एक दिसि आगि दुसरदिसि पीऊ
तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देवा । उतरौ पार तेही बिधि खेवा
दमनहिं नलहिं जो हंस मेरावा । तुम्ह हीरामन नावँ कहावा
मूरि सजीवन दूरि है सलै सकती-बानु ।

प्राण मुकुत अब होत है बेगि देखावहु भानु' ॥ ५० ॥

हीरामन भुइ धरा लिलाटू । 'तुम्ह रानी जुग जुग सुख-पाटू
 जेहि के हाथ सजीवन मूरी । सो जानिय अब नाही दूरी
 पिता तुम्हार राज कर भांगी । पूजै विप्र, मरावै जोगी
 पौरि पौरि कोतवार जो बैठा । पेम क लुबुध सुरंग हांइ पैठा
 चढ़त रैन गढ़ होइगा भोरू । आवत वार धरा कै चोरू
 अब लेइ गए देह ओहि सूरि । तेहि सौ अगाह बिथा तुम्ह पूरी
 अब तुम्ह जिउ, काया वह जोगी । कया क रोग जानु पै जोगी
 रूप तुम्हार जोउ कै पिंड कमावा फेरि ।

आपु हेराइ रहा, तेहि काल न पावै हेरि' ॥ ५१ ॥
 हीरामन जो बात यह कही । सूर के गहन चांद तब गही
 'अब जौ जोगि मरै मोहिं नेहा । मोहि ओहि साथ धरति गगनेहा
 रहै त करौ जनम भरि सेवा । चलै त यह जिउ साथ परेवा
 कहौ जाइ अब मार सँदेसू । तजौ जोग, अब होहु नरेसू
 जिनि जानहु हौ तुम्ह सौ दूरी । नैनन्ह मौन गड़ी वह सूरि
 तुम्ह परसेद घटे घट केरा । मोहिं घट जोउ घटत नहिं बेरा
 तुम्ह कहैं पाट हिये महँ साजा । अब तुम्ह मोर दुहँ जग राजा
 जौ रे जियहिं मिलि गर रहहिं मरहिं तो एकै दोउ ।

तुम्हजिउकहैं जिनि होइ किछु, मोहिं जिउहोउ सो होउ' ॥ ५२ ॥

(४) भेंट खंड

बैधि तपा आने जहँ सूरी । जुरे आइ सब सिंगल पूरी
 पहिले गुरुहि देइ कहँ आना । देखि रूप सब कोइ पछिताना
 लोग कहहिं यह होइ न जोगी । राजकुँवर कोइ अहै बियोगी
 काहुहि लागि भयउ है तपा । हिये सो माल, करहि मुख जपा
 जस मारै कहँ बाजा तूरु । सूरी देखि हँसा मंसूरु
 चमके दसन भयउ उजियारा । जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा
 जोगी केर करहु पै खोजू । मकु यह होइ न राजा भोजू
 सब पूछहिं 'कहु जोगी जाति जनम औ नाँव ।

जहाँ ठाँव रोवै कर हँसा सो कहु केहि भाव' ॥ १ ॥

'का पूछहु अब जाति हमारी । हम जोगी औ तपा भिखारी
 जोगिहि कौन जाति, हो राजा । गारि न कोह, मारि नहिं लाजा
 निलज भिखारि लाज जेइ खोई । तेहि के खोज परै जिनि कोई
 जाकर जोउ मरै पर बसा । सूरी देखि सो कस नहिं हँसा ?
 आजु नेह सौं होइ निबेरा । आजु पुहुमि तजि गगन बसेरा
 आजु कया-पींजर-बँदि टूटा । आजुहिं प्रान-परेवा छूटा
 आजु नेह सौं होइ निनारा । आजु पेम सँग चला पियारा
 आजु अवधि सिर पहुँची किए जाहुँ मुख रात ।

बेगि होहु मोहिं मारहु, जिनि चालहु यह बात' ॥ २ ॥

जोगिहि जबहिं गाढ़ अस परा । महादेव कर आसन टरा
 वै हैंसी पारबती सौ कहा । जानहुँ सूर गहन अस गहा
 आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा । राजै गहा सूर तब छपा
 जग देखै गा कौतुक आजू । कीन्ह तपा मारै कहँ साजू
 पारबती सुनि पाँयन्ह परी । 'चलि, महेस, देखैं एहि घरी'
 भेस भौंट भौंतिनि कर कीन्हा । औ हनुवंत बीर सँग लीन्हा
 आइ गुप्त होइ देखन लागी । वह मूरति कस सती सभागो
 कटक असूझ देखि कै राजा गरब करेइ ।

दैउ क दसा न देखै दहुँ का कहँ जय देइ ॥ ३ ॥

लेइ सँदेस सुअटा गा तहाँ । सूरी देहिं रतन कहँ जहाँ
 देखि रतन हीरामन रोवा । राजा जिउ लोभन्ह हठि खोवा
 देखि रुदन हीरामन केरा । रोवहिं सब, राजा मुख हेरा
 माँगहिं सब बिधिना सौ रोई । कै उपकार छोड़ावै कोई
 कहि सँदेस सब विपति सुनाई । बिकल बहुत, किछु कहा न जाई
 काढ़ि प्रान बैठी लेइ हाथा । मरै तौ मरौं, जिअौ एक साथ
 सुनि सँदेस राजा तब हँसा । प्रान प्रान घट घट महुँ बसा
 सुअटा भौंट दसौधी भए जिउ पर एक ठाँव ।

चलि सो जाइ अब देख तहँ जहँ बैठा रह राव ॥ ४ ॥

राजा रहा दिस्टि कै औधी । रहि न सका तब भौंट दसौधी
 कहेसि मेलि कै हाथ कटारी । पुरुष न आछे बैठ पेटारी
 कान्ह कोपि कै मारा फंसू । गोकुल माँझ बजावा बंसू
 गंधर्वसेन जहाँ रिस-बाढ़ा । जाइ भौंट आगे भा ठाढ़ा

ठाढ़ देख सब राजा राऊ । बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ
बोला गंधर्वसेन रिसाई । 'कस जोगी, कस भाँट असाई'
'जोगी पानि, आगि तू राजा । आगिहि पानि जूझ नहिँ छाजा

आगि बुझाई पानि सौँ, जूझु न, राजा, बूझु ।

लीन्हें खप्पर बार तोहिँ भिच्छा'देहि, न जूझु' ॥ ५ ॥

भइ अग्या 'को भाँट अमाऊ । बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ
को जोगी अस नगरी मारी । जो देइ सेंधि चढ़ै गढ़ चोरी
भाँट नावँ का मारौँ जीवा । कबहूँ बोलु नाइ कै गोवा'
'जौ सत पूछमि गंधर्व राजा । सत पै कहौँ परै नहिँ गाजा
जंबूद्वीप चित्तउर देसा । चित्रसेन बड़ तहाँ नरेमा
रतनसेन यह ताकर बेटा । कुल चौहान जाइ नहिँ मेटा
दाहिन हाथ उठाएउँ ताही । और को अस बरम्हावौँ जाही ?

नाँव महापातर मोहिँ, तेहि क भिखारी ढोठ ।

जौ खरि बात कहे रिस लागै, कहै बसीठ' ॥ ६ ॥

ततखन पुनि महेम मन लाजा । भाँट करा होइ बिनशा राजा
'गंधर्वसेन, तूँ राजा महा । हौँ महेम-मृगति, सुनु कहा
जौ पै बात होइ भलि आगे । कहा चाहिय, का भा रिस लागे
राजकुँवर यह, होहि न जोी । सुनि पदमावति भयउ त्रियोगी
जंबूद्वीप राजधर बेटा । जो है लिखा सो जाइ न मेटा
तुम्हहि सुआ जाइ ओहि आना । औ जेहि कर बर कै तेइ माना
पुनि यह बात सुनी सित्र-जोका । करति बियाह धरम है तोका

माँगै भीख खपर लेइ मुए न छाँड़ै बार ।

बूझहु, कनक कचोरी भीखि देहु, नहिं मार' ॥ ७ ॥

‘ओहट होहु रे भाँट भिखारी । का तू मोहिं देहि अमि गारी
को मोहिं जोग जगत होइ पारा । जा सहुँ हेरौ जाइ पतारा
जोगी जती आव जा कोई । सुनतहिं त्रासमान भा सोई
भीखि लेहिं फिरि माँगहिं आगे । ए सब रैन रहं गढ़ लागे
जस हींछा चाहौ तिन्ह दीन्हा । नाहिं बेध सूरि जिउ लीन्हा
जेहि अस साध होउ जिउ खोवा । सो पतंग दीपक तस रांवा
सुर, नर, मुनि सब गंधर्व देवा । तेहि को गनै ? करहिं निति सेवा
मो सौं का सरवार करै सुनु, रे भूठे भाँट !

छार होइ जौ चालौ निज हस्तिन कर ठाट' ॥ ८ ॥

मंत्रिन्ह कहा, ‘सुनहु हो राजा । देखहु अब जोगिन्ह कर काजा
हम जो कहा तुम करहु न जूमू । हांत आव दर जगत असूमू
कहहिं बात, जोगी अब आए । खिनक माहँ चाहत हैं धाए’
पुनि आगे का देखै राजा । ईसर कंर घंट रन बाजा
जावत दानव राच्छस पुरे । आठौ बज्र आइ रन जुरे
जेहि कर गरव करत हुत राजा । सो सब फिरि बैरी होइ साजा
जहवाँ महादेव रन खड़ा । सीस नाइ नृप पायँन्ह परा
‘केहि कारन रिस कीजिए हौ सेवक औ चेर ।

जेहि चाहिय तेहि दीजिय बारि गोसाईं केर’ ॥ ९ ॥

‘तू गंधर्व राजा जग पूजा । गुन चौदह, सिख देइ को दूजा ?
हीरामन जां तुम्हार परेवा । गा चितउर औ कीन्हेसि सेवा

तेहि बोलाइ पूछहु वह देखू। दहूँ जोगी, की तहाँ नरेसू
राजै जब हीरामन सुना। गयउ रोस, हिरदय महँ गुना
अग्या भई 'बोलावहु मोई। पंडित हुतें धोख नहि होई'
एकहि कहत सहस्रक धाए। हीरामनहि बेगि लेइ आए
राजै तेहि पूछी हँसि बाता। 'कस तन पियर, भयउ मुख राता

चतुर बेद तुम्ह पंडित पढ़े साख औ बेद।

। कहाँ चढ़ाएहु जोगिन्ह, आइ कीन्ह गढ़भेद ॥ १० ॥

हीरामन रसना रस खोला। दै असीस, कै अस्तुति बोला
'हौं सेवक तुम्ह आदि गोसाईं'। सेवा करौ जिऔं जब ताईं
तेहि सेवक के करमहिं दोषू। सेवा करत करै पति रोषू
औ जेहि दोष निदोषहि लागा। सेवक डरा, जीउ लेइ भागा
सप्त दीप फिर देखेउँ, राजा। जंबूदीप जाइ तब बाजा
तहँ चितउरगढ़ देखेउँ ऊचा। ऊँच राज सरि तोहिं पहुँचा
रतनसेन यह तहाँ नरेसू। एहि आनेउँ जोगी के भेसू

सुआ सुफल लेइ आयउँ तेहि गुन तें मुख रात।

कया पीत सो तेहि डर सँवरौ विक्रम बात' ॥ ११ ॥

पहिले भयउ भौट सत भाखी। पुनि बोला हीरामन साखी
राजहि भा निसचय, मन माना। बाँधा रतन झारि कै आना
कुल पूछा, चौहान कुलोना। रतन न बाँधे होइ मलीना
देखि कुँवर वर कंचन जोगू। 'अस्ति अस्ति' बोला सब लोगू
मिला मो बंस अंस उजियारा। भा बरोक तब तिलक सँवारा

पच्छिउँ कर वर, पुरुष क बारी । जोरी लिखी न होइ निनारी
मानुष साज लाख मन माजा । होइ सोइ जो बिधि उपराजा
गए जो बाजन बाजत जिउ मारन रन माहँ ।

फिरि बाजन तेइ बाजे मंगलचार ओनाहँ ॥ १२ ॥
लगन धग औ रचा बियाहू । सिंघल नेवत फिरा सब काहू
बाजन बाजे कोटि पचासा । भा अनंद सगरौ कैलासा
रतनसेन कहँ कापड़ आए । हीरा मोति पदारथ लाए
साजा राजा, बाजन बाजे । मदन सहाय दुवौ दर गाजे
औ राता सोने रथ सांजा । भए बरात गोहने सब राजा
बाजत गाजत भा असवाग । सब सिंहल नइ कीन्ह जोहार
चहुँ दिमि मसियर नखत तराई । सूरुज चढ़ा चाँद के ताई
धरती सगग चहुँ दिसि पूरि रहे मसियार ।

बाजत आवै मंदिर कहँ होइ मंगलाचार ॥ १३ ॥
जहँ सोने कर चित्तर-सारी । लेइ बरात सब तहाँ उतारी
मौफ सिंघासन पाट सँवारा । दूलह आनि तहाँ बैसाग
होइ लाग जेवनार-पसाग । कनक-पत्र पसरे पनवारा
सोन-थार मनि, मानिक जरे । राय रंक के आगे धरे
भइ जेवनार, फिरा खंडवानी । फिरा अरगजा कुँहकुँह-पानी
फिग पान, दहुग सब कोई । लाग बियाह-चार सब होई
गौंठि दुलह दुलहिनि कै जोरी । दुऔ जगत जो जाइ न छोरी
चाँद सुरुज दुऔ निरमल दुऔ सँजोग अनूप ।
सुरुज चाँद सौ भूला चाँद सुरुज के रूप ॥ १४ ॥

भेंट खंड

दुआँ नौव लै गावहि बारा । करहि सो पदमिनि मंगलवाग
चाँद के हाथ दीन्ह जयमाला । चाँद आनि सूरुज गिउ घाला
सूरुज लीन्ह, चाँद पहिराई । हार नखत तरइन्ह सो पाई
पुनि धनि भरि अंजुलि जल लीन्हा । जोवन जनम कंत कहँ दीन्हा
कंत लीन्ह, दीन्हा धनि हाथा । जोरी गाँठि दुआँ एक साथ
चाँद सूरुज सत भौवरि लेहीं । नखत माति नेवछावरि देहीं
फिरहि दुआँ सत फेर, घुटै कै । सातहु फेर गाँठि सो एकै
भइ भौवरि, नेवछावरि, राज-चार सब कीन्ह ।

दायज कहौ कहौ लगि, लिखिन न जाइ जत दीन्ह ॥ १५ ॥
रतनसेन जब दायज पावा । गंधर्वसेन आइ सिर नावा
'मानुस चित्त आन किछु कोई । करै गोसाईं सोइ पै होई
अब तुम्ह सिघलदीप-गोसाईं' । हम सेवक अहहीं सेवकाई
जस तुम्हार चितउरगढ़ देसू । तस तुम्ह 'इहाँ हमार नरेसू
जंबूदीप दूरि का काजू ? सिघलदीप करहु अब राजू'
रतनसेन बिनवा कर जोरी । 'अस्तुति-जोग जीभ कहँ मोरी
तुम्ह गोसाईं जेइ छार छुड़ाई । कै मानुस अब दीन्ह बढ़ाई
जौ तुम्ह कीन्ह तौ पावा जिवन जनम सुख-भोग ।

नातरु खेइ पायँ कै, हौं जोगी केहि जोग ? ॥ १६ ॥
धौराहर पर दोन्हा बासू । सात खंड जहवाँ कैलासू
सखी सहसदस सेवा पाई । जनहु चाँद सँग नखत तराई
होइ मंडल ससि के चहुँ पासा । ससि सूरहि लेइ चढ़ी अकासा
'चलू सूरुज दिन अथबै जहाँ । ससि निरमल तू पावसि तहाँ'

पदमावति जो सँवारै लीन्हा । पूनिउँ राति दैउ ससि कीन्हा
करि मज्जन तन कीन्ह नहानू । पहिरे चीर, गयउ छपि भानू
रचि पत्रावलि, माँग सेंदूरू । भरे मोति औ मानिक चूरू

पहिरि जराऊ ठाढ़ि भइ कहि न जाइ तस भाव ।

मानहु दरपन गगन भा तेहि ससि तार देखाव ॥ १७ ॥

पदमिनि-गवन हंस गए दूरी । कुंजर लाज मेल सिर धूरी
बदन देखि घटि चंद छपाना । दसन देखि कै बीजु लजाना
खंजन छपे देखि कै नैना । कोकिल छपी सुनत मधु बैना
गीव देखि कै छपा मयूरू । लंक देखि कै छपा सदूरू
भौहन धनुक छपा आकारा । बेनी बासुकि छपा पतारा
खड़ग छपा नासिका बिसेखी । अमृत छपा अधर-रस देखी
पहुँचहि छपी कवैल पौनारी । जंघ छपा कदली होइ बारी

अछरी रूप छपानीं जबहि चली धनि साजि ।

जावत गरब-गहेली सबै छपीं मन लाजि ॥ १८ ॥

‘बोलौं गनि, बचन सुनु सौँचा । पुरुष क बोल सपथ औ बाचा
यह मन लाएउँ तोहिं अस, नारी ! दिन तुइ पासा औ निसि सारी
पौ परि बारहि बार मनायउँ । सिर सौं खेलि पैत जिउ लाएउँ
हौं अब चौक पंज तें बाँची । तुम्ह बिच गोठ न आवहि कौँची
पाकि उठाएउँ आस करीता । हौं जिउ तोहि हारा, तुम्ह जीता
मिलि कै जुग नहिं होहु निनारी । कहौं बीच दूती देनहारी ?
अब जिउ जनम जनम तोहि पासा । चढ़ेउँ जोग, आएउँ कैलासा

जाकर जीउ बसै जेहि तेहि पुनि ताकरि टेक ।

कनक सोहाग न बिछुरै, औटि मिलै होइ एक' ॥१९॥

बिहँसी धनि सुनि कै सत बाता । 'निहचय तू मोरे रँग राता
निहचय भौर कँवल-रस रसा । जो जेहि मन सो तेहि मन बसा
जब हीरामन भणउ सदेसी । तुम्ह हूँ न मँडप गडउँ, परदेसी
तोर रूप तस देखिउँ लोना । जनु, जोगी, तू मेलेसि टोना
सिधि-गुटिका जो दिष्टि कमाई । पारहि मेलि रूप बैसाई
भुगुति देइ कहँ मैं तोहि दीठा । कँवल-नैन होइ भौर बईठा
नैन पुहुप, तू अलि भा सोभी । रहा बेधि अस, उड़ा न लोभी
जाकरि आस होइ जेहि तेहि पुनि ताकरि आस ।

भौर जो दाधा कँवल कहँ कस न पाव सो बाम ? ॥२०॥

कौन मोहनी दहूँ हुत तोही । जो तोहि बिथा सो उपनी मोहीं
बिनु जल मीन तलफ जस जोऊ । चातक भइउँ कहत "पिउ पीऊ"
जगिउँ बिरह जस दीपक-धाती । पंथ जोहत भइ साँप सेवाती
डाढ़ि डाढ़ि जिमि कोइल भई । भइउँ चकोरि, नींद निसि गई
तोरे पेम पेम मोहिं भयऊ । राता हेम अगिनि जिमि तयऊ
हीरा दिपै जौ सूर उदोती । नाहिं त कित पाहन कहँ जोती !
गवि परगासे कँवल बिगासा । नाहिं त कित मधुकर, कित बासा
तासौं कौन अंतरपट जाँ अस पीतम पीउ ।

नेवद्धावरि अब सारौं तन, मन, जोदन, जीउ' ॥२१॥

हंसि पदमावति मानी बाता । 'निहचय तू मोरे रँग राता
तू राजा दुहूँ कुल उजियारा । अस कै चरचिउँ मरम तुम्हारा

जस सत कहा कुँवर तू मोही । तस मन मोर लाग पुनि तोही'
 कहि सत भाव भई कँठलागू । जनु कंचन औ मिला सोहागू
 कुसुम-माल असि मालति पाई । जनु चंभा गहि डार ओनाई
 रतनसेन सो कंत सुजानू । खटरस-पंडित, सोरह बानू
 तस सोइ मिले पुरुष औ गोरी । जैसी बिछुरी सारस-जोरी

जनहुँ औटि कै मालि गए तस दूनौ भए एक ।

कंचन कसत कसौटी हाथे न कोऊ टेक ॥२॥

भा बिहान उठा रबि साई' । चहुँ दिसि आई' नखत तराई'
 रतनसेन गए अपनी सभा । बैठे पाट जहाँ अठ खँभा
 आई मिले चितउर के साथी । सबै विहँसि कै दीन्ही हार्थी
 राजा कर भल मानहु भाई । जेइ हन कहँ यह भूमि देखाई
 'धनि राजा, तुहँ राज बिसेखा । जेहि के राज सबै किछु देखा
 भोग-बिलास सबै किछु पावा । कहाँ जीभ जेहि अस्तुति आवा ?
 अब तुम आई अंतरपट साजा । दरसन कहँ न तपावहु राजा

नैन सेराने, भूखि गइ देखे दरस तुम्हार ।

नव अवतार आजु भा जीवन सफल हमार' ॥ २३ ॥

हँसि कै राज रजायसु दीन्हा । 'मैं दरसन कारन एत कीन्हा
 अपने जोग लागि अस खेला । गुरु भयऊँ आपु, कीन्ह तुम्ह चेला
 अहक मोरि पुरुषारथ देखेहु । गुरु चीन्हि कै जोग बिसेखेहु
 जौ तुम्ह तप साधा मोहि लागी । अब जिनि हिये होहु बैरागी
 जौ जेहि लागि सहै तप जोगू । सो तेहि के संग मानै भोगू'

सोरह सहस पदमिनी माँगी । सबै दीन्हि, नहिं काहुहि खाँगी
सब कर मंदिर सोने साजा । सब अपने अपने घर राजा
हस्ति घोर और कापर सबहिं दीन्ह नव साज ।

भर गृही औ लखपती घर घर मानहुँ राज ॥ २४ ॥

पदमावति सब सखी बोलाई । चीर पटोर हार पहिराई
सीस सबन्ह के सेंदुर पूरा । औ राते सब अंग सेंदूरा
चंदन अगर चित्र सब भरीं । नए चार जानहु अवतरीं
जनहुँ कैवल संग फूलीं कूई । जनहुँ चाँद संग तरई ऊई
'धनि पदमावति, धनि तोर नाहू । जेहि अभरन पहिरा सब काहू
बारह अभरन, सोरह सिँगारा । तोहि सौह नहिं ससि उजियारा
ससि सकलंक रहै नहिं पूजा । तू निकलंक, न सरि कोइ दूजा'
काहू बीन गहा कर, काहू नाद मृदंग ।

सबन्ह अनंद मनाव रहसि कूदि एक संग ॥ २५ ॥

पदमावति कह 'सुनहु, सहेली । हौं सो कैवल, तुम कुमुदिनि-बेली
कलस मानि हौं तेहि दिन आई । पूजा चलहु चढ़ावहि जाई'
मैंम पदमावति कर जो बेवानू । जनु परभात परै लखि भानू
आस पास बाजत चौडोला । दुंदुभि, भौंभ, तूर, डफ, ढोला
एक संग सब सोंधे-भरीं । देव-दुवार उतरि भई खरी
अपने हाथ देव नहवावा । कलस सहस इक घिरित भरावा
पोता मेंढप अगर और चंदन । देव भरा अरगज औ बंदन
कै प्रनाम आगे भई, बिनय कीन्हि बहु भाँति ।

रानी कहा 'चलहु घर, सखी, होति है राति' ॥ २६ ॥

(५) नागमती खंड

नागमती चितउर-पथ ^{पिउ} हेरा । पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा
 नागर काहु नारि बस परा । तेइ मोहि पिय मो सौँ हरा
 सुआ काल होइ लेइगा पीउ । पिउ नहिं जात, जात बरु जीऊ
 भयउ नरायन बावन करा । राज करत राजा बलि छरा
 करन पास लीन्हैउ कै छंदू । बिप्र रूप धार मिलमिल इंदू
 मानत भोग गोपिचंद भोगी । लेइ अपसवा जलंधर जोगी
 लेइगा कृस्नहि गरुड़ अलापी । कठिन बिछोह, जिअहिं किमि गोपी ?

सारस जोरी कौन हरि मारि बियाधा लीन्ह ?

भुरि भुरि पीजर हौँ भई विरह-काल मोहि दोन्ह ॥ १ ॥

पिउ-बियोग अस बाउर जीऊ । पपिहा निति बोलै 'पिउ पीऊ'
 अधिक काम दाधै सो रामा । हरि लेइ सुवा गयउ पिउ नामा
 विरह बान तस लाग न डोलो । रक्त पसीज, भोजि गइ चोली
 सुखो हिया हार भा भारी । हरि हरि प्रान तजहिं सब नारी
 खन पक आव पेट महँ साँसा । खनहिं जाइ जिउ, होइ निरासा
 पवन डोलावहिं, सींचहिं चोला । पहर एक समुझहिं मुख वाला
 प्रान पयान होत को राखा ? को सुनाव पातम कै भाखा ?

आहि जो मारै विरह कै आगि उठै तेहि लागि ।

हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरा, गा भागि ॥ २ ॥

‘पाट-महादेइ, हिये न हारू । समुझि जीव चित नेतु सँभारू
भौर कँवल सँग होइ मेरावा^{पुनि} । सँवरि नेह मालति पहुँ आवा
पपिहै स्वाती सौ जस प्रीती । टेकु पियास, बाँधु मन थीती
धरतिहि जैस गगन सौ नेहा । पलटि आव बरसा रितु मेहा
पुनि बसंत रितु आव नवेली । सो मर, सो मधुकर, सो बेली
जिनि अस जीव करसि, तू बारी । यह तरिवर पुनि उठिहि सँवारी
दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा । पुनि सोइ सरवर, सोई हंसा
मिलहि जो बिछुरे साजन अंकम भेंटि गहत ।

तपनि मृगसिरा जे सहैं ते अद्रा पनुहंत ॥ ३ ॥

चढ़ा अमाइ, गगन घन गाजा । साजा बिरह दुंद दल बाजा
धूम, साम, धौरे घन धाए । सेत धजा बग-पाँति देखाए
खड़ग-बीजु चमकै चहुँ ओरा । बुंद-बान बरसहि घन घोरा
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी । कंत, उबारू मदन हौ घेरी
दादुर मोर कोकिला, पीऊ । गिरै बीजु, घट रहै न जोऊ
पुण्य नखत सिर ऊपर आवा । हौ बिनु नाह, मँदिर को छावा ?
अद्रा लागि, लागि भुइ लेई । मोहि बिनु पिउ को आदर देई ?

जिन्ह घर कंता ते सुखो तिन्ह गारौ औ गबे ।

कंत पियारा बाहिरै हम सुख भूला सब ॥ ४ ॥

सावन बरस मेह अति पानी । भरनि परी, हौ बिरह मुरानी
लाग पुनरबसु पीउ न देखा । भइ बाउरि, कहँ कंत सरंखा ?
रक्त कै आँसु परहि भुइँ टूटी । रेंगि चलीं जस बीरबहूटी
सखिन्ह रचा पिउ संग हिँडोला । हरियरि भूमि, कुसुंभी चोला ।

हियहिँ डोजि अंस डोलै मोरा । बिरह भुलाइ देइ भक्तमोरा
बाट असूझ अथाह गँभीरी । जिउ बाउर भा फिरै भँभीरी
जग जल बूझ जहाँ लगि ताकी । मोरि नाव खेवक बिनु थाकी

परबत समुद अगम बिच बीहड़ घन बनढाँख ।

किमि कै भेंटौ कंत तुम्ह ना मोहिँ पाँव न पाँख ? ॥ ५ ॥

भा भादों दूभर अति भारी । कैसे भरौ रैन अधियारी
मंदिर सून पिउ अनतै बसा । सेज नागिनी फिरि फिरि डसा
रहौ अकेलि गहे एक पाटी । नैन पसारि मरौ हिय फाटी
चमक बीजु, घन गरजि तरासा । बिरह काल होइ जीउ गरासा
वरसै मघा भक्तोरि भक्तोरी । मोरि दुइ नैन चुवै जस ओरी
धनि सूखै भरे भादौ माहाँ । अबहुँ न आएन्हि सींचेन्हि नाहाँ
पुरबा लाग भूमि जल पूरी । आक जवास भई तस भूरी

थल जल भरे अपूर सब धरति गगन मिलि एक ।

धनि जोवन अवगाह महुँ दे बूझत, पिउ, टेक ॥ ६ ॥

लाग कुवार, नीर जग घटा । अबहुँ आउ, कंत, तन लटा
तोहिँ देखे, पिउ, पलुहै कया । उतरी चित्त, बहुरि करु मया
चित्रा मित्र मीन कर आवा । पपिहा पीउ पुकारत पावा
उआ अगस्त, हस्ति-घन गाजा । तुरय पलानि चढ़े रन राजा
स्वाति-बूद चातक मुख परे । समुद सीप मोती सब भरे
सरवर सँवरि हंस चलि आए । सारस कुरलहिँ, खँजन देखाए
भा परगास, काँस बन फूले । कंत न फिरे, बिदेसहि भूले

नागमती खंड

बिरह-हस्ति तन सालै, घाय करै चित चूरी

बेगि आइ, पिउ, बाजहु, गाजहु होइ सदूर ॥ ७ ॥

कातिक सरद-चंद उजियारी । जग सीतल, हौ बिरहै जारी
चौदह करा चाँद परगासा । जनहुँ जरै सब धरति अकासा
तन मन सेज करै अगिदाहू । सब कहँ चद भयउ मोहि राहू
चहूँ खंड लागै अधियारा । जौ घर नाही कंत पियारा
अबहूँ, निठुर, आउ एहि बारा । परब देवारी होइ संसारा
सखि भूमक गावैं अँग मोरी । हौ मुरावँ, बिछुरी भोरि जोरी
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा । मो कहँ बिरह, सवति-दुख दूजा
सखि मानैं तिउहार सब गाइ देशरी खेलि ।

हौ का गावौ कंत बिनु रही छार सिर मेलि ॥ ८ ॥

अगहन दिवस घटा, निमि बाढ़ी । दूभर रैन, जाइ किमि गाढ़ी ?
अब धनि बिरह दिवस भा गती । जगै बिरह जस दीपक-बाती
कौपै हिया जनवै सीऊ । तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ
घर घर चीर गचे सब काहू । मोर रूप-गंग लेइगा नाहू
पलाटि न बहुग गा जाँ बिछोई । अबहूँ फिरै, फिरै गंग सोई
बज्र-अग्नि बिरहिनि हिय जाग । सुठुगि सुठुगि दगधै होइ छारा
यह दुख दगध न जानै वंतू । जाँबन जनम वरै भममंत
पिउ मौ कहेउ दे डा हे भौगा, हे काग ।

सो धनि बिरहै जरि मई तेहि क धु यौ हम लाग ॥ ९ ॥

पूम जाइ थर थर तन कौपा । सुनज जाइ लंक-मिमि चाँपा
बिरह बाढ़, दारुन भा साऊ । कपि कपि मी, लेइ हरि जीऊ

कंत कहौं, लागौं ओहि हियरे । पंथ अपार, सूझ नहि नियरे
सौर सपेती आवै जूड़ी । जानहु संज हिवंचल वूड़ी
 चकई निसि बिछुरै, दिन मिला । हौं दिन-राति बिरह कांकिला
 रैन अकंलि साथ नहि सखी । कैसे जियै विछोहा पखी
 बिरह सचान भयउ तन जाड़ा । जियत खाइ औ मुए न छाँड़ा

{ रकत दुग माँसू गरा हाड़ भयउ सब संख ।
 { धनि सारस होइ ररि मुई पीउ समेटहि पंख ॥ १० ॥

लागेउ मात्र, परै अत्र पाला । बिस्वा काल भयउ जड़काला
 पहल पहल तन रुई भाँपै । हहरि हहरि अधिकौ हिय काँपै
 आइ सूर होइ तापु, रे नाहा । तोहि बिनु जाड़ न छूटै माहा
 एहि माँह उपजै रममूलू । तूँ सो भौर, मार जोवन फूलू
 नैन चुवहि जस महवट नीरू । तोहि बिनु अंग लाग सर-चीरू
 टप टप बूँद परहि जस ओला । बिरह पवन होइ मारै भोला
 केहि क सिँगार, के पहिरु पटोरा ? गाँउ न हार, रही होइ डोरा

तुम बिनु काँपै धनि हिया तन तिनउर भा डोल ।

तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा भोल ॥ ११ ॥

फागुन पवन भक्फोरा बहा । चौगुन सीउ जाइ नहि सहा
 तन जस पियर पात भा मोरा । तेहि पर बिरह देइ भक्फोरा
 तरिवर भरहि, भरहि वन ढाखा । भई ओनंत फूलि फरि साखा
 करहि बनसपति हिये हुलासू । मो कहँ भा जग दून उदासू
 फागु करहि सब चौंचरि जोरी । मोहिं तन लाइ दीन्हि जम होरी

जो पे पीउ जरत अस पावा । जरत मरत मोहि रोष न आवा
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे । लगौ निहोर कंत अब तोरे
यह तन जारौ छार कै कहौ कि 'पवन, उड़ाव' ।

मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरै जहँ पाव ॥१२॥
चैत वसंता होइ धमारी । मोहि लेखे संसार उजारी
पंचम बिरह पंचसर मारै । रक्त रोइ सगरौ बन ढारै
बूड़ि उठे सब तरिवर-पाता । भोजि मजीठ, टेसु बन राता
वौरे आम फरै अब लागे । अबहुँ आउ घर, कंत सभाग
सहस भाव फूलीं वनसपती । मधुकर घूमहि सँवरि मालती
मोकहँ फूल भए सब काँटे । दिस्टि परत जस लागहि चाँटे
फिरि जावन भए नारँग साखा । सुआ-बिरह अब जाइ न राखा
घिरिनि परेवा होइ पिउ आउ बेगि परु दूटि ।

नारि पराये हाथ हैं तोहि बिनु पाव न छूटि ॥१३॥
भा बैसाख तपनि अति लागी । चोआ चीर चँदन भा आगी
सूरुज जरत हिवंचल ताका । बिरह-बजागि सौह रथ हाँका
जरत बजागिनि करु, पिउ, छाँहा । आइ बुझाउ, अंगारन्ह माहाँ
तोहि दरसन सीतल नारी । आइ आगि तें करु फुलवारी
लागिउँ जरै, जरै जस भारू । फिरि फिरि भूँजेसि, तजिउँ न बारू
सरवर-हिया घटत निति जाई । टूक टूक सोइ कै बिहराई
बिहरत हिया करहु, पिउ टेका । दीठि-द्वंगरा मेरवहु एका
कँवल जो बिगसा मानसरबिनु जल गयउ सुखाइ ।

कबहुँ बेलि फिरि पलुहै जो पिउ सींचै आइ ॥ १४ ॥

जेठ जरै जग, चलै लुवारा । उठहि बवंडर, परहि अंगारा
 बिरह गाजि हनुवैत होइ जागा । लंका-दाह करै तनु लागा
 चारिहु पवन झकोरै आगी । लंका दाहि पलंका लागी
 दाहि भई साम नदी कालिंदी । बिरह क आगि कठिन अति मंदी
 उठै आगि औ आवै आँधी । नैन न सूख, मरौ दुख-बाँधी
 अधजर भइउँ, माँसु तन सूखा । लाजेउ बिरह काल होइ भूखा
 माँसु खाइ अब हाडन्ह लागै । अबहुँ आउ, आवत सुनि भागै
 गिरि, समुद्र, ससि, मेघ, रवि सहि सकहिं वह आगि ।

मुहमद सती सराहिए, जरै जो अस पिउ लागि ॥१५॥
 तपै लागि अब जेठ-असादी । मोहि पिउ बिनु छाजनि भइ गाढ़ी
 तन तिनउर भा, भूगै खरी । भइ बरखा, दुख आगरि जरी
 बंध नाहिं औ कंध न कोई । बात न आव, कहाँ का रोई ?
 साँठे नाठि, जग बात को पूछा ? बिनु जिउ फिरै मूँज-तनु छूँछा
 भई दुहेली टेक बिहूनी । थाँभ नाहिं उठि मकै न थूनी
 बरसै मेह, चुवहि नैनाहा । छपर छपर होइ रहि बिनु नाहा
 कोरौ कहाँ ठाट नव साजा । तुम बिनु कंत न छाजने छाजा
 अहूँ मया-दिस्ट करि, नाह निठुर, घर आउ ।

मँदेर उजार होत है नव कै आइ बसाउ ॥ १६ ॥

रोइ गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक सौमा
 तिल तिल बरख बरख परि जाई । प्रहर पहर जुग जुग न सेगई
 सो नहिं आवै रूप मुगगी । जासौ पाव सोहाग सुनारी
 सौम भए कुरि कुरि पथ हेरा । कौनि सो घरी करै पिउ फेरा ?

दहि कोइला भइ कंत सनेहा । तोला माँसु रहा नहि देहा
रक्त न रहा, बिरह तन गुरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा
पायँ लागि जोरै धनि हाथा । जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा

बरस दिवस धनि रोइ कै हारि परी चित भंखि ।

मानुष घर घर बूझि कै बूझै निसरी पंखि ॥ १७ ॥

भइ पुछार, लीन्ह बनबासू । बैरिनि सवति दीन्ह चिलवासू
होइ खर वान बिरह तनु लागा । जौ पिउ आवै उड़हि तौ कागा
हारिल भई पंथ में सेवा । अब तहँ पठवौ कौन परेवा
धौरी पंडुक कहु पिउ नाऊँ । जौ चित रोख न दूसर ठाऊँ
जाहि बया होइ पिउ कँठ लवा । करै मेराव सोइ गौरवा
कोइल भई पुकारति रही । महरि पुकारै 'लेइ लेइ दही'
पेड़ तिलोरी औ जल हंसा । हिरदय पैठि बिरह कटनंसा

जेहि पंखी के निश्रर होइ कहै बिरह कै बात ।

सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात ॥ १८ ॥

कुहुकि कुहुकि जस कोइल रोई । रक्त-आँसु घुँघुची बन बोई
भइ करमुखी नैन तन राती । को सेराव ? बिरहा-दुख ताती
जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी । तहँ तहँ होइ घुँघुचि कै रासी
बूँद बूँद महँ जानहुँ जीऊ । गुंजा गूँजि करै 'पिउ पीऊ'
तेहि दुख भए परास निपाते । लोहू बूड़ि उठे होइ राते
राते बिब भीजि तेहि लोहू । परवर पाक, फाट हिय गोहूँ
देखौ जहाँ होइ सोइ राता । जहाँ सो रतन कहै को बाता ?

नहि पावस ओहि देसरा नहि हेवंत बसंत ।

ना कोकिल न पपीहरा जेहि सुनि आवै कंत ॥ १९ ॥ ७

फिरि फिरि रोव, कोइ नहि डोला । आधी राति बिहंगम बोला
'तू फिरि फिरि दाहै सब पाँखी । केहि दुख रैन न लावसि आँखी'
नागमती कागन कै रोई । 'का सोवै जो कंत-बिछोई
मनचित हूँते न उतरै मोरे । नैन क जल चुकि रहा न मोरे
कोइ न जाइ ओहि सिंघलदोपा । जेहि सेवाति कहँ नैना सीपा
जोगी होइ निसरा सो नाहू । तव हूँत कहा सँदेस न काहू
निति पूछों सब जोगी जंगम । कोइ न कहै निज बात, बिहंगम !

चारिउ चक्र उजार भए कोइ न सँदेसा टेक ।

कहौ बिरह-दुख आपन बैठि सुनहु दँड एक ॥ २० ॥

तासौ दुख कहिए, हो बीरा । जेहि सुनि कै लागै पर-पीरा
को होइ भिउँ अँगवै पर दाहा । को सिंघल पहुँचावै चाहा ?
जहँवाँ कंत गाए होइ जोगी । हौं किँगरी भइ भूरि बियोगी
वै सिंगी पूरी, गुरु, भेंटा । हौं भइ भसम, न आइ समेटा
कथा जो कहै आइ ओहि केरी । पाँवरि होउँ, जनम भरि चेरी
ओहि के गुन मँवरत भइ माला । अबहुँ न बहुरा उड़ि गा छाला
विरह गुरु, खप्पर कै हीया । पवन अधार रहै सो जीया

हाड़ भए सब किँगरी नसै भई सब ताँति ।

रोवँ रोवँ तें धुनि उठै कहौ बिथा केहि भौँति ? ॥ २१ ॥

पदमावति सौ कहेहु, 'बिहंगम । कंत लोभाइ रही करि संगम
तू घर घरनि भई पिउ-हरता । मोहिं तन दीन्हेसि जप औ बरता

रावट कनक सो तोकहँ भयऊ । रावट लंक मोहि कै गयऊ
तोहि चैन सुख मिलै सरीरा । मो कहँ हिये दुंद दुख पूरा
हमहुँ बियाही सँग ओहि पीऊ । आपुहि पाइ जानु पर जीऊ
अबहुँ मया करु, करु जिउ फेरा । मोहि जियाउ कंत देइ मेरा
मोहि भोग सौं काज न, बारी । सौह दीठि कै चाहनहारी

सवति न होसि तू बैरिनि मोर कंत जेहि हाथ ।

आनि मिलाव एक बेर तोर पाँय मोर माथ ॥ २२ ॥

रतनसेन कै माइ सुरसती । गोपीचंद जसि मैनावती
आँधरि बूढ़ि होइ दुख रोवा । जीवन रतन कहाँ दुहुँ खोवा
जीवन अहा लीन्ह सो काढ़ी । भइ बिनु टेक करै को ठाढ़ी ?
नैन दीठ नहि दिया बराहीं । घर अँधियार पूत जौ नाही
को रे चलै सरवन के ठाऊँ । टेक देह औ टेकै पाऊँ
लेइ सो सँदेस बिहंगम चला । उठी आगि सगरौ सिंघला
दाधे बन बीहड़ जल सीपा । जाइ नियर भा सिंघलदीपा

समुद-तीर एक तरिवर जाइ बैठ तेहि रुख ।

जौ लगि कहा सँदेस नहि, नहि पियास नहि भूख ॥ २३ ॥

रतनसेन बन करत अहेरा । कीन्ह ओही तरिवर तर फेरा
सीतल बिरिछ समुद के तीरा । अति उतंग औ छाँह गँभीरा
तुरय बाँधि कै बैठ अकेला । साथी और करहि सब खेला
देखत फिरै सो तरिवर-साखा । लाग सुनै पंखिन्ह कै भाखा
पंखिन्ह महँ सो बिहंगम अहा । नागमती जासौ दुख कहा

पूछहि सबै बिहंगम नामा । अहो मीत, काहे तुम सामा
कहेसि 'मीत, मासक दुइ भए । जंबूदीप तहाँ हम गए
नगर एक हम देखा गढ़ चितउर ओहि नावँ ।

सो दुख कहौ कहौ लागि हम दाढ़े तेहि ठावँ ॥ २४ ॥

जोगी होइ निसरा सो राजा । सून नगर जानहु धुँध बाजा
नागमती है ताकरि रानी । जरी बिरह, भइ कोइल-बानी
अब लागि जरि भइ होइहि छारा । कही न जाइ बिरह कै भारा'
सुनि चितउर-राजा मन गुना । 'बिधि-सँदेस मैं कासौं सुना
को तरिवर पर पंखी-बेसा । नागमती कर कहै सँदेसा ?
हौ सोई राजा भा जोगी । जेहि कारन वह ऐसि बियांगी
जस तूँ पंखि महुँ दिन भरौ । चाहौ कबहि जाइ उड़ि परौ
पंखि, आँखि तेहि मारग लागी सदा रहाहि ।

कोइ न सँदेसी आवहि तेहि क सँदेस कहाहि' ॥ २५ ॥

'पूछसि कहा सँदेस-बियोगू । जोगी भए न जानसि भोगू
देखेउँ तोरे मँदिर घमोई । मातु तोरि आँधरि भइ रोई
जस सरवन बिनु अंधी अंधा । तस ररि मुई, तोहि चित बैधा
कहेसि मरौ, को काँवरि लेई ? पूत नाहि, पानी को देई ?
नागमती दुख बिरह अपारा । धरती सरग जरै तेहि भारा
वह तोहि कारन मरि भइ छारा । रही नाग होइ पवन अधारा
माँसु गिरा पाँजर होइ परी । जोगी, अबहुँ पहुँचु लेइ जरी
देखि बिरह-दुख ताकर मैं सो तजा बनवास ।

आयउँ भागि समुद्रतट तबहुँ न छौं डै पास' ॥ २६ ॥

कहि संदेस बिहंगम चला । आगि लागि सगरौ सिंघला
घरी एक राजा गोहरावा । भा अलोप, पुनि दिस्टि न आवा
पंखी नावै न देखा पाँखा । राजा रोइ फिरा कै साँखा
तन सिंघल, मन चितउर बसा । जिउविसँभर नागिनि जिमि डसा
बरसि एक तेहि सिंघल भयऊ । भोग, विलास करत दिन गयऊ
कँवल उदास जो देखा भँवरा । थिर न रहै अब मालति सँवरा
गंध्रबसेन आव सुनि बारा । 'कस जिउ भयउ उदास तुम्हारा
मैं तुम्हही जिउ लावा, दीन्ह नैन महँ बास ।

जौ तुम होहु उदास तौ यह काकर कैलास' ॥ २७ ॥
रतनसेन बिनवा कर जोरी । 'अस्तुति जोग जीभ नहिं मोरी
सहस जीभ जौ होहिं गोसाईं । कहि न जाइ अस्तुति जहँ ताईं
काँच रहा तुम कंचन कीन्हा । तब भा रतन जोति तुम दीन्हा
अब बिनती एक करौ, गोसाईं । तौ लगि कया जीउ जब ताईं
आवा आजु हमार परेवा । पाती आनि दीन्ह मोहिं, देवा
राज हमार जहाँ चलि आवा । लिखि पठइन अब होइ परावा
उहाँ नियर दिल्ली सुल्तानू । होइ जो भोर उठै जिमि भानू
रहहु अमर महि गगन लगि तुम महि लेइ हम्ह आउ ।

सोस हमार तहाँ निति जहाँ तुम्हारा पाउ' ॥ २८ ॥
राज-सभा पुनि उठी सबारी । 'अनु बिनती, राखिय पति भारी
भाइन्ह माहँ होइ जिनि फूटी । घर के भेद लंक अस दूटी
बिरवा लाइ न सूखै दीजै । पावै पानि दिस्टि सो कीजै
आनि रखा तुम्ह दीपक लेसी । पै न रहै पाहुन परदेसी

जाकर राज जहाँ चलि आवा । उहै देस पै ताकहँ भावा
हम्ह तुम्ह नैन घालि कै राखे । ऐसि भाख एहि जीभ न भाखे
दिवस देहु सह कुसल सिधावहि' । दीरघ आउ होइ, पुनि आवहि''

सबहि बिचार परा अस भा गवने कर साज ।

सिद्धि गनेस मनावहि' बिधि पुरवहु सब काज ॥२९॥

बिनय करै पदमावति बारी । 'हौं पिउ, जैसी कुंद नेवारी
नागसेर जो है मन तोरे । पूजिन सकै बोल सरि मोरे
होइ सदबरग लीन्ह मैं सरना । आमे करु जो कंत, तोहि करना'
गवन चार पदमावति सुना । उठा धसकि जिउ औ सिर धुना
राखत बारि सो पिता निछोहा । कित बियाहि अस दीन्ह बिछोहा
पुनि पदमावति सखी बोलाई । सुनी कै गवन मिलै सब आई
'मिलहु, सखी, हम तहँवाँ जाहीं । जहाँ जाइ पुनि आउब नाहीं

कंत चलाई, का करौं, आयसु जाइ न मेटि ।

पुनि हम मिलहि' कि ना मिलहि, लेहु सहेली भेंटि' ॥३०॥

धनि रावत रोवहि' सब सखी । 'हम तुम्ह देखि आपु कहँ भँखी
'तुम्ह ऐसी जौ रहै न पाई । पुनि हम काह जो आहि' पराई
तब तेइ नैहर नाहीं चाहा । जौ ससुरारि होइ अति लाहा
तुम बारी पिउ दुहुँ जग राजा । गरब किरोध ओहि पै छाजा
सब फर फूल ओहि के साखा । चहै सो तूरै, चाहै राखा
आयसु लिहे रहिहु नित हाथा । सेवा करहु लाइ भुईं माथा
सोइ पियारी पियहि पिरीती । रहै जो आयसु सेवा जीती'

पत्रा काढ़ि गवन-दिन देखहिं, कौन दिवस दहूँ चाल ।

दिसासूल, चक जोगिनी सौह न चलिए, काल ॥ ३१ ॥

‘चलहु चलहु’ भा पिउ कर चालू । घरी न देख लेत जिउ कालू
रोवहिं मातु पिता औ भाई । कोउ न टेक जौ कंत चलाई
रोवहिं सब नैहर सिघला । लेइ वजाइ कै राजा चला
भरीं सखी सब भेंटत फेरा । अंत कंत सौं भयउ गुरेरा
जब पहुँचाइ फिरा सब कोऊ । चला साथ गुन अवनुन दोऊ
औ सँग चला गवन सब साजा । उहै देइ अरु पारै राजा
रतन पदारथ मानिक मोती । काढ़ि भंडार दीन्ह रथ जोती
लिखनी लागि जौ लेखै कहै न पारै जोरि ।

अरब, खरब, दसनील, सँख औ अरबुद पदुम करोरि ॥ ३२ ॥
बोहित भरे चला लेइ रानी । दिस्ट माहँ कोइ और न आनी
आधे समुद ते आए नहीं । उठी बाउ आँधी उतराहीं
लहरैं उठीं समुद उलथाना । भूला पंथ सरग नियराना
बोहित चले जो चितउर ताके । भए कुपंथ, लंक दिसि हाँके
बोहित बहे, न मानहिं खेवा । पारि लगावै को करि सेवा
बोहित दूक दूक सब भए । एहु न जाना कहँ चलि गए
भए राजा रानी दुइ पाटा । दूनौं बहे, चले दुइ बाटा
काया जोउ मिलाइ कै मारि किए दुइ खंड ।

तन रोवै धरती परा, जीउ चला बरम्हंड ॥ ३३ ॥

मुरुछि परी पदमावति रानी । कहाँ जीउ, कहाँ पीउ, न जानी
जानहु चित्र-मूर्ति गहि लाई । पाटा परे बही तस जाई

जनम न सहा पवन सुकुवारा । तेइ सो परी दुख-समुद अपारा
 लछिमी नावँ समुद कै बेटी । तेहि कहँ लच्छि होइ जेहि भेंटी
 खेलति अही सहेली सेंती । पाटा जाइ लाग तेहि रेती
 कहेसि सहेली 'देखहु पाटा । मूरिति एक लागि बहि घाटा'
 जौ देखा, तीवइ है साँसा । फूल मुवा, पै मुई न बासा
 रंग जो राता प्रेम के जानहु बीरबहूटि ।

आइ बही दधि-समुद महुँ पै रंग गयउ न छूटि ॥ ३४ ॥

लछमी लखन बनीसौ लखी । कहेसि 'न मरै' सँभारहुँ सखी
 कागर पतरा ऐस सरीरा । पवन उड़ाइ परा मँझ नीरा
 लहरि भकोर उदधि जल भीजा । तबहुँ रूप-रंग नहि छीजा'
 आपु सीस लेइ बैठी कोरै । पवन डोलावै सखि चहुँ ओरै
 बहुरि जो समुझि परा तन जीऊ । माँगैसि पानि बोलि कै पीऊ
 पानि पियाइ सखी मुख धोई । पदमिनि जनहुँ कँवल सँग कोई
 तब लछिमी दुख पूछा ओही । 'तिरिया, समुझि बात कहु मोहीं

देखि रूप तोर आगर लागि रहा चित मोर ।

केहि नगरी कै नागरी काह नावँ, धनि, तोर ?' ॥ ३५ ॥

नैन पसारि देख धन चेती । देखै काह, समुद कै रेती
 आपन कोई न देखेसि तहाँ । पूछेसि, 'तुम्ह हौ को ? हौ कहाँ ?
 कहाँ जगत महुँ पीउ पियारा । जो सुमेरु, बिधि गरुअ सँवारा'
 कहेन्हि 'न जानहि हम तोर पीऊ । हम तोहि पाव, रहा नहि जीऊ
 पाट परी आई तुम्ह बही । ऐस न जानहि दहुँ कहँ अही'

तब सुधि पदमावति मन भई । सँवरि बिछोह मुरुछि मरि गई
बाउरि होइ परी पुनि पाटा । 'देहु बहाइ कंत जेहि घाटा'
साथी आथि निआथि जो सकै साथ निरबाहि ।

जो जिउ जारे पिउ मिलै भेंटु रे जिउ, जरि जाहि ॥ ३६ ॥

मती होइ कहँ सीस उधारा । घन महँ बीजु घाव जिमि मारा
संदुर जरै आगि जनु लाई । सिर कै आगि सँभारि न जाई
छूटि माँग अस मोति-पिरोई । बारहि बार जरै जौ रोई
टूटहि मोति बिछोह जो भरे । सावन-बूँद गिरहि जनु भरे
भहर भहर । कै जोबन बरा । जानहुँ कनक अगिनि महँ परा
अगिनि माँग, पै देइ न कोई । पाहुन पवन पानि सब कोई
खीन लंक टूटी दुखभरी । बिनु रावन केहि बर होइ खरी
रोवत पंखि विमोहे जस कोकिला-अरंभ ।

जाकरि कनकलता सो बिछुरा पीतम खंभ ॥ ३७ ॥

लछिमी लागि बुझावै जीऊ । 'ना मरु बहिन, मिलिहि तोर पीऊ
पीउ पानि, होउ पवन-अधारी । जसि हौं तहूँ समुद कै बारी
मैं तोहि लागि लेवँ खटवाटू । खोजहि पिता जहाँ लगि घाटू
हौं जेहि मिलौं ताहि बड़ भागू । राजपाट औ देवँ सोहागू'
कहि बुझाइ लेइ मँदिर सिधारी । भइ जेवनार न जेवै बारी
जेहि रे कंत कर होइ बिछोहा । कहँ तेहि भूख, कहँ सुख-सोवा
कहाँ सुमेरु, कहँ वह सेसा । को अस तेहि सौं कहै सँदेसा
लछिमी जाइ समुद पहुँ रोइ बात यह चालि ।

कहा समुद 'वह घट मोरे, आनि मिलावौं कालि' ॥ ३८ ॥

राजा जाइ तहाँ बहि लागा । जहाँ न कोइ सँदेसी कागा
 'काहि पुकारौ, का पहुँ जाऊँ । गाढ़े मीत होइ एहि ठाऊँ
 ए गोसाईँ, तू सिरजनहारा । तुइ सिरजा यह समुद अपारा
 सो मूरख औ बाउर अंधा । तोहि छाँड़ि चित औरहि बंधा
 तुई जिउ तन मेरवसि देइ आऊ । तुही बिछोवसि, करसि मेराऊ
 जानसि सबै अवस्था मोरी । जस बिछुरी सारस कै जोरी
 एक मुए ररि मुवै जो दूजी । रहा न जाइ, आउ अब पूजी
 दुख सौ पीतम भेंट कै सुख सौ सोव न कोइ ।

एही ठावँ मन डर पै मिलि न बिछोहा होइ' ॥ ३९ ॥

कहि कै उठा समुद महुँ आवा । काढ़ि कटार गीउ महुँ लावा
 कहा समुद, 'पाप अब घटा' । बाम्हन रूप आइ परगटा
 तिलक दुषादस मस्तक कीन्हे । हाय कनक-बैसाखी लीन्हे
 मुद्रा स्रवन, जनेउ काँधे । कनक-पत्र धोती तर बाँधे
 पाँवरि कनक जराऊ पाऊँ । दीन्हि असीस आइ तेहि ठाऊँ
 'कहसि कुवर, मो सौ सत बाता । काहे लागि करसि अपघाता
 परिहँस मरसि कि कौनिउ लाजा । आपन जीउ देसि केहि काजा ?
 जिनि कटार गर लावसि, समुझि देखु मन आप ।

सकति जीउ जौ काढ़ै, महा दोष औ पाप' ॥ ४० ॥

'को तुम्ह उतर देइ, हो पाँडे । सो बोलै जाकर जिउ भोंडे
 जंबूदीप केर हौ राजा । सी मैं कीन्ह जो करत न छाजा
 सिंघलदीप राजघर-बारी । सो मैं जाइ वियाही नारी
 बहु वोहित दायज उन दीन्हा । नग अमोल निरमर भरि लीन्हा

रतन पदारथ मानिक मोती । हुती न काहु के संपति ओती ।
बहल, घोड़, हस्ती सिंगली । औ सँग कुँवरि लाख दुइ चली ।
ते गांहेने सिंगल पदमिनी । एक सों एक चाहि रूपमनी ।

पदमावति जग रूपमनि कहँ लगि कहौं दुहेल ।

तेहि समुद्र महँ खोएउँ, हौं का जिअौं अकेल' ? ॥४१॥

हँसा समुद्र होइ उठा अँजोरा । जग बूड़ा सब काह कहि मोरा ।
तोर होइ तोहि परे न बेरा । बूझि विचारि तहँ केहि केरा' ।
'अनु, पाँड़े, पुरुषहि का हानी । जौ पावौ पदमावति रानी ।
कहँ अस रहस भोग अब करना । ऐसे जिए चाहि भल मरना ।
जस यह समुद्र दीन्ह दुख मोकाँ । देइ हत्या भगरौं सिंगलोका' ।
'तुही एक मैं बाउर भेंटा । जैस राम, दसरथ कर बेटा ।
नोहि बल नाहि, मूँदु अब आँखी । लावौं तीर, टेकु वैसाखी' ।

बाउर अंधा प्रेम कर सुनत लुबुधि भा बाट ।

निमिष एक महँ लेइगा पदमावति जेहि घाट ॥ ४२ ॥

लच्छिमी चंचल नारि परेवा । जेहि सत होइ छरै कै सेवा ।
रतन सेन आवै जेहि घाटा । अगमन होइ बैठि तेहि बाटा ।
औ भइ पदमावति के रूपा । कीन्हेसि छाहँ जरै जहँ धूपा ।
देखि सो कँवल भँवर होइ धावा । साँस लीन्ह, वह बास न पावा ।
निरखत आइ लच्छिमी दीठी । रतनसेन तब दीन्ही पीठी ।
जौ भलि होति लच्छिमी नारी । तजि महेस कित होत भिखारी ?
पुनि धनि फिरि आगे होइ रोई । 'पुरुष पीठि कस दीन्हि निछोई' ।

हैं रानी पदमावति रतनसेन तू पीउ ।

आनि समुद महीं छाँड़ेहु अब रोवैं देइ जीउ' ॥४३॥

‘मैं हैं सोइ भँवर औ भोजू । लेत फिरैं मालति कर खोजू
का तुइ नारि बैठि अस रोई । फूल सोइ पै बास न सोई
हैं ओहि बास जीउ बलि देऊँ । और फूल कै बास न लेऊँ’
तब हंसि कह राजा ‘ओहि ठाऊँ । जहाँ सो मालति लेइ चलु, जाऊँ’
लेइ सो आइ पदमावति पासा । पानि पियावा मरत पियासा
कँवल जो बिहँसि सूर-मुख दरसा । सूरज कँवल दिस्टि सैं परसा
देखा दरस, भए एक पासा । वह ओहिके, वह ओहिके आसा
पायँ परी धनि पीउ के नैनन्ह सैं रज मेट ।

अचरज भयउ सबन्ह कहैं भइ ससि कँवलहिँ भेंट ॥ ४४ ॥

लछ्मिमी सैं पदमावति कहा । ‘तुम्ह प्रसाद पाइउँ जो चहा
जौ सब खोइ जाहिँ हम दोऊ । जो देखै भल कहै न कोऊ
जे सब कुँवर आण हम साथी । औ जत हस्ति, घोड़ औ आथी
मौ पावैं, सुख जीवन भोगू । नाहिँ त मरन, भरन दुख रोगू’
तब लछ्मिमी गई पिता के ठाऊँ । जो एहिकर सब बूड़ सो पाऊँ’
तब सो जरी अमृत लेइ आवा । जो मरे हुत तिन्ह छिरिकि जियावा
एक एक कै दीन्ह सो आनी । भा सँतोष मन राजा रानी
आइ मिले सब साथी हिलि मिलि करहिँ अनंद ।

भई प्राप्त सुख-संपति गयउ छूटि दुख-द्वंद्व ॥ ४५ ॥

दिन दस रहे तहाँ पहुनाई । पुनि भए बिदा समुद सैं जाई
लछ्मिमी पदमावति सैं भेंटी । औ तेहि कहा ‘मोरि तू बेटी’

दीन्ह समुद्र पान कर बीरा । भरि कै रतन पदारथ हीरा
और पाँच नग दीन्ह बिसेखे । सरवन सुना, नैन नहि देखे
एक तौ अमृत, दूसर हंसू । औ तीसर पंखी कर बंसू
चौथ दीन्ह सावक-सादूरू । पाँचवँ परस, जो कंचन-मूरू
तरुन तुरंगम आनि चढ़ाए । जल-मानुष अगुवा सँग लाए ।

जोरि कटक पुनि राजा घर कहँ कीन्ह पयान ।

दिवसहि भानु अलोप भा बासुकि इंद्र सकान ॥ ४६ ॥

चितउर आइ नियर भा राजा । बहुरा जीति, इंद्र अस गाजा
बाजन बाजहिं, होइ अंदोरा । आवहिं बहल हस्ति औ घोरा
नागमती कहँ अगम जनावा । गइ तपनि बरषा जनु आवा
रही जो मुइ नागिनि जस तुचा । जिउ पाएँ तन कै भइ सुचा
सब दुख जस केंचुरि गा छूटी । होइ निसरी जनु बीरबहूटी
हुलसि गंग जिमि बाढ़िहि लेई । जोबन लाग हिलोरें देई
काम-धनुक सर लेइ भइ ठाढ़ी । भागेउ बिरह रहा जो डाढ़ी

पूछहिं सखी सहेलरी हिरदय देखि अनंद ।

‘आजु बदन तोर नीरमल अहै उवा जस चंद’ ॥ ४७ ॥

‘अब लगि रहा पवन, सखि, ताता । आजु लाग मोहिं सीअर गाता
महि हुलसै जस पावस-छाहीं । तस उपना हुलास मन माहीं
अब जोबन गंगा होइ बाढ़ा । औटन कठिन मारि सब काढ़ा
हरियर सब देखौ संसारा । नए चार जनु भा अवतारा’
सुनि तेहि खन राजा कर नाऊँ । भा हुलास सब ठावहिं ठाऊँ

पलटा जनु बरषा-रितु राजा । जस असाढ़ आवै दर साजा
देखि सो छत्र भई जग छाहाँ । हस्ति-मेघ ओनए जग माहाँ
होइ असवार जो प्रथमै मिलै चले सब भाइ ।

नदी अठारह गंडा मिलीं समुद कहँ जाइ ॥ ४८ ॥

बाजत गाजत राजा आवा । नगर चहुँ दिसि बाज बधावा
विहँसि आइ माता सौँ मिला । राम जाइ भेंटी कौसिला
साजे मंदिर बंदनवारा । होइ लाग बहु मंगलचारा
पदमावति कर आव बेवानू । नागमती जिउ महँ भा आनू
जनहुँ छाँह महँ धूप देखाई । तैसइ भार लागि जौ आइ
मही न जाइ सवति कै भारा । दुसरे मंदिर दीन्ह उतारा
भई उहाँ चहुँ खंड बखानी । रतनसेन पदमावति आनी
पुहुप गंध संसार महँ रूप बखानि न जाइ ।

हेम सेत जनु उघरि गा जगत पात फहराइ ॥ ४९ ॥

बैठ सिंघासन, लोग जोहारा । निधनी निरगुन दरब बोहारा
अगनित दान निछावरि कीन्हा । मँगतन्ह दान बहुत कै दीन्हा
सब कै दसा फिरी पुनि दुनी । दान-डाँग सबही जग सुनी
सब दिन राजा दान दिआवा । भइ निसि, नागमती पहुँ आवा
नागमती मुख फेरि बईठी । सौह न करै पुरुष सौँ दीठी
ग्रीषम जरत छाँड़ि जो जाई । सो मुख कौन देखावै आई ?
‘तू जोगी होइगा बैरागी । हौं जरि छार भइउँ तोहि लागी
काह हँसौ तुम मोसौ किएउ और सौँ नेह ।

तुम्ह मुख चमकै बीजुरी मोहिं मुख बरिसै मेह’ ॥ ५० ॥

‘नागमती तू पहिलि बियाही । कठिन प्रीति दाहै जस दाही
बहुतै दिनन आव जो पीऊ । धनि न मिलै धनि पाहन जीऊ
पाहन लोह पोढ़ जग दोऊ । तेउ मिलहिं जौ होइ बिछोऊ
कोइ केहु पास आस कै हेरा । धनि ओहि दरस निरास न फेरा’
कंठ लाइ कै नारि मनाई । जरी जो बेलि सींचि पलुहाई
जौ भा मेर भयउ रँग राता । नागमती हँसि पूछी बाता
‘कहहु, कंत, ओहि देस लोभाने । कस धनि मिली, भोग कस माने
काह कहौ हौ तोसौ किछु न हिये तोहि भाव ।

इहाँ बात मुख मोसौ उहाँ जीउ ओहि ठाँव’ ॥ ५१ ॥

कहि दुख-कथा जौ रैन बिहानी । भयउ भोर जहँ पदमिनि रानी
भानु देखि ससि-बदन मलीना । कँवल नैन राते, तनु खीना
रैन नखत गनि कीन्ह बिहानू । बिकल भई देखा जब भानू
सूर हँसै, ससि रोइ डफारा । टूट आँसु जनु नखतन्ह-मारा
रहै न राखी होइ निसाँसी । ‘तहँवाँ जाहु जहाँ निसि बासी
हौ कै नेह कुआँ महुँ मेली । सींचै लाग भुरानी बेली
नैन रहै होइ रहट क घरी । भरी ते ढारी, छूँछी भरी
सुभर भरोवर हंस चल घटतहि गए बिछोइ ।

कँवल न प्रीतम परिहरै सूखि पंक बरु होइ’ ॥ ५२ ॥

‘पदमावति तुई जौ पराना । जिउ ते जगत पियार न आना
तुई जिमि कँवल बसी हिय माहाँ । हौ होइ अलि बेधा तोहि पाहाँ
मालति-कली भँवर जौ पावा । सो तजि आन फूल कित भावा ?
भैं हौ सिघल कै पदमिनी । सरि न पूज जंबू-नागिनी

हौं सुगंध निरमल उजियारी । वह विष-भरी डेरादनि कारी
मोरी बास भँवर संग लागहि । ओहि देखत मानुष डरि भागहि
हौं पुरुषन्ह कै चितवन दीठी । जेहि के जिउ अस अहौं पईठी
ऊँचे ठावैं जो बैठै करै न नीचहि संग ।

जहाँ सो नागिन हिरकै करिया करै सो अंग' ॥ ५३ ॥

पलुही नागमती कै बारी । सोने फूल फूलि फुलवारी
जावत पंखि रहे सब दहे । सबै पंखि बोलत गहगहे
सारिउँ सुवा महरि कोकिला । रहसत आइ पपीहा मिला
हारिल सबद, महोख सोहावा । काग कुराहर करि सुख पावा
भोग-विलास कीन्ह कै फेरा । बिहँसहि, रहसहि, करहि वसेरा
नाचहि पंडुक मोर परेवा । विफल न जाइ काहु कै सेवा
होइ उजियार, सूर जस तपै । खूसट मुख न देखावै छपै
संग सहेली नागमति आपनि बारी माहैं ।

फूल चुनहि, फल तूरहि, रहसि कूदि सुख-छाहैं ॥ ५४ ॥

(६) राघव चेतन खंड

राघव चेतन चेतन महा । आऊ सरि राजा पहुँ रहा
 होइ अचेत घरी जौ आई । चेतन कै सब चेत भुलाई
 भा दिन एक अमावस सोई । राजै कहा 'दुइज कब होइ ?'
 राघव के मुख निकसा 'आजू' । पंडितन्ह कहा 'काल्हि, महाराजू'
 राजे दुवौ दिसा फिरि देखा । इन महुँ को बाउर, को सरेखा ?
 भुजा टेकि पंडित तब बोला । 'छाँड़हि देस बचन जौ डोला'
 राघव करै जाखिनी-पूजा । चहै सो भाव देखावै दूजा

राघ पूजि जाखिनी, दुइज देखाएसि साँझ ।

बेद-पंथ जे नहिं चलहिं तें भूलहिं बन माँझ ॥ १ ॥

पंडितन्ह कहा परा नहिं धोखा । कौन अगस्त समुद जेइ सोखा ?
 सो दिन गयउ साँझ भइ दूजी । देखी दुइज घरी वह पूजी
 पंडितन्ह राजहि दीन्ह असीसा । 'अब कस यह कंचन औ सीसा
 जौ यह दुइज काल्हि कै होती । आजु तेज देखत ससि-जोती
 राघव दिस्टिबंध कलिह खेला । सभा माँझ चेटक अस मेला
 एहि कर गुरु चमारिनि लौना । सिखा कँवरू पाढ़न टोना
 दुइज अमावस कहँ जो देखावै । एक दिन राहु चाँद कहँ लावै

राज-बार अस गुनी न चाहिय जेहि टोना कै खोज ।

एहि चेटक औ विद्या छला सो राजा भोज' ॥ २ ॥

राघव-बैन जो कंचन रेखा । कसे बानि पीतर अस देखा
 अग्या भई, रिसान नरेसू । 'मारहु नाहिं, निसारहु देसू'
 झूठ बोल थिर रहै न राँचा । पंडित सोइ बेद-मत-साँचा
 एहि रे बात पदमावति सुनी । देस निसारा राघव गुनी
 व्यान-दिष्टि धनि अगम बिचारा । भल न कोन्ह अस गुनी निसारा
 रानी राघव बेगि हँकारा । सूर-गहन भा लेहु उतारा
 बाम्हन जहाँ दच्छिना पावा । सरग जाइ जौ होइ बोलावा
 आवा राघव चेतन धौराहर के पास ।

ऐस न जाना ते हियै बिजुरी बसै अकास ॥ ३ ॥
 पदमावति जो झरोखे आई । निहकलंक ससि दीन्ह दिखाई
 ततखन राघव दीन्ह असीसा । भयउ चकोर चंदमुख दीसा
 पहिरे ससि नखतन्ह कै मारा । धरती सरग भयउ उजियारा
 औ पहिरे कर कंकन-जोरी । नग लागे जेहि महुँ नौ कोरी
 कंकन एक कर काढ़ि पवारा । काढ़त हार टूट औ मारा
 जानहु चाँद टूट लेइ तारा । छुटो अकास काल कै धारा
 जानहु टूटि बीजु भुईं परी । उठा चौधि राघव चित हरी
 परा आई भुईं कंकन जगत भयउ उजियार ।

राघव बिजुरी मारा बिसँभर किछु न सँभार ॥ ४ ॥
 पदमावति हँसि दीन्ह झरोखा । जौ यह गुनी मरै, मोहि दोखा
 सबै सहेली देखै धाईं । 'चेतन चेतु' जगावहि आई
 चेतन परा, न आवै चेतू । सबै कहा 'एहि लाग परेतू
 कोई कहै आहि सनिपातू । कोई कहै कि मिरगी बातू

कोइ कह लाग पवन कर भोला । कैसेहु समझ न चेतन बोला
पुनि उठाइ बैठाएन्हि छाहौं । पूछहि कौन पीर हिय माहौं
दहुँ काहु के दरसन हरा । की ठग धूत भूत तोहि छरा

की तोहि दीन्ह काहु किछु रे डसा तोहि साँप ? ।

कहु सचेत होइ चेतन, देह तोरि कस काँप' ॥ ५ ॥

भएउ चेत, चेतन चित चेता । नैन भरोखे, जीउ सँकेता
पुनि जो बोला मति बुधि खोवा । नैन भरोखा लाए रोवा
बाउर बहिर सीस पै धुना । आपनि कहै, पराइ न सुना
जानहु लाई काहु ठगौरी । खन पुकार, खन बातें बौरी
हैं रे ठगा एहि चितउर माहौं । का सौं कहौं, जाऊँ केहि पाहौं ?
यह राजा सठ बड़ हत्यारा । जेइ राखा अस ठग बटपारा
ना कोइ वरज, न लाग गोहारी । अस एहि नगर होइ बटपारी

दिस्टि दीन्ह ठगलाडू, अलक-फाँस परे गीउ ।

जहाँ भिखारि न बाँचै तहाँ बाँच को जीउ ? ॥ ६ ॥

कित धौराहर आइ भरोखे ? लेइ गइ जीउ दच्छिना धोखे
तेइ हँकारि मोहिं कंकन दीन्हा । दिस्टि जो परी जीउ हरि लीन्हा'
सखिन्ह कहा 'चेतसि बिसँभारा । हिये चेतु जेहि जासि न मारा
जौ कोइ पावै आपन माँगा । ना कोइ मरै, न काहु खँगा
वह पदमावति आहि अनूपा । बरनि न जाइ काहु के रूपा
तुम्ह अस बहुत बिमोहित भए । धुनि धुनि सीस जीउ देइ गए
बहुतन्ह दीन्ह नाइ कै गोवा । उतर देइ नहि, मारै जीवा

कोइ माँगै नहि पावै कोइ माँगै बिनु पाव ।

तू, चेतन, औरहि समुझावै तो कहँ को समुझाव' ॥ ७ ॥

भएउ चेत, चित चेतन चेता । 'बहुरि न आइ सहौ दुख एता
रोवत आइ परे हम जहाँ । रोवत चले, कौन सुख तहाँ ?
जहाँ रहे संसौ जिउ केरा । कौन रहनि ? चलि चलै सबेरा
अब यह भीख तहाँ होइ माँगौ । देइ एत जेहि जन्म न खाँगौ
अस कंकन जौ पावौ दूजा । दारिद हरै, आस मन पूजा
दिल्ली नगर आदि तुरकानू । जहाँ अलाउदीन सुलतानू
सोन ढरै जेहि के टकसारा । बारह बानो चलै दिनारा

कवैल बखानौ जाइ तहँ जहँ अलि अलाउदीन ।

सुनि कै चढ़ै भानु होइ रतन जो होइ मलीन' ॥ ८ ॥

राघव चेतन कीन्ह पयाना । दिल्ली नगर जाइ नियराना
आइ साह के बार पहुँचा । देखा राज जगत पर ऊँचा
बादसाह सब जाना बूझा । सरग पतार हिये महँ सूझा
औ अम ओहिक सिंघासन ऊँचा । सब काहू पर दिम्ति पहुँचा
सब दिन राजकाज सुख-भागी । रैनि फिरै घर घर हाइ जोगी
राव रंक जावत सब जाती । सब कै चाह लेइ दिन-राती
पंथी परदेसी जत आवहि । सब कै चाह दूत पहुँचावहि

एहू बात तहँ पहुँची सदा छत्र सुख-छाहँ ।

बाम्हन एक बार है कंकन जगाऊ बाँह ॥ ९ ॥

मया साह मन सुनत भिखारी । परदेसी को ? पृछु हँकारी
राघव चेतन हुत जो निरासा । ततखन बेगि बोलावा पासा

सीस नाइ कै दीन्ह असीसा । चमकत नग कंकन कर दीसा
अग्या भइ पुनि राघव पाहाँ । 'तू मंगन, कंकन का बाहाँ ?'
राघव फेरि सीस भुईँ धरा । 'जुग जुग राज भानु कै करा
पदमिनि सिंघलदीप क रानी । रतनसेन चितउरगढ़ आनी
जहाँ कँवल ससि सूर न पूजा । केहि सरि देउँ, और को दूजा ?

सोइ रानी संसार-मनि दछिना कंकन दीन्ह ।

अछरी-रूप देखाइ कै जोउ भरोखे लीन्ह' ॥ १ ॥

सुनि कै उतर साहि मन हँसा । जानहु बीजु चमकि परगसा
'कॉच जोग जेहि कंचन पावा । मंगन ताहि सुमेरु चढ़ावा
नावँ भिखारि जीभ मुख बाँची । अबहुँ सँभारि बात कहु साँची
कहँ अस नारि जगत उपराहीं । जेहि के सरिसूरुज ससि नाही ?
जो पदमिनि सो मंदिर मोरे । सातौ दीप जहाँ कर जोरे
सात दीप महुँ चुनि चुनि आनी । सो मोरे सोरह सै रानी
जौ उन्ह कै देखसि एक दासी । देखि लोन होइ लोन बिलासी

चहुँ खंड हौ चक्रवै जस रबि तपै अकास ।

जौ पदमिनि तौ मोरे अछरी तौ कैलास' ॥ ११ ॥

'तुम बड़ राज छत्रपति भारी । अनु बान्हन मैं अहौ भिखारी
सातौ दीप देखि हौ आवा । तब राघव चेतन कहवावा
वह पदमिनि चितउर जो आनी । काया कुंदन द्वादस बानी
कुंदन कनक ताहि नहि बासा । वह सुगंध जस कँवल बिगासा
कुंदन कनक कठोर सो अंगा । वह कोमल, रँग पुहुप सुरंगा

ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि लागा । सोइ मलयागिरि भयउ सभागा
सबै चितेर चित्र कै हारे । ओहिक रूप कोइ लिखै न पारे
सुरुज-किरिन जसि निरमल तेहि तें अधिक सरीर ।

सौह दिस्टि नहिं जाइ करि नैनन्ह आवै नीर ॥ १२ ॥

का धनि कहौ जैसि सुकुमारा । फूल के छुए होइ बेकरारा
पगुरी काढ़िं फूलन सेंती । सोई डासहिं सौर सपेती
फूल समूचै रहै जौ पावा । व्याकुल होइ नींद नहिं आवा'
जौ राघव धनि बरनि सुनाई । सुना साह, गइ मुरछा आई
जनु मूरति वह परगट भई । दरस देखाइ मोहि छपि गई
जो जो मंदिर पदमिनि लेखी । सुना जौ कँवल कुमुद अस देखी
तब कह अलाउदीं जग-सुरू । 'लेउँ नारि चितउर कै चुरू
जौ वह पदमिनि मानसर अलि न मलिन होइ जात ।

चितउर महीं जो पदमिनी फेरि उहै कहु बात' ॥ १३ ॥
'ए जगसूर' कहौ तुम्ह पाहीं । और पाँच नग चितउर माहीं
एक हंस है पंखि अमोला । मोती चुनै, पदारथ बोला
दूसर नग जो अमृत बसा । सो बिष हरै नाग कर डसा
तीसर पाहन परस पखाना । लोह छुए होइ कंचन-बाना
चौथ अहै सादूर अहेरी । जो बन हस्ति धरै सब घेरी
पाँचवें नग सो तहाँ लागना । राजपंखि पेखा गरजना
हरिन रोऊ कोइ भागिन बाँचा । देखत उड़ै सचान होइ नाचा
नग अमोल अस पाँचौ भेंट समुद ओहि दीन्ह ।

इसकंदर जो न पावा सो सायर धँसि लीन्ह' ॥ १४ ॥

पान दीन्ह राघव पहिरावा । दस गज हस्ति घोड़ सो पावा
 औ दूसर कंकन कै जोरी । रतन लागि ओहि बत्तिस कोरी
 लाख दिनार देवाई जेवा । दारिद हरा समुद कै सेवा
 हौ जेहि दिवस पदमिनी पावौ । तोहि राघव, चितउर बैठावौ
 पहिले करि पाँचौ नग मूठी । सो नग लेउँ जो कनक-अँगूठी
 सरजा वीर पुरुष बरियारू । ताजन नाग, सिंह असवारू
 दीन्ह पत्र लिखि, बेगि चलावा । चितउर-गढ़ राजा पहुँ आवा
 राजै पत्रि बैचावा, लिखी जां करा अनेग ।

सिंघल के जो पदमिनी पठै देहु तेहि बेग ॥ १५ ॥
 सुनि अस लिखा उठा जरि राजा । जानौ दैउ तड़पि घन गाजा
 'का मोहि सिंह देखावसि आई । कहौ तौ सारदूल धरि खाई
 भलेहि साह पुहुमीपति भारी । माँग न कोइ पुरुष कै नारी
 जो सो चक्कवै ताकहँ राजू । मँदिर एक कहँ आपन साजू'
 'राजा, अस न होहु रिस-राता । सुनु होइ जूड़, न जरि कहु बाता
 वादसाह कहँ ऐस न बोल्ख । चढ़ै तौ परै जगत महँ डोल्ख
 सूरहि चढ़त न लागहि बारा । तपै आगि जेहि सरग पतारा
 तासौ कौन लड़ाई ? बैठहु चितउर, खास ।

ऊपर लेहु चँदेरी, का पदमिनि एक दासि' ? ॥ १६ ॥
 'जौ पै धरनि जाइ घर केरी । का चितउर, का राज चँदेरी ?
 जिउ न लेइ घर कारन कोई । सो घर देख जो जोगी होई
 हौ रनर्थभउर-नाह हमीरू । कलपि माथ जेइ दीन्ह सरीरू
 हौ सो रतनसेन सक-बंधी । राहु बेधि जीता सैरंधी

हनुवँत सरिस भार जेइ कँधा । राघव सरिस समुद जो बाँधा
विक्रम सरिस कीन्ह जेइ साका । सिंगलदीप लीन्ह जौ ताका
जौ असलिखा भएउँ नहि ओछा । जियत सिंग कै गह को मोछा ?

दरब लेइ तौ मानौ सेव करौ गहि पाउ ।

चाहै जौ सो पदमिनो सिंगलदीपहि जाउ' ॥ १७ ॥

‘बोलु न, राजा, आपु जनाई । लीन्ह देवगिरि आर छिताइ
सातौ दीप राज सिर नावहि । औ संग चलो पदमिनो आवहि
जेहि कै सेव करै संसारा । सिंगलदीप लेत कित बारा ?
जिनि जानसि यह गढ़ तोहि पाहीं । ताकर सबै, तोर किछु नाहीं
सेवा करु जौ जियन तोहि, भाई ! नाहि त फेरि माख होइ जाई’
‘तुरुक, जाइ कहूँ मरै न धाई । होइहि इसकंदर कै नाई
औ तेहि दीप पतँग होइ परा । अगिनि-पहार पाँव देइ जरा

महूँ समुझि अस अगमना सजि राखा गढ़ साजु ।

काल्हि होइ जेहि आवन सो चलि आवै आजु’ ॥ १८ ॥

सरजा पलटि साह पहँ आवा । ‘देव न मानै बहुत मनाव
आगि जो जरै आगि पै सूझा । जरत रहै, न बुझाए बूझा’
सुनि कै अस राता सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानू
‘हिंदू देव काह बर खाँचा ? सरगहु अब न सूर सौ बाँचा
लिखा पत्र चारिहु दिसि धाए । जावत हमरा बेगि बोलाए
दुंद धाव भा, इंट सकाना । डोला मेरु, सेस अकुलाना
चितउर सौह बारिगह तानी । जहँ लगि सुना कूब सुलतानी

हस्ति घोड़ औ दर पुरुष जावत बेसरा ऊँट ।

जहँ तहँ लीन्ह पलानै कटक सरह अस छूट ॥ १९ ॥

चले पंथ पैगह सुलतानी । तीख तुरंग बाँक कनकानी
लोहसार हस्ती पहिराए । मेघ साम जनु गरजत आए
चले जो उमरा मीर बखाने । का बरनौ जस उन्हकर बाने
धनि सुलतान जेहिक संसारा । उहै कटक अस जोरै पारा
लाखन मोर बहादुर जंगी । जँबुर, कमानें, तीर खदंगी
बरन बरन औ पाँतिहि पाँती । चली सो सेना भाँतिहि भाँती
बेहर बेहर सब कै बोली । विधि यह खानि कहाँ दहुँ खोली ?

सात सात जोजन कर एक दिन होइ पयान ।

अगिलहि जहाँ पयान होइ पछिलहि तहाँ मिलान ॥ २० ॥

डोले गढ़, गढ़पति सब काँपे । जोउ न पेट, हाथ हिय चाँपे
दूतन्ह आइ कहा जहँ राजा । चढ़ा तुरुक आवै दर साजा
सुनि राजा दौराई पाती । हिंदू-नावँ जहाँ लगि जाती
चितउर हिंदुन कर अस्थाना । सत्रु तुरुक हठि कीन्ह पयाना
आव समुद्र रहै नहि बाँधा । मै होइ मेड़ भार सिर काँधा
पुरवहु साथ, तुम्हारि बड़ाई । नहि त सत को पार छँड़ाई ?
जौ लहि मेड़ रहै सुख-साखा । दूटे बारि जाइ, नहि राखा
सती जौ जिउ महँ सत धरै जरै न छाँड़ै साथ ।

जहँ बीरा तहँ चून है पान, सोपारी, काथ' ॥ २१ ॥

करत जो राय साह कै सेवा । तिन्ह कहँ आइ सुनाव परेवा
सब होइ एकगते जो सिधारे । बादसाह कहँ आइ जोहारे

‘हे चितउर हिंदुन्ह कै माता । गढ़ परे तजि जाइ न नाता
 रतनसेन तहँ जौहर साजा । हिंदुन्ह मौँफ आहि बड़ राजा
 हिंदुन्ह केर पतँग कै लेखा । दौरि परहि अगिनी जहँ देखः
 कृपा करहु चित बाँधहु धीरा । नाहि त हमहिं देहु हँसि बीरा
 पुनि हम जाइ मरहि ओहि ठाऊँ । मेटि न जाइ लाज सौं नाऊँ’

दीन्ह साह हँसि बीरा और तीन दिन बीचु ।

तिन्ह सीतल को राखै जिनहि अगिनि मेंह मीचु ? ॥२१॥

रतनसेन चितउर महेँ साजा । ओइ बजाइ बैठ सब राजा
 सजि संग्राम बाँध सब साका । छाँड़ा जियन, मरन सब ताका
 गढ़ तस सजा जो चाहै कोई । बरिस बीस लगि खाँग न होई
 बाँके चाहि बाँक गढ़ कीन्हा । औ सब कोट चित्र कै लीन्हा
 बैठे धानुक कँगुरन कँगुरा । भूमि न आँटी अँगुरन अँगुरा
 औ बाँधे गढ़ गज मतवारे । फाटै भूमि होहि जौ ठारे
 बिच बिच बुर्ज बने चहुँ फेरी । बाजहि तबल, ढोल औ भेरी

भा गढ़ राज सुमेरु जस सरग छुबै पै चाह ।

समुद्र न लेखे लावै गंग सहसमुख काह ? ॥२३॥

बादसाह हटि कीन्ह पयाना । इंद्र-भैंडार डोल, भय माना
 होत पयान कटक सो आवा । आइ साह चितउर नियरावा
 राजा राव देखि सब चढ़ा । आव कटक सब लोहे-मढ़ा
 चहुँ दिसि दिस्टि पग गजजूहा । साम-घटा मेघन्ह अस रुढ़ा
 चढ़ि धीराहर देखहि रानी । धनि तुई अस जाकर सुलतानी

की धनि रतनसेन तुई राजा । जा कहैं तुरुक कटक अस साजा
बैरख ढाल केरि परछाही । रैनि होति आवै दिन माहीं
अंधकूप भा आवै उड़त आव तस छार ।

ताल तलावा पोखर धूरि भरी जेवनार ॥ २४ ॥

राजै कहा 'करहु जो करना । भएउ असूझ, सूझ अब मरना'
जहैं लगि राज साज सब होऊ । ततखन भएउ संजोउ सँजोऊ
बाजे तबल अकूत जुभाऊ । चढ़े कोपि सब राजा राऊ
असु-दल गज-दल दूनौ साजे । औ घन तबल जुभाऊ बाजे
माथे मुकुट, छत्र सिर साजा । चढ़ा बजाइ इंद्र अस राजा
आगे रथ सेना सब ठाढ़ी । पाछे धुजा मरन कै काढ़ी
चढ़ा बजाइ चढ़ा जस इंदू । देवलोक गोहने भए हिंदू
देखि अनी राजा कै जग होइ गएउ असूझ ।

दहुँ कस होवै चाहै चाँद सूर के जूझ ॥ २५ ॥

इहाँ राज अस सेन बनाई । उहाँ साह कै भई अवाई
अगिले दौरे आगे आए । पछिले पाछ कोस दस छाप
साह आइ चितउरगढ़ बाजा । हस्ती सहस बीस सँग साजा
ओनइ आये दूनौ दल साजे । हिंदू तुरुक दुवौ रन गाजे
दुवौ समुद दधि उदधि अपारा । दूनौ मेरु खिखिद पहारा
भा संग्राम न भा अस काऊ । लोहे दुहुँ दिसि भए अगाऊ
सीस कंध कटि कटि भुईं परे । रुहिर सलिल होइ सायर भरे
काहू साथ न तन गा सकति मुए सब पोखि ।

ओछ पूर तेहि जानब जो थिर आवत जोखि ॥ २६ ॥

अथवा दिवस, सूर भा बासा । परी रैन, ससि उवा अकासा
 चौंद छत्र देइ बैठा आई । चहुँ दिसि नखत दाँन्ह छिटकाई
 नखत अकासहि चढ़े दिपाहीं । टुटि टुटि लूक परहि, न बुझाहीं
 परहि सिला जस परै बजागी । पाहन पाहन सौ उठि आगी
 गोला परहि, कोल्हु ढरकाहीं । चूर करत चारिउ दिसि जाहीं
 ओनई घटा बरस भरि लाई । ओला टपकहि, परहि बिछाई
 तुरुक न मुख फेरहि गढ़ लागे । एक मरै, दूसर होइ आगे

परहि बान राजा के सकै कं सनमुख काढ़ि ?

ओनई सेन साह कै रही भोर लागि ठाढ़ि ॥ २७ ॥

भयउ बिहानु, भानु पुनि चढ़ा । सहसहु करा दिवस बिधि गढ़ा
 भा धावा, गढ़ कीन्ह गरेरा । कोपा कटक लाग चहुँ फेरा
 छेंका कोट जोर अस कीन्हा । घुसिकै सरग सुरंग तिन्ह दीन्हा
 गरगज बाँधि कमानें धरीं । बअ-आगि मुख दारु भरीं
 अष्ट धातु के गोला छूटहि । गिरहि पहार चून होइ फूटहि
 एक बार सब छूटहि गोला । गरजै गगन, धरति सब डोला
 फूटहि कोट फूट जुनु सोसा । ओदरहि बुरुज जाहि सब पोसा
 लंका-रावट जस भई दाह परी गढ़ सोइ ।

रावन लिखा जरै कहँ कहहु अजर किमि होइ ॥ २८ ॥

राजगीर लागे गढ़ थबई । फूटै जहाँ सँवारहि सबई
 सौ सौ मन के बरिसहि गोला । बरिसहि तुपक तीर जस ओला
 जानहुँ परहि सरग हुत गाजा । फाटै धरति आइ जहँ बाजा
 सबै कहा अब परलै आई । धरती सरग जूझ जुनु लाई

तबहूँ राजा हिये न हारा । राज-पौरि पर रचा अखारा
सौह साह कै बैठक जहाँ । समुहें नाच करावै तहाँ
तंत बितंत सुभर घन-तागा । बाजहिं सबद होइ भनकारा

जग-सिगार मनमोहन पातुर नाचहिं पाँच ।

बादसाह गढ़ छेंका राजा भूला नाच ॥ २९ ॥

जहँवाँ सौह साह कै दीठी । पातुरि फिरत दीन्हि तहँ पीठी
देखत साह सिंघासन गूँजा । कब लगि मिरिग चाँद तोहि भूजा
छाँड़हिं बान जाहिं उपराही । का तैं गरब करसि इतराही ?
बोलत बान लाख भए ऊँचे । कोइ कोट, कोइ पौरि पहुँचे
जहाँगीर कनउज कर राजा । ओहि क बान पातुरि के बाजा
लागा बान, जाँघ तस नाचा । जिउ गा सरग, परा भुँइ साँचा
उड़सा नाच, नचनिया मारा । रहसे तुरुक बजाइ कै तारा

जो गढ़ साजै लाख दस कोटि उठावै कोट ।

बादसाह जब चाहै छपै न कौनिउ ओट ॥ ३० ॥

आठ बरिस गढ़ छेंका रहा । धनि सुलनान कि राजा महा
आइ साह अंबराव जो लाए । फरे भरे पै गढ़ नहिं पाए
जौ तोरों तौ जौहर होई । पदमिनि हाथ चढ़ै नहिं सोई
एहि बिधिढील दीन्ह, तब ताई । दिली तैं अरदासैं आई
पछिउँ हरेव दीन्ह जो पीठी । सो अब चढ़ा सौह कै दीठी
जिन्ह भुईँ माथ, गगन तेइ लागा । थाने उठे, आव सब भागा
उहाँ साह चितउरगढ़ छावा । इहाँ देस अब होइ परावा

जिन्ह जिन्ह पंथ न तून परत बाढ़े बेर बबूर ।

निसि अंधियारी जाइ तब वेगि उठै जौ सूर ॥ ३१ ॥

सुना साह अरदासै पढ़ी । चिंता आन आनि चित चढ़ी
गढ़ सौ अरुमि जाइ तब छूटै । होइ मेराव, कि सो गढ़ दूटै
पाहन कर रिपु पाहन हीरा । बेधौ रतन पान देइ बीरा
सरजा सेंती कहा यह भेऊ । पलटि जाहु अब मानहु सेऊ
कहु तोहि सौ पदमिनि नहि लेऊ । चूरा कीन्ह छाँड़ि गढ़ देऊ
सरजा पलटि सिघ चढ़ि गाजा । अग्या जाइ कही जहँ राजा
'अबहूँ दिये समुझ, रे राजा । बादसाह सौ जुम न छाजा
हैं जो पाँच नग तो पहुँ लेइ पाँचौ कह भेंट ।

मकु सो एक गुन मानै सब ऐगुन धरि भेट' ॥ ३२ ॥

'अनु सरजा को भेटै पारा । बादसाह बड़ अहै तुम्हारा
ऐगुन भेटि सकै पुनि सोई । औ जो कीन्ह चहै सो होई
नग पाँचौ देइ देऊँ भंडारो । इसकंदर सौ बाँचै दारा
जौ यह वचन त माथे मोरे । सेवा करौ ठाढ़ कर जारे
पै बिनु सपथ न अस मन माना । सपथ बोल बाचा-परवाँना
खंभ जो गरुअ लीन्ह जग भारू । तेहि क बोल नहि टरै पहारू'
'नाव जो माँझ भार हूँत गीवा' । सरजै कहा 'मंद वह जीवा'
सरजै सपथ कीन्ह छल बैनहि मीठै मीठ ।

राजा कर मन माना, माना तुरत बसीठ ॥ ३३ ॥

हंस कनक-पीजर हूँत आना । औ अमृत, नग परस-पखाना
औ सोनहार सोन कै डाँड़ो । सारदूल रूपै कै काँड़ी

सां बसीठ सरजा लेइ आवा । बादसाह कहँ आनि मेरावा
 'काल्हि आव गढ़ ऊपर भानू । जो रे धनुक, सौहि होइ वानू'
 पान बसीठ मया करि पावा । लीन्ह पान, राजा पहुँ आवा
 'जस हम भेंट कीन्ह गा कोहू । सेवा माँझ प्रीति औ छोहू
 काल्हि साह गढ़ देखै आवा । सेवा करहु जैस मन भावा'

भा आयसु अस राजघर बेगि दै करहु रसोइ ।
 ऐस सुरस रस मेरवहु जेहि सौ प्रीति-रस होइ ॥ ३४ ॥

जत परकार रसोइ बखानी । साह जिंवावहि कहँ सब आनी
 जेवौ साह जो भयउ बिहाना । गढ़ देखै गवना सुलताना
 केवल सहाय सूर संग लीन्हा । राघव चेतन आगे कीन्हा
 ततखन आइ बिवाँन पहुँचा । मन तें अधिक, गगन तें ऊँचा
 उघरी पवँरि, चला सुलतानू । जानहु चला गगन कहँ भानू
 आजु पवँरि-मुख भा निरमरा । जौ सुलतान आइ, पग धरा
 जनहुँ उरेह काटि सब काढ़ी । चित्र क मूरति बिनवहि ठाढ़ी

लाखन बैठ पँवरिया जिन्ह तें नवहि करोरि ।

तिन्ह सब पवँरि उघारे ठाढ़ भए कर जोरि ॥ ३५ ॥

सातौ पँवरी कनक-केवारा । सातौ पर बाजहि घरियारा
 सात रंग तिन्ह सातौ पवरी । तब तिन्ह चढै फिरै नौ भँवरी
 खँड खँड साज पलँग औ पीढ़ी । जानहु इंद्रलोक कै सीढ़ी
 कनक-छत्र सिंघासन साजा । पेंठत पँवरि मिला लेइ राजा
 बादसाह चढ़ि चितउर देखा । सब संसार पाँव तर लेखा

रतन पदारथ नग जो बखाने । घूरन्ह माँह देख छहराने
मँदिर मँदिर फुलवारी बारी । बार बार बहु चित्र सँवारी
पाँसा सारि कुँवर सब खेलहिं गीतन्ह स्रवन ओनाहिं ।

चैन चाव तस देखा जनु गढ़ छँका नाहिं ॥ ३६ ॥
देखत साह कीन्ह तहँ फेरा । जहँ मँदिर पदमावति केरा
आस पास सरवर चहुँ पासा । माँझ मँदिर जनु लाग अकासा
कनक सँवारि नगन्ह सब जरा । गगन चंद जगु नखतन्ह भरा
सरवर चहुँ दिसि पुरइन फूली । देखत बारि रहा मन भूली
कुँवरि सहस दस बार अगोरे । दुहुँ दिसि पँवरि ठाढ़ि कर जोरे
सारदूल दुहुँ दिसि गढ़ि काढ़े । गलगाजहिं जानहुँ ते ठाढ़े
जावत कहिए चित्र कटाऊ । तावत पँवरिन्ह बने जड़ाऊ
साह मँदिर अस देखा जनु कैलास अनूप ।

जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप ॥ ३७ ॥
नाँघत पँवरि गए खँड साता । सतएँ भूमि बिछावन राता
आँगन साह ठाढ़ भा आई । मँदिर छाँह अति सीतल पाई
रानी धौराहर उपराहीं । करै दिष्टि नहिं तहाँ तराहीं
सखी सरेखी साथ वईठी । तपै सूर, ससि आव न दीठी
राजा सब करै कर जोरे । आजु साह घर आवा मोरे
नट नाटक, पातुरि औ बाजा । आइ अखाड़ माहँ सब साजा
परगट कह राजा सौ बाता । गुप्त प्रेम पदमावति राता
गीत नाद अस धंधा दहक विरह कै आँच ।

मन कै डोरि लागि तहँ जहँ सो गहि गुन खाँच ॥ ३८ ॥

गोरा बादल राजा पाहौं । रावत दुवौ दुवौ जनु बाहौं
 आइ स्रवन राजा के लागे । मूसि न जाहिं पुरुष जो जागे
 'बाचा परखि तुरुक हम बूझा । परगट मेर, गुपुत छल सूझा
 तुम नहिं करौ तुरुक सौ मेरु । छल पै करहि अंत कै फेरु'
 सुनि राजहि यह बात न भाई । 'जहाँ मेर तहँ नहिं अधमाई
 मंदहि भल जो करै भल सोई । अंतहि भला भले कर होई
 जो छल करै ओहि छल बाजा । जैसे सिध मँजूसा साजा'
 राजै लोन सुनावा लाग दुहुन्ह जस लोन ।

आए कोहाइ मँदिर कहँ सिंह छान अब गोन ॥३९॥
 राजा कै सोरह सै दासी । तिन्ह मँह चुनि कादीं चौरासी
 बरन बरन सारी पहिराई । निकमि मँदिर तें सेवा आई
 जनु निसरीं सब बीरबहूटी । रायमुनी पींजर हूँत छूटीं
 सत्रै परथमै जोबन सोहँ । नयन बान औ सारंग भौहँ
 मारहि धनुक फेरि सर ओही । पनिघट घाट धनुक जिति मोही
 काम-कटाछ हनहिं चित-हरनी । एक एक तें आगरि बरनी
 जानहुँ इंद्रलोक तें कादीं । पाँतिहि पाँति भई सब ठाढ़ी
 साह पूछ राघव पहुँ 'ए सब अछरी आहि ।

तुइ जो पदमिनि बरनी कहु सो कोन इन माहि' ॥४०॥
 'दीरघ आउ, भूमिपति भारी । इन मँह नाहि पदमिनी नारी
 यह फुलवारि सो ओहि कै दासी । कहँ केतकी भँवर जहँ बासी
 वह तौ पदारथ, ए सब मोती । कहँ वह दीप पतँग जेहि जोती
 जौ लागि सूर क दिस्टि अकासू । तौ लागि ससि न करै परगासू'

सुनि कै साह दिस्टि तर नावा । 'हम पाहुन, यह मँदिर परावा
पाहुन ऊपर हेरै नाहीं । हना राहु अर्जुन परछाहीं'
सेव करें दासी चहुँ पासा । अछरी मनहुँ इंद्र कैलासा

पुनि सँधान बहु आनहि परसहि बूकहि बूक ।

करहि सँवार गोसाईं जहाँ परै किछु चूक ॥४१॥

भइ जेवनार फिरा खँड़वानी । फिरा अरगजा कुहँकुहँ-पानी
नग अमोल जो थारहि भरे । राजै सेव आनि कै धरे
बिनती कीन्ह घालि गिउ पागा । 'ए जगसूर, सीउ माहि लागा'
सुनि बिनती विहँसा सुलतानू । सहसौ करा दिपा जस भानू
'ए राजा, तुइ माँच जुड़ावा । भइ सुदिस्टि अब, सीउ छुड़ावा
खाहु देस आपन करि सेवा । और देउँ माँडौ तोहि, देवा'
हँसि हँसि बोलै, टेकै काँधा । प्रीति भुलाइ चहै छल बाँधा

मया-बोल बहुत कै साह पान हँसि दीन्ह ।

पहिले रतन हाथ कै चहै पदारथ लीन्ह ॥४२॥

माया-मोह-बिबस भा राजा । साह खेल सतरँज कर साजा
'राजा, है जौ लगि सिर घामू । हम तुम घरिक करहि बिसरामू'
दरपन साह भीति तहँ लावा । देखौ जबहि झरोखे आवा
खेलहिं दुआँ साह आँ राजा । साह क रुख दरपन रह साजा
सूर देख जौ तरई-दासी । जँह ससि तहाँ जाइ परगासी
'सुना जो हम दिल्ली सुलतानू । देखा आजु तपै जस भानू
ऊँच छत्र जाकर जग माहाँ । जग जो छाँहँ सब ओहि कै छाँहँ

बादसाह दिल्ली कर कित चितउर महँ आव ।

देखि लेहु, पदमावर्ति, जेहि न रहै पछिताव' ॥ ४३ ॥

बिगसै कुमुद कहे ससि ठाऊँ । बिगसै कँवल सुने रवि-नाऊँ
भइ निसि, ससि धौराहर चढ़ी । सोरह कला जैस बिधि गढ़ी
बिहँसि भरखे आइ सरेखी । निरखि साह दरपन महँ देखी
होतहि दरस परस भा लोना । धरती सरग भएउ सब सोना
रुख माँगत रुख ता सहँ भयऊ । भा शह मात, खेल मिटि गयऊ
राजा भेद न जानै भाँपा । भा विसँभार, पवन बिनु काँपा
राघव कहा कि लागि सोपारी । लेइ पौढ़ावहिं सेज सँवारी
रैन बीति गइ भोर भा उठा सूर तब जागि ।

जो देखै ससि नाही रही करा चित लागि ॥ ४४ ॥

राघव चेति साह पहुँ गयऊ । सूरज देखि कँवल बिसमयऊ
देखि एक कौतुक हौ रहा । रहा अंतरपट पै नहि अहा
सरवर देख एक मैं सोई । रहा पानि पे पानि न होई
सरग आइ धरती महँ छावा । रहा धरति पै धरत न आवा
तिन्ह महँ पुनि एक मंदिर ऊँचा । करन्ह अहा पै कर न पहुँचा
तेहि मंडप मूरति मैं देखी । बिनु तन, बिनु जिउ जाइ बिसेखी
पूरन चंद होइ जनु तपी । पारस रूप दरस देइ छपी
बिगसा कँवल सरग निसि जनहुँ लौकि गइ बीजु ।

ओहि राहु भा भानुहिं राघव मनहिं पतीजु ॥ ४५ ॥

अति बिचित्र देखा सो ठाढ़ी । चित कै चित्र, लोन्ह जिउ काढ़ी
सिध-लंक, कुंभस्थल जोरु । आँकुस नाग, महाउत मोरु

तेहि ऊपर भा कँवल बिगासू । फिरि अलि लीन्ह पुहुप-मधु-बासू
 दुइ खंजन बिच बैठेउ सूआ । दुइज क चाँद धनुक लेइ ऊआ
 मिरिग देखाइ गवन फिरि किया । ससि भा नाग, सूर भा दिया
 सुठि ऊँचे देखत वह उचका । दिस्टि पहुँचि, कर पहुँचि न सका
 पहुँच-बिहून दिस्टि कित भई ? गहि न सका, देखत वह गई

राघव, हेरत जिउ गयउ कित आछत जो असाध ?

यह तन राख पाँख कै सकै न केहि अपराध' ॥४६॥

राघव सुनत सीस भुईँ धरा । 'जुग जुग राज भानु कै करा
 उहै कला, वह रूप बिसेखी । निहचै तुम्ह पदमावति देखी
 केहरि लंक, कुँभस्थल हिया । गीउ मयूर; अलक बेधिया
 कँवल बदन औ बास सरीरू । खंजन नयन, नासिका कीरू
 भौह धनुक, ससि-दुइज लिलाटू । सब रानिन्ह ऊपर ओहि पाटू
 सोई मिरिग देखाइ जो गयऊ । बेनी नाग, दिया चित भयऊ
 दरपन महँ देखी परछाहीं । सो मूरति, भीतर जिउ नाही

सबै सिंगार-बनी धनि अब सोई मति कीज ।

अलक जो लटकै अधर पर सो गहि कै रस लीज' ॥४७॥

मीत पै माँगा बेगि त्रिवाँनू । चला सूर, सँवरा अस्थानू
 बहुत मया सुनि राजा फूला । चला साथ पहुँचावै भूला
 साह हेतु राजा सौ बाँधा । बातन्ह लाइ लीन्ह, गहि काँधा
 चाँद क गहन अगाह जनावा । राज भूल गहि साह चलावा
 राजा कहँ बियाध भइ माया । तजि कैलास धरा भुईँ पाया

जेहिकारन गढ़ कीन्ह अगूठी । कित छौंई जौ आवै मूठी ?
चारा मेलि धरा जस माछ । जल हुँत निकसि मुवै कित काछ ?

राजहिं धरा आनि कै तन पहिरावा लोह ।

ऐस लोह सो पहिरै चीत सामि कै दोह ॥ ४८ ॥

पार्येन्ह गाढ़ी बेड़ी परी । साँकर गीउ, हाथ हथकरी
औ धरी बाँधि मँजूषा मेला । ऐस सत्रु जिनि होइ दुहेला !
सुनि चितउर महँ परा बखाना । देस देस चागिउ दिसि जाना
आजु नरायन फिरि जग खँदा । आजु सो सिंघ मँजूषा मूँदा
आजु खसे रावन दस माथा । आजु कान्ह कालीफन नाथा
आजु परान कंस कर ढोला । आजु मीन संखासुर लीला
आजु परे पंडव बैदि माहाँ । आजु दुसासन उतरीं बाहाँ
आजु धरा बलि राजा मेला बाँधि पतार ।

आजु सूर दिन अथवा भा चितउर अंधियार ॥ ४९ ॥

पदमावति बिनु कंत दुहेली । बिनु जल कैवल सूखि जस बेली
गाढ़ी प्रीति सो मोसौ लाए । दिली कंत निचिंत होइ छाए
सो दिली अस निबहुर देसू । कोइ न बहुरा कहै सँदेसू
जो गवनै सो तहाँ कर होई । जो आवै किछु जान न सोई
अगम पंथ पिय तहाँ सिधावा । जो रे गयउ सो बहुरि न आवा
कुवाँ धार जल जैक बिछोवा । डोल भरै नैनन्ह धनि रोवा
'लेजुरि भई नाह बिनु तोहीं । कुवाँ परी, धरि काढ़सि मोहीं'
नैन-डोल भरि ढारै हिये न आगि बुझाई ।

घरी घरी जिउ आवै घरी घरी जिउ जाइ ॥ ५० ॥

पिय बिनु व्याकुल बिलपै नागा । बिरहा-तपनि साम भए कागा
 'पवन पानि कहैं सीतल पीऊ । जेहि देखे पलुहै तन जीऊ
 कहैं सो बास मलयगिरि नाहा । जेहि कल परति देत गल बाहाँ
 पद्मिनि ठगिनि भई कित साथा । जेहि तें रतन परा पर-हाथा
 होइ बसंत आवहु, पिय केसरि । देखे फिर फूलै नागेसरि
 तुम्ह बिनु, नाह, रहै हिय तचा । अब नहिं बिरह-गरुड़ सौं बचा
 अब अँधियार परा, मसि लागी । तुम्ह बिनु कौन बुझावै आगी
 नैन, स्रवन, रस रसना सबै . खीन भए, नाह ।

कौन सो दिन जेहि भेंट कै आइ करै सुख-छाँह' ॥ ५१ ॥

(७) गीरा बादल खंड

कुंभलनेर-राय देवपालू । राजा केर सत्रु हिय-सालू
वह पै सुना कि राजा बाँधा । पाछिल बैर सँवरि छर साँधा
सत्रु-साल तब नेबरै सोई । जौ घर आव सत्रु कै जोई
दूती एक बिरिध तेहि ठाऊँ । बाम्हनि जाति, कुमोदिनि नाऊँ
ओहि हँकारि कै बीरा दीन्हा । 'तोरे बर में बर जित कीन्हा
तुइ जो कुमोदिनि कँवल के नियरे । सरग जो चाँद बसै तोहि हियरे
चितउर महँ जो पदमिनि रानी । कर बर छर सौं दे मोहि आनी

रूप जगत-मन-मोहन औ पदमावति नावँ ।

कोटि दरब तोहि देइहौं आनि करसि एहि ठाँव' ॥१॥

कुमुदिनि कहा 'देखु, हौं सो हौं । मानुष काह, देवता मोहौ'
दूती बहुत पकावन साधे । मोतिलाडू औ खेरौरा बाँधे
लेइ पूरी भरि डाल अछूती । चितउर चली पैज कै दूती
बिरिध बैस जौ बाँधे पाऊ । कहौं सो जोबन, कित बेवसाऊ
तन बूढ़ा, मन बूढ़ न होई । बल न रहा, पै लालच सोई
कहौं सो रूप जगत सब राता । कहँ सो गरब हस्ति जस माता
कहौं सो तीख नयन, तन ठाढ़ा । सबै मारि जोबन-पन फाढ़ा ।

मुहमद बिरिध जो नइ चलै, काह चलै भुइँ टोइ ।

जोबन-रतन हेरान है, मकु धरती महँ होइ ॥ २ ॥

आइ कुमुदिनि चितउर चढ़ी । जोहन मोहन पादत पढ़ी
 पूछि लीन्ह रनिवास बरोठा । पैठी पँवरी भीतर कोठा
 जहाँ पदमिनी ससि उजियारी । लेइ दूती पकवान उतारी
 हाथ पसारि धाइ कै भेंटी । 'चीन्हा नहि, राजा कै बेटी
 हौ बान्हनि जेहिकुमुदिनि नाऊँ । हम तुम उपने एकै ठाऊँ
 नावँ पिता कर दूबे बेनी । सोइ पुरोहित गंधरबसेनो
 तुम बारी तब सिघलदीपा । लीन्हे दूध पियाइउँ सीपा ।

ठाँव कीन्ह मैं दूसर कुंभलनेरै आइ ।

सुनि तुम्ह कहँ चितउर महँ कहिउँ कि भेंटौ जाइ' ॥३॥

सुनि निहचै नैहर कै गोई । गरे लागि पदमावति रोई
 नैन-गगन रवि बिनु अंधियारे । ससि-मुख आँसु दूट जनु तारे
 जग अंधियार गहन दिन परा । कब लगि ससि नखतन्ह निसि भरा
 'माय बाप कित जनमी बारी । गीउ तूरि कित जनम न मारी ?
 कित बियाहि दुख दीन्ह दुहेला । चितउर पंथ कंत बंदि मेला
 अब एहि जियन चाहि भल मरना । भएउ पहार जनम दुख भरना
 निकसि न जाइ निलज यह जीऊ । देखौ मँदिर सून बिनु पीऊ
 कुहुकि जो रोई ससि नखत नैन हैं रात चकोर ।

अबहूँ बोलैं तेहि कुहुक कोकिल चातक मोर' ॥ ४ ॥

कुमुदिनि कंठ लागि सुठि रोई । पुनि लेइ रूप-डार मुख धोई
 'तुइ ससि-रूप जगत उजियारी । मुख न भाँपु निसि होइ अंधियारी
 सुनि चकोर कोकिल दुख दुखी । घुँघची भई नैन करमुखी
 केतौ धाइ मरै कोइ बाटा । सोइ पाव जो लिखा लिलाटा

जो विधि लिखा आन नहि होई । कित धावै, कित रोवै कोई
कित कोउ हीछ करै औ पूजा । जो बिधि लिखा होइ नहि दूजा'
जेतिक कुमुदिनि बैन करेई । तस पदमावति स्रवन न देई

सेंदुर चीर मैल तस सूखि रही जस फूल ।

जेहि सिँगार पिय तजिगा जनम न पहिरै भूल ॥ ५ ॥

तब पकवान उधारा दूती । पदमावति नहि छुवै अछूती
'मोहि अपने पिय केर खभारू । पान फूल कस होइ अहारू ?
मोकहूँ फूल भए सब काँटै । बाँटि देहु जो चाहहु बाँटै
रतन छुवा जिन्ह हाथन्ह सेती । और न छुवौं सो हाथ संकेती
ओहि के रँग भा हाथ मँजीठी । मुकुता लेउँ तौ घुँघची दीठी
नैन करमुहँ, राती काया । मोति होहिं घुँघची जेहि छाया
अस कै ओछ नैन हत्यारे । देखत गा पिउ गहै न पारै

का तोर छुवौं पकावन गुड़ करुवा घिउ रुख ।

जेहि मिलि होत सवाद रस लेइ सो गयउ पिउ भूख' ॥६॥

कुमुदिनि रही कँवल के पासा । बैरी सूर, चाँद कै आसा
घनि कुँभिलानि रही, भइ चूरू । विगसि रैन बातन्ह कर भूरू
'कसतुइ, बारि, रहसि कुँभिलानों । सूख बेलि जस पाव न पानी
अबही कँवल-करी तुइँ बारी । कोवैरि बैस, उठत पौनारी
बेनी तोरि मैलि औ रूखी । सरवर माहँ रहसि कस सूखी ?
पान-बेलि बिधि कया जमाई । सींचत रहै तबहि पलुहाई
करु सिँगार सुख फूल तमोरा । बैछु सिँघासन, भूलु हिंडोरा

हार चीर निति पहिरहु सिर कर करहु सँभार ।

भोग मानि लेहु दिन दस जोवन जात न बार' ॥ ७ ॥

बिहँसि जो जोवन कुमुदिनि कहा । कैवल न बिगसा, संपुट रहा
 'ए कुमुदिनि ! जोवन, तेहि माहाँ । जो आछै पिउ के सूख-छाहाँ
 जा कर छत्र सो बाहर छावा । सो उजार घर कौन बसावा
 अहा न राजा रतन अँजोरा । केहिक सिँघासन, केहिक पटोरा ?
 को पालक पौढ़ै, को माढ़ो ? सोवनहार परा बदिँ गाढ़ी
 चहुँ दिसि यह घर भा अँधियारा । सघ सिँगार लेइ साथ सिधारा
 कथा-बेलि तब जानौ जामी । सींचनहार आव घर स्वामी
 तौ लहि रहौ मुरानी जौ लहि आव सो कंत ।

एहि फूल, एहि सेंदुर नव होइ उठै बसंत' ॥ ८ ॥

जिनि तुइ, बारि, करसि अस जीऊ । जौ लहि जोवन तौ लहि पीऊ
 पुरुष संग आपन केहि केरा । एक कोहाँइ, दुसर सहुँ हेरा
 जोवन-जल दिन दिन जस घटा । भँवर छपान, हंस परगटा
 सुभर सरोवर जौ लहि नीरा । बहु आदर, पंखी बहु तीरा
 नीर घटे पुनि पूछ न कोई । बिरसि जो लीज हाथ रह सोई
 जौ लागि कालिँदि, होहि बिरासी । पुनि सुरसरि होइ समुद परासी
 जोवन भँवर, फूल तन तोरा । बिरिध पहुँचि जस हाथ मरोरा
 कृष्ण जो जोवन कारनै गोपीतन्ह के साथ ।

छरि कै जाइहि बान पै धनुक रहै तोरे हाथ' ॥ ९ ॥

'जौ पिउ रतनसेन मोर राजा । बिनु पिउ जोवन कौने काजा ?
 कुल कर पुरुष-सिंघ जेहि खेरा । तेहि थर कैस सियार बसेरा ?

जोबन-नीर घटे का घटा ? सत्त के बर जौ नहिं हिय फटा'
 'जोबन बिना बिरिध होइ नाऊँ । बिनु जोबन थाकै सब ठाऊँ
 जोबन हेरत मिलै न हेरा । सो जौ जाइ, करै नहिं फेरा
 सेंवर-सेव न चित करु सूआ । पुनि पछितासि अंत जब भूआ
 रूप तोर जग ऊपर लोना । यह जोबन पाहुन चल होना

उठत कोप जस तरिवर तस जोबन तोहि रात ।

तौ लहि रंग लेहु रचि पुनि सो पियर होइ पात' ॥ १० ॥

कुमुदिनि-बैन सुनत हिय जरी । पदमिनि उरहि आगि जनु परी
 रँग ताकर हौं जारौं काँचा । आपन तजि जो पराएहि राँचा
 दूसर करै जाइ दुइ बाटा । राजा दुइ न होहिं एक पाटा
 जेहि के जीउ प्रीति दिढ़ होई । सुख सोहाग सौं बैठे सोई
 जोबन जाउ, जाउ सो भँवरा । पिय कै प्रीति न जाइ, जो सँवरा
 एहि जग जौ पिउ करहिं न फेरा । ओहि जग मिलहिं जो दिन दिन हेरा
 जोबन मोर रतन जहँ पीऊ । बलि तेहि पिउ पर जोबन जीऊ

भरथरि बिछुरि पिंगला आहि करत जिउ दीन्ह ।

हौं पापिनि जो जियति हौं इहै दोष हम कीन्ह' ॥ ११ ॥

'पदमावति, सो कौनि रसोई । जेहि परकार न दूसर होई
 रस दूसर जेहि जीभ बईठा । सो जानै रस खाटा मीठा
 भँवर बास बहु फूलन्ह लेई । फूल बास बहु भँवरन्ह देई
 दूसर पुरुष न रस तुइ पावा । तिन्ह जाना जिन्ह लीन्ह परावा
 एक चुल्लू रस भरै न हीया । जौ लहि नहिं फिर दूसर पीया

तोर जोबन जस समुद हिलोरा । देखि देखि जिउ बूढ़ मोरा
रंग और नहिं पाइय बैसे । जरे मरे बिनु पाउव कैसे ?

देखि धनुक तोर नैना मोहिं लाग बिष-वान ।

बिहँसि कैवल जो मानै भँवर मिलावौ आन' ॥ १२ ॥

‘कुमुदिनि, तुइ बैरिनि, नहिं धाई । तुइ मसि बोलि चढ़ावसि आई
निरमल जगत नीर कर नामा । जौ मसि परै होइ सो सामा
जहँवाँ धरम पाप नहिं दीसा । कनक सोहाग मोंफ जस सीसा
जो मसि परे होइ ससि कारी । सो हँसि लाइ देसि मोहिं गारी
कापर महँ न छूट मसि-अंकू । सो मसि लेइ मोहिं देसि कलंकू
साम भँवर मोर सूरुज-करा । और जो भँवर साम मसि-भरा
कैवल भँवर-रबि देखै आँखी । चंदन-बास न बैठै माखी

साम समुद मोर निरमल रतनसेन जगसेन ।

दूसर सरि जो कहावै सो बिलाइ जस फेन' ॥ १३ ॥

‘पदमिनि, पुनि मसि बोलन बैना । सो मसि देखु दुहू तोरे नैना
मसि सिंगार, काजर सब बोला । मसि क बुंद तिल सोह कपोला
लोना सोइ जहाँ मसि-रेखा । मसि पुतरिन्ह तिन्ह सौं जग देखा
जो मसि घालि नयन दुहू लोन्ही । सो मसि फेरि जाइ नहिं कीन्ही
मसि-मुद्रा दुइ कुच उपराहीं । मसि भँवरा जे कैवल भँवाहीं
मसि केसहि, मसि भौह उरेही । मसि बिनु दसन सोह नहिं देही
सो कस सेत जहाँ मसि नाही ? सो कस पिंड न जेहि परछाहीं ?

अस देवपाल राय मसि छत्र धरा सिर फेर ।

चिततउर राज बिसरिगा गयउ जो कुंभलनेर' ॥ १४ ॥

सुनि देवपाल जो कुंभलनेरी । पंकज-नैन भौह-धनु फेरी
 'मनु मोरे पिउ कर देवपाल् । सो कित पूज सिंघ सरि भाल् ?
 दुःख भरा तन जेत न केसा । तेहि का सँदेस सुनावसि, बेसा ?
 सोन नदी अस मोर पिउ गरुवा । पाहन होइ परै जौ हरुवा
 जेहि ऊपर अस गरुवा पीऊ । सो कस डोलाए डोलै जीऊ'
 फेरत नैन चेरि सौ छूटीं । भइ कूटन कुटनी तस कूटीं
 नाक-कान काटेन्हि, मसि लाई । मूँड़ मूँड़ि कै गदह चढ़ाई
 मुहमद बिधि जेहि गरु गढ़ा का कोई तेहि फूँक ।

जेहि के भार जग थिर रहा उड़ै न पवन के भूँक ॥ १५ ॥
 काढ़ि कुमुदनिहि धीरज धारा । गइ गोरा बादल के बारा
 चरन, कवल भुइँ जनम न धरे । जात तहाँ लगि छाला परे
 निसरि आए छत्री सुनि दोऊ । तस काँपे जस काँप न कोऊ
 केस छोरि चरनन्ह-रज भारा । 'कहाँ पावँ पदमावति धारा ?'
 राखा आनि पाट सोनवानी । बिरह-बियोगिनि बैठी रानी
 दोउ ठाढ़ होइ चँवर डोलावहिं । 'माथे छात, रजायसु पावहिं
 उलटि बहा गङ्गा कर पानी । सेवक-बार आइ जो रानी
 का अस कस्ट कीन्ह तुम्ह जो तुम्ह करत न छाज ।

अग्या होइ बेगि सो जीउ तुम्हारे काज' ॥ १६ ॥
 कही रोइ पदमावति बाता । नैनन्ह रक्त दीख जग राता
 'तुम गोरा बादल खँभ दोऊ । जस रन पारथ और न कोऊ
 दुख बरखा अब रहै न राखा । मूल पतार, सरग भइ राखा
 तेहि दुख लेत बिरिछ बन बाढ़े । सीस उघारे रोवहिं ठाढ़े

पुहुमि पूरि, सायर दुख पाटा । कौड़ी केर बेहरि हिय फाटा
बेहरा हिये खजूर क बिया । बेहर नाहि मोर पाहन-हिया
पियजेहि बैदि जोगनिहोइ धावौ । हौ बैदि लेउ, पियहि मुकरावौ

सूरुज गहन-गरासा कँवल न बैठै पाट ।

महँ पथ तेहि गवनब कंत गए जेहि बाट' ॥ १७ ॥

गोरा वादल दोउ पसीजे । रोवत रुहिर बूड़ि तन भीजे
'हम राजा सों इहै कोहाँने । तुम न मिलौ, धरिहै तुरकाने
जो मति सुनि हम गए कोहाँई । सों निआन हम्ह माथे आई
जौ लगिजिउ, नहि भागहि दोऊ । स्वामि जियत कत जोगनि होऊ
उए अगस्त हस्ति जव गाजा । नीर घटे घर आईहि राजा
बरपा गए, अगस्त जो दीठिहि । परिहि पलानि तुरंगम पोठाह
बेघौ राहु, छोड़ावहु सूरु । रहै न दुख कर मूल अँकूरु

सोइ सूर तुम ससहर आनि मिलावौ सोइ ।

तस दुख महँ सुख उपजै रैनि माहँ दिन होइ' ॥ १८ ॥

लीन्ह पान वादल औ गोरा । 'केहि लेइ देउँ उपम तुम्ह जोरा ?
तुम सावंत, न सरवरि कोऊ । तुम हनुवंत अँगद सम दोऊ
तुम अरजुन औ भीम भुवारा । तुम बल रन दल मंडनहारा
राम लखन तुम दैत-सँघारा । तुमहीं घर बलभद्र भुवारा
तुमहि युधिष्ठिर औ दुरजोधन । तुमहिं नील नल दोउ संबोधन
तुम परदुम्न औ अनिरुध दोऊ । तुम अभिमन्यु बोल सब कोऊ
तुम्ह सरि पूज न बिक्रम साके । तुम हमीर हरिचँद सम आँके

जस अति संकट पंडवन्ह भएउ भौवैं बैदिछोर ।

तस परबस पिउ काढ़हु राखि लेहु भ्रम मोर' ॥ १९ ॥

गोरा बादल बीरा लीन्हा । जस हनुवैंत अंगद वर कीन्हा
'कँवल चरन भुईँ धरि दुख पावहु । चढ़ि सिंवासन मँदिर सिधावहु'
सुनतहि सूर कँवल हिय जागा । केसरि-वरन फूल हिय लागा
जनु निसि महीं दिन दीन्ह देखाई । भा उदात, मसि गई बिलाई
बादल केरि जसोवै माया । आइ गहेसि बादल कर पाया
'बादल राय, मोर तुइ बारा । का जानसि कस होइ जुभारा
बादसाह पुहुमी-पति राजा । सनमुख होइ न हमीरहि छाजा
जहाँ दलपती दलि मरहि तहाँ तोर का काज ?

आजु गवन तोर आवै बैठि मानु सुख राज' ॥ २० ॥

'मातु न जानसि बालक आदी । हौं बादला सिंह रनबादी
सुनि गज-जूह अधिक जिउ तपा । सिंघ क जाति रहै किमि छपा ?
तौ लगि गाज, न गाज सिँघेला । सौह साह सौं जुरौं अकेला
को मोहि सौह होइ मैमंता । फारौं सूँड़, उखारौं दंता
जुरौं स्वामि सँकरे जस ढारा । पेलौं जस दुरजोधन भारा
अंगद कोपि पाँव जस राखा । टेकौं कटक छतीसौ लाखा
हनुवैंत सरिस जंघ वर जोरौं । दहौं समुद्र, स्वामि-बैदि छोरौं
सो तुम, मातु जसोवै, मोहि न जानहु बार ।

जहँ राजा बलि बाँधा छोरौं पैठि पतार' ॥ २१ ॥

बादल गवन जूझ कर साजा । तैसहि गवन आइ घर बाजा
का बरनौं गवने कर चारु । चंद्रबदनि रचि कीन्ह सिँगारु

मानि गवन सो घूँघुट काढ़ी । बिनवैं आइ बार भई ठाढ़ी
मुख फिराइ मन अपने रीसा । चलत न तिरिया कर मुख दीसा
तब धनि बिहँसि कहा गहि फेंटा । 'नारि जो बिनवै कंत न मेटा
आजु गवन हौ आई, नाहौ । तुम न, कंत गवनहु रन माहौ
धनि न नैन भरि देखा पीऊ । पिउ न मिला धनि सौ भरि जीऊ'

पायँन्ह धरा लिलाट धनि 'बिनय सुनहु, हो राय' ।

अलक परी फँदवार होइ कैसेहु तजै न पाय ॥ २२ ॥

'छाँड़ि फेंट धनि' बादल कहा । 'पुरुष-गवन धनि फेंट न गहा
जौ तुइ गवन आइ, गजगामी । गवन मोर जहँवाँ मोर स्वामी
जौ लागि राजा छूटि न आवा । भावै बीर, सिँगार न भावा
तिरिया भूमि खड़ग कै चेरी । जीत जो खड़ग होइ तेहि केरी
जेहि घर खड़ग मोंछ तेहि गाढ़ी । जहाँ न खड़ग मोंछ नहि दाढ़ी
तब मुँह मोंछ, जीउ पर खेलौ । स्वामि-काज इन्द्रासन पेलौ
पुरुष बोलि कै तरै न पाछू । दसन गयंद, गीउ नहि काछू

तुइ अबला, धनि, कुबुधि बुधि जानै काह जुभार ।

जेहि पुरुषहि हिय बीर रस भावै तेहि न सिँगार' ॥ २३ ॥

एकौ बिनति न मानै नाहौ । आगि परी चितउर धनि माहौ
उठा जो धूम नैन करवाने । लागे परै आँसु भराने
भीजे हार, चीर, हिय चोली । रही अछूत कंत नहि खोली
'जौ तुम कंत, जूझ जिउ काँधा । तुम किय साहस, मैं सत बाँधा
रन संग्राम जूझि जिति आवहु । लाज होइ जौ पीठि देखावहु'

मैं बैठि बादल औ गोरा । सो मत कीज परै नहिं भोरा
जस तुरकन्ह राजा छर साजा । तस हम साजि छोड़ावहिं राजा
पुरुष तहाँ पै करै छर जहँ बर किए न आँट ।

जहाँ फूल तहँ फूल है जहाँ काँट तहँ काँट ॥ २४ ॥
सोरह सै चंडोल सँवारे । कुँवर सजोइल कै बैठारे
पदमावति कर सजा बिवानू । बैठ लोहार न जानै भानू
रचि बिवान सो साजि सँवारा । चहुँ दिसि चँवर करहि सब ढारा
साजि सबै चंडोल चलाए । सुरँग ओहार, मोति बहु लाए
भए सँग गोरा बादल बली । कहत चले पदमावति चली
हीरा रतन पदारथ भूलहि । देखि बिवान देवता भूलहि
सोरह सै सँग चलीं सहेली । केवल न रहा, और को बेली ?
राजहि चलीं छोड़ावै तहँ रानी होइ ओल ।

तीस सहस तुरि खिचीं सँग सोरह सै चंडोल ॥ २५ ॥
राजा भँदि जेहि के सोंपना । गा गोरा तेहि पहुँ अगमना
टका लाख दस दीन्ह अँकोर । बिनती कीन्ह पायँ गहि गोरा
बिनवौ बादसाह सौं जाई । अब रानी पदमावति आई
बिनती करै आइ हौं दिल्ली । चितउर कै मोहि स्यो है किल्ली
बिनती करै जहाँ है पूँजी । सब भँडार कै मोहि स्यो कूँजी
एक घरी जौ अग्या पावौ । राजहिं सौँपि मँदिर महँ आवौ
तब रखवार गए सुलतानी । देखि अँकोर भए जस पानी
लीन्ह अँकोर हाथ जेहि जीउ दीन्ह तेहि हाथ ।

जहाँ चलावै तहँ चलै फेरे फिरै न माथ ॥ २६ ॥

लोभ पाप कै नदी अँकोरा । सत्त न रहै हाथ जौ बोरा
 जहँ अँकोर तहँ नीक न राजू । ठाकुर केर बिनासै काजू
 भा जिउ घिउ रखवारन्ह केरा । दरब लोभ चंडोल न हेरा
 जाइ साह आगे सिर नावा । 'ए जगसूर, चाँद चलि आवा
 जावत हैं सत्र नखत तराई' । सोरह सै चंडोल सो आई
 चितउर जेति राज कै, पूँजी । लेइ सो आइ पदमावति कूँजी
 बिनती करै जोरि कर खरी । लेइ सौपौ राजा एक घरी
 इहाँ उहाँ कर स्वामी दुआँ जगत मोहिं आस ।

पहिले दरस देखावहु तौ पठवहु कैलास' ॥ २७ ॥

आग्या भई, जाइ एक घरी । छूँछि जो घरी फेरि विधि भरी
 चलि बिवान राजा पहुँ आवा । सँग चंडोल जगत सब छावा
 पदमावति के भेस लोहारू । निकसि काटि बैदि कीन्ह जोहारू
 उठा कोपि जस छूटा राजा । चढ़ा तुरंग, सिंघ अस गाजा
 गोरा बादल खाँड़े काढ़े । निकसि कुँवर चढ़ि चढ़ि भए ठाढ़े
 तीख तुरंग गगन सिर लागा । केहुँ जुगुति करि टेकी बागा
 जो जिउ ऊपर खड़ग सँभारा । मरनहार सो सहसन्ह मारा
 भई पुकार साह सौ, 'ससि औ नखत सो नाहिं' ।

छर कै गहन गरासा, गहन गरासे जाहिं' ॥ २८ ॥

लेइ राजा चितउर कहँ चले । छूटेउ सिंघ, मिरिग खलभले
 चढ़ा साहि, चढ़ि लाग गोहारी । कटक असूझ परी जग कारी
 फिरि गोरा बादल सौ कहा । 'गहन छूटि पुनि चाहै गहा
 चहुँ दिसि आवै लोपत भानू । अब इहै गोइ, इहै मैदान

तुइ अब राजहि लेइ चलु, गोरा । हौं अब उलटि जुरौं भा जोरा
वह चौगान तुरुक कस खेला । होइ खेलार रन जुरौं अकेला
तौ पायौ बादल अस नाऊँ । जौ मैदान गोइ लेइ जाऊँ

आजु खड़ग चौगान गहि करौं सीस रिपु गोइ ।

खेलौं सौह साह सौ हाल जगत महँ होइ ॥ २९ ॥

तब अगमन होइ गोरा मिला । 'तुइ राजहि लेइ चलु, बादला' !
'पिता मरै जो सँकरे साथ । मीचु न देइ पूत के माथा
मैं अब आउ भरी औ भूँजी । का पञ्चिताव आउ जौ पूजी ?
बहुतन्ह मरि मरौं जौ जूझी । तुम जिनि रोएहु तौ मन बूझी'
कुँवर सहस्र सँग गोरा लीन्हे । और बीर बादल सँग कीन्हे
गोरहि समदि मेघ अस गाजा । चला लिए आगे करि राजा
गोरा उलटि खेत भा ठाढ़ा । पुरुष देखि चाव मन बाढ़ा

आव कटक सुलतानी गगन छपा मसि माँझ ।

परति आव जग कारी होति आव दिन साँझ ॥ ३० ॥

फिरि आगे गोरा तब हाँका । 'खेलौं, करौं आजु रन-साका
हौं कहिए धौलागिरि गोरा । टरौं न टारे, अंग न मोरा
साहिल जैस गगन उपराहीं । मेघ-घटा मोहि देखि बिलाहीं
सहस्रौ सीस सेस सम लेखौं । सहस्रौ नैन इंद्र सम देखौ
चारउ भुजा चतुरभुज आजू । कंस न रहा, और को साजू
हौं होइ भीम आजु रन गाजा । पाछे घालि डुंगवै राजा
होइ हनुवँत जमकातर ढाहौं । आजु स्वामि साँकरे निवाहौ

होइ नल नील आजु ही देहुँ समुद महुँ मेंड़ ।

कटक साह कर टेकौं होइ सुमेरु रन बेंड़ ॥ ३१ ॥

ओनई घटा चहुँ दिसि आई । छूटहि बान मेघ-भरि लाई
 डोलै नाहि देव जस आदी । पहुँचे आइ तुरुक सब बादी
 हाथन्ह गहे खड़ग हरद्वानी । चमकहि सेल बीजु कै पानी
 सोफ बान जस आवहि गाजा । बासुकि डरै सीस जुन बाजा
 नेजा उठे डरै मन इंदू । आइ न बाज जानि कै हिंदू
 गोरै साथ लोन्ह सब साथी । जस मैमंत सूँड़ बिनु हाथी
 सब मिलि पहिलि उठौनी कोन्ही । आवत आइ हौकि रन दीन्ही

रुंड मुंड अब दूटहि स्यों बखतर औ कूँड़ ।

तुरय होहि बिनु काँधे हस्ति होहि बिनु सूँड़ ॥ ३२ ॥

भइ बगमेल, सेल घनगोरा । औ गज-पेल, अकेल सो गोरा
 सहस कुँवर सहसौ सत बाँधा । भार-पहार जूझ कर काँधा
 लगे मरै गोरा के आगे । बाग न मोर घाव मुख लागे
 जैस पतंग आगि धँसि लेई । एक मुवै, दूसर जिउ देई
 दूटहि सीस, अधर धर मारै । लोटहि कंधहि कंध निरारै
 कोई परहि रुहिर होइ राते । कोई घायल घूमहि माते
 कोई खुरखेह गए भरि भोगी । भसम चढ़ाइ परे होइ जोगी
 घरी एक भारत भा भा असवारन्ह मेल ।

जूझि कुँवर सब निबरे गोरा रहा अकेल ॥ ३३ ॥

गोरै देख साथि सब जूझा । आपन काल नियर भा, बूझा
 कोपि सिंघ सामुहँ रन मेला । लाखन्ह सौं नहिं मरै अकेला

लेइ हौंकि हस्तिन्ह कै ठटा। जैसे पवन बिदारै घटा
जेहि सिर देइ कोपि करवारू। स्यों घोड़े दूटै असवारू
लोटहि सोस कबंध निनारे। माठ मजीठ जनहुँ रन ढार
खेलि फाग सेंदुर छिरकावा। चौंचरि खेलि आगि जनु लावा
हस्ती घोड़ धाइ जो धूका। ताहि कीन्ह सो रुहिर भभूका

भइ अग्या सुलतानी 'बेगि करहु एहि हाथ।

रतन जात है आगे लिए पदारथ साथ' ॥३४॥

सबै कटक मिलि गोरहि छेका। गूँजत सिघ जाइ नहिं टेका
जेहि दिसि उठै सोइ जनु खावा। पलटि सिघ तेहि ठाँव न आवा
सिघ जियत नहिं आपु धरावा। मुए पाछ कोई घिसियावा
करै सिघ मुख-सौहहिं दीठी। जौ लगि जियै देइ नहिं पोठी
सरजा बीर सिघ चढ़ि गाजा। आइ सौह गोरा सौ बाजा
पहुँचा आइ सिघ असवारू। जहाँ सिघ गोरा बरियारू
मारैसि साँग पेट महुँ धँसी। काढ़ैसि हुमुकि आँति भुइँ खसी

भाँट कहा 'धनि गोरा, तू भा रावन राव।

आँति समेटि बाँधि कै तुरय देत है पाव' ॥३५॥

कहेसि अंत अब भा भुइँ परना। अंत त खसे खेह सिर भरना
कहि कै गरजि सिघ अस धावा। सरजा सारदूल पहुँ आवा
सरजै लीन्ह साँग पर घाऊ। परा खड़ग जनु परा निहाऊ
दूसर खड़ग कंध पर दीन्हा। सरजै ओहि ओढ़न पर लीन्हा
तीसर खड़ग कूँड़ पर लावा। काँध गुरुज हुत, घाव न आवा

तब सरजा कोपा बरिबंडा । जनहु सदूर केर भुजदंडा
कोपि गरजि मारेसि तस बाजा । जानहु परी दूटि सिर गाजा
गोरा परा खेत महुँ सुर पहुँचावा पान ।

बादल लेइगा राजा लेइ चितउर नियरान ॥३६॥

पदमावति मन रही जो भूरी । सुनत सरोवर-हिय गा पूरी
अद्रा महि-हुलास जिमि होई । सुख सोहाग आदर भा सोई
राजा जहाँ सूर परगासा । पदमावति मुख-कँवल बिगासा
कँवल पायँ सूरज के परा । सूरज कँवल आनि सिर धरा
पूजा कौनि देउँ तुम्ह राजा ? सबै तुम्हार, आब मोहि लाजा
तन मन जोवन आरति करऊँ । जीव काढ़ि नेवझावरि धरऊँ
पंथ पूरि कै दिष्टि बिछावौ । तुम पग धरहु, सीस मैं लावौ
जौ सूरज सिर ऊपर तौ रे कँवल सिर छात ।

नाहि त भरे सरोवर सूखे पुरइन-पात' ॥३७॥

परसि पायँ राजा के रानी । पुनि आरति बादल कहँ आनी
पूजे बादल के भुजदंडा । तुरय के पाँव दाब कर-खंडा
'यह गजगवन गरब जो मोरा । तुम्ह राखा, बादल औ गोरा
सेंदुर-तिलक जो आँकुस अहा । तुम्ह राखा माथे तौ रहा
काछ काछि तुम जिउ पर खेला । तुम्ह जिव आनि मँजूषा मेला
राखा छात चवँर औ धारा । राखा छुद्रघंट-भनकारा
तुम हनुवैत होइ धुजा पईठ । तब चितउर पिय आइ बईठे'
पुनि गजमत्त चढ़ावा नेत बिछाई खाट ।

'बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट ॥३८॥

सुनि देवपाल राय कर चालू। राजहि कठिन परा हिय सालू
 'दादुर कतहुँ कँवल कहँ पेखा। गादुर मुख न सूर कर देखा
 अपने रँग जस नाच मयूरू। तेहि सरि साध करै तमचूरू
 जौ लागि अइ तुरुक गढ़ बाजा। तौ लागि धरि आनौ तब राजा'
 नींद न लीन्हि, रैनि सब जागा। होत बिहान जाइ गढ़ लागा
 कुंभलनेर अगम गढ़ बाँका। विषम पंथ चढ़ि जाइ न भाँका
 राजहि तहाँ गएउ लेइ कालू। होइ सामुहँ रोपा देवपालू

दुवौ अनी सनमुख भई लोहा भएउ असूझ।

सत्रु जूझि तब नेवरै एक दुवौ महँ जूझ ॥ ३९ ॥

जौ देवपाल राव रन गाजा। मोहि तोहि जूझ एकौभा, राजा !'
 मेलेसि साँल आइ बिप-भरी। मेटि न जाइ काल कै घरी
 आइ नाभि पर साँग बईठी। नाभि बेधि निकसी सो पीठी
 चला मारि तब राजै मारा। टूट कंध, धड़ भएउ निनारा
 सीस काटि कै बैरी बाँधा। पात्रा दावँ बैर जस साधा
 जियत फिरा आएउ बल-भरा। माँझ बाट होइ लोहै धरा
 कारी घाव जाइ नहिं डोला। रही जोभ जम गही, को बोला ?

सुधि-बुधि तौ सब बिसरी भार परा मँझवाट।

हस्ति घोर को का कर घर आनी गइ खाट ॥ ४० ॥

जौ लहि साँस पेट महँ अही। तौ लहि दसा जीउ कै रही
 काल आइ देखराई साँटी। उठि जिउ चला छोड़ि कै माटी
 का कर लोग, कुटुंब, घर-बारू। का कर अरथ दरब संसारू ?
 ओही घरी सब भएउ परात्रा। आपन, सोइ जो परसा, खावा

अदे जे हितू साथ के नेगी । सबै लाग काढ़ै तेहि बेगी
हाथ भारि जस चलै जुवारी । तजा राज, होइ चला भिखारी
जब हुत जीउ, रतन सय कहा । भा बिनु जीउ, न कौड़ी लहा

गढ़ सौपा बादल कहँ गए टिकठि बसि देव ।

छोड़ी राम अजोध्या; जो भावै सो लेव ॥ ४१ ॥

पदमावति पुनि पहिरि पटोरी । चली साथ पिउ के होइ जोगी
सूरुज छपा, रैन होइ गई । पूनो-ससि, सो अमावस भई
छोरे केस, मोति-लर छूटीं । जानहुँ रैन नखत सब टूटीं
सेंदुर परा जो सीस उधारा । आगि लागि चह जग अंधियारा
‘यही दिवस हौं चाहति, नाहा । चलौं साथ, पिउ, देइ गलवाहौं
सारस पंखि न जियै निनारे । हौं तुम्ह बिनु का जिअौं, पियादे !
नेवछावरि कै तन छहरावौं । छार हाँउँ मँग, बहुरि न आवौं

दीपक प्रीति पतंग जेउँ जनम निवाह करेउँ ।

नेवछावरि चहुँ पास होइ कंठ लागि जिउ देउँ ॥ ४२ ॥

नागमती पदमावति रानी । दुवा महा सत सती बखानी
दुवौ सवति चढ़ि खाट बईठीं । औ सिवलोक परा तिन्ह दीठी
बैठी कोइ राज औ पाटा । अंत सबै बैठै पुनि खाटा
चंदन अगर काठ सर साजा । औ गति देइ चले लेइ राजा
बाजन बाजहि होइ अगूता । दुवौ कंत लेइ चाहहि सूता
एक जो बाजा भएउ बियाहू । अब दुसरे होइ ओर-निबाहू
जियत जो जरै कंत के गसा । मुएँ रहसि बैठै एक पासा

आजु सूर दिन अथवा आजु रैन ससि बूड़ ।

आजु नाचि जिउ दीजिय आजु आगि हम्ह जूड़ ॥ ४३ ॥

सर रचि दान-पुन्नि बहु कोन्हा । सात बार फिरि भाँवरि लीन्हा
‘यह जग काह जो अर्द्धाह न आथी । हम तुम, नाह, दुहूँ जग साथी’
लेइ सर ऊपर खाट बिछाई । पौढ़ीं दुवौ कंत गर लाई
वै सहगवन भई जब जाई । बादसाह गढ़ छेंका आई
तौ लगि सो अवसर होइ बीता । भए अलोप राम औ सीता
आइ साह जौ सुना अखाग । होइगा राति दिवस उजियारा
छार उठाइ लीन्ह एक मूठी । दीन्हि उड़ाइ पिरथिमी भूठी
जौहर भई सब इस्तिरी पुरुष भए संग्राम ।

बादसाह गढ़ चूरा वितउर भा इसलाम ॥ ४४ ॥

मुहमद कवि यह जोरि सुनावा । सुना सो पीर प्रेम कर पावा
जोरी लाइ रक्त कै लेई । गाढ़ि प्रीति नयनन्ह जल भेई
औ मैं जानि गीत अस कीन्हा । मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा
कहाँ सो रतनसेन अब राजा ? कहाँ सुआ अस बुधि उपराजा ?
कहाँ अलाउदीन सुलतानू ? कहाँ राघव जेइ कीन्ह बखानू ?
कहाँ सुरुप पदमावति रानी ? कोइ न रहा, जग रही कहानी
धनि सोइ जस कीरति जासू ? फूल मरै, पै मरै न बासू
केइ न जगत जस बेंचा केइ न लीन्ह जस मोल ?

जो यह पढ़ै कहानी हम्ह सँवरै दुइ बोल ॥ ४५ ॥

टिप्पणी

(१) पदमावती खंड

दोहा १ जोति परकासू = मुसलमानों धर्म में यह माना जाता है कि ईश्वर ने अपनी ज्योति से सबसे पहले मुहम्मद को उत्पन्न किया। तेइ (तेन) = उसी ने। खेहा, खेह = धूल। उरेहा (उल्लेख) = चित्रकारी। धरती = पृथ्वी। दिनअर (दिनकर) = सूर्य। तराइन-पाँती = तारागण की पंक्ति। सीउ = शीत। बीजु (विद्युत्) = बिजली। दूसर झाज न काहि = दूसरे किसी को जो शोभा नहीं देता।

दो० २ चाँटा = च्यूँटी। भुगुति = भोजन। ताकर..... उपराहीं = उसकी दृष्टि जो सबके ऊपर रहती है। उपाई (उत्पद्) = उत्पन्न की, उपजाई। जियना = जीवन। आस हर (आशधर) = आशा रखनेवाले।

दो० ३ अछत (अछत्र) = छत्र रहित। छवा = छाना, छत्र धारण कराना। सरबगि = बराबरी, समता। चाँटहि = चाँटा को, च्यूँटी को, 'हिं' अवधि की विभक्ति है। सारा = किया। अहथिर = स्थिर। भाँजै = नष्ट कर।

दो० ४ अवरन (अवर्ण) = वर्ण रहित। बरता (विरक्त) = अलग। सरब-बिआपी = सर्वव्यापी। जना = उत्पन्न किया। सिरजना = रचना, सृष्टि। हुत = था। बाउर = पागल। अनेग = अनेक।

दो० ५ निरमरा = निर्मल। पूनोकरा = पूर्णिमा के समान कलावाला, ज्योतिमान। सिहिटि = सृष्टि। लेसि = जला-

कर। दुसरे.....लिखे=मुसलमानों के कलमा-शरीफ में ईश्वर के नाम के पश्चात् मुहम्मद का नाम आता है। (देखो—‘लाइलाह इल लिह्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह’) पाढ़त=पाठ, शिक्षा, कलमा जो कुरान में लिखा है। बसीठ=दूत, पैगंबर, ईश्वर का दूत। बिधि=ईश्वर। लेख और जोख=लेखा जोखा, हिसाब-किताब। बिनउत्र=विनय करेगा। मोख (मोक्ष)=मुक्ति।

दो० ६ छात औ पाटा=छत्र और पाट (सिंहासन)।

खाँड़े सूग=तलवार चलाने में वीर। वई=उसने। दुनी=दुनिया। नई=फुकी। करि=करके, द्वारा। इसकंदर जुलकरन। सिकंदर जुलकरनैना जुलकरन)=एक पदवी जो सिकंदर को दी गई थी। सुलेमाँ=सुलेमान, एक यहूदी राजा; कहते हैं कि इसके पाम एक अँगूठी थी जिसके कारण ज्यों ज्यों यह दान देता था त्यों त्यों इसका धन बढ़ता जाता था; यह राजा बड़ा दानी था। मुहताज=मुख देखनेवाला, मुखापेक्षी, याचक।

दो० ७ असरफ=सैयद अशरफ जहाँगीर चिश्ती। दीया=दीपक। हीया=हृदय। बोहित=नाव, जहाज, बेड़ा।

कै=करके। बूड़त कै=डूबते समय। अहा=था। कंधा(कर्णधार)=नाविक, रास्ता दिखानेवाला, गुरु। दस्तगीर=बाँह पकड़नेवाला, रक्षा करनेवाला। अगगाह=अगाध। हाथी=हाथ। निहकलंक=निष्कलंक। मखदूम=मालिक। बाँद=बंदा, गुलाम, दास।

दो० ८ देइ कहँ=देने के लिये, दिखाने के लिये। मेरु=पर्वत। खिखिद=किंकिध पर्वत। उपराहीं=ऊपर, बढ़कर। ताई=लिये। मुगसिद=सीधा मार्ग बतलानेवाला।

पीर=गुरु। खेचक=खेनेवाला।

दो० ९ मेहदी=सैयद मुहीउद्दीन, जायसी के मंत्र-गुरु। उता-इल=वेग से। खेवा=नाव का बाँक। रोसन=उज्ज्वल,

प्रबलित, विख्यात । सुरखुरू = सुखरू, तेजमान, जिसका मुख तेज-युक्त हो । लखाए = दिखाया, लक्षित कराया । मेरई = मिला लिया । हौं (अहं) = मैं । केर = का । हुत = द्वारा (प्रा० हितो) ।

दो० १० एक नयन = कहते हैं कि जायसी बाईं आँख के अंधे थे । दे० “मोहिं का हँससि कि कोहरहिं ।” कवि = कविता । बिधि औतारा = ईश्वर ने पैदा किया । सूक = शुक्र ग्रह । नखतन्ह = नखत्रों । माहाँ = में । अंबहि = आन्त्र में । डाम = मंजरी, बौर । लाग = तक । घरी = घरिया, स्वर्ण गलाने का पात्र । जोहहिं = देखें, प्रतीक्षा करें ।

दो० ११ मिताई = मित्रता । सरि = बराबरी । उभै = उठती है । बरियारू = बलवान् । खेत-रन = रणक्षेत्र । जुभारू (युद्ध) = योद्धा । चतुरदमा = चतुर्दश, चौदह । विरिछ = वृत्त । बेद = बेंत । कित्त (सं० कुत्र) = क्यों, कहाँ ।

दो० १२ पछलागा = पीछे लगनेवाला, अनुयायी । डगा = डुगगी बजाने की लकड़ी । भंडार = भंडार (सं० भाण्डा-गार) । तारू = तालू । कूँजी = कुंजी । घाया = घाव, जखम । तपा = तपस्वी । छपा = छिपा ।

दो० १३ सन नव सै मैंतालिस = सन् ९४७ हिजरी अर्थात् सं० १५९७ । आछै (आस्ते) = है । नियर = समीप । कवि बिआस.....आछै पास = कवि व्यास के समान हो और काव्य रस से पूर्ण हो पर यह आवश्यक नहीं है कि वह उस रस को पाकर उसका संचार कर सके; क्योंकि ऐसा देखने में आता है कि संसार में कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं जो दूर रहने पर निकट ही होती हैं जैसे गुड़ और च्यूटा, भ्रमर और कमल और कुछ ऐसी भी हैं जो निकट रहने पर भी दूर हैं जैसे फूल और काँटा, दादुर और

कमल-गंध । इसलिये यह आवश्यकता नहीं है कि मैं बड़ा कवि होकर अपनी कथा को रसपूर्ण कर सकूँ, परंतु जो कुछ कथा है उसे कहता हूँ ।

दो० १४ चाहि = बढ़कर (मिलाओ—कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ।—तुलसी) । नावै = नवावै । चक्कवै = चक्रवर्ती । यहाँ चक्कवै क्रिया है; अर्थात् चक्रवर्ती के समान राज करता है ।

दो० १५ अमराउ = अमराई, आम्र का बाग । हरियर = हरा, नीला । पुराने कवि हरे, नीले, काले में भेद नहीं मानते थे । पथिक...धूपा = अज्ञात (परमात्मा) की ओर संकेत है । पारौ = सकौ । पारना = सकना (मिला० बँगला का 'पारबे') ।

दो० १६ चुहचुही = पक्षि-विशेष, फूलसुघनी । सारा = सारिका, मैना । परेवा = कबूतर । करबरहीं = कलबल करते हैं । गडुरी = पक्षि-विशेष । भिंगराज = एक पक्षी । महरि = पक्षि-विशेष । हारा = हाल अथवा लाचारी, दीनता । कुराहर = कोलाहल । भाखा = भाषा, बोली ।

दो० १७ पैग = पग । बावरी (वापी) = बावली । पाँवर = सीढ़ी । भई = घूमी हैं । गरेरी = चक्करदार, घुमौवा । राता = लाल । पखुरिन = पँखड़ी । पाल - बाँध ।

दो० १८ अपूर (आपूर्ण) = भ्रूपूर । कैलास = स्वर्ग । पोते = पुता हुआ, लीपा हुआ । मेद = एक सुगंधित वस्तु, कस्तूरी । गौरा = गोरोचन । ग्याता = ज्ञाता, ज्ञानी । संसकिरित = संस्कृत ।

दो० १९ तरहि करिन्ह = नीचे हाथियों (दिग्गजों) । खोह = खाई, खंदक । सपत-पतारहिं = सप्त पाताल । जरे = जटित, जड़े । फेर = घेरा, चक्कर ।

दो० २० वाजि-रथ = रथ और घोड़े । चूरू = चूर । पाजी
 (पदातिक) = पैदल । कोतवार = कोतवाल । चपत =
 दबाते हुए, रखते हुए । काढ़े = खुदे हुए, बने हुए । नाहर = सिंह ।
 गुंजरि = गरजकर । तार्ई = तक । केवार = केवाड़ । बसेरा = डेरा ।
 दो० २१ घरियार = घड़ियाल, घंटा । घरियारी = घंटा बजाने-
 वाला । डाँड़ = डंडा । डाँड़ा = डाँटा । भाँड़ा (सं० भाण्ड)
 = बर्तन, पात्र, पुतला । बटाऊ । (बटुक) = बटोही, मुसाफिर ।
 गजर = (पहर पहर पर) घंटा बजने का शब्द । बजर = वज्र ।
 रहँट = पानी भरने का एक यन्त्र ।

दो० २२ झारि = केवल । असुपति = अश्वपति । परस-पखान
 (स्पर्शपाषाण) = पारस पत्थर । चौपारी = चौपाल,
 बैठक । सारी = चौपड़ । कीरति = कीर्ति ।

दो० २३ बारा = द्वार । पहारा = पहाड़ । धूम = धूमिल रंग
 के । रज-वार = राजद्वार । समुद = समुद्र । रिस लोह
 चबाहों = क्रोध से लोहे की लगाम चबाते हैं । तुखार = तुषार देश
 के अश्व । रथवाह = रथ के वहन करनेवाले, घोड़े ।

दो० २४ दर निसान = दल (सेना) का डंका । माँफ = मध्य,
 बीच में । तवै = तपै । बिगसइ (विकसित) = विकसित
 होता है ।

दो० २५ उहै = वही । अछरीन्ह = अत्सराएँ । पाट-पर-
 धानी = पटरानी । जेती = जितनी । बारह-बानी (द्वादश-
 वर्णी) = सूर्य के समान ज्योतिवाली । बत्तीसो लच्छनी = बत्तीसों
 लक्षण वाली । स्त्रियों के ३२ लक्षण ये हैं—

(१) नख—रक्तवर्ण । (२) पादपृष्ठ—कछुए की पीठ
 जैसा । (३) गुल्फ—गोल । (४) पैर की अँगुली—
 अचिरल । (५) पैर का तलवा—लाल, शुभ चिह्नयुक्त ।

(६) जंघा—गोल, चढ़ाव-उतारवाला । (७) जानु—
 बराबर, सुडौल । (८) ऊरु—अविरल । (९) भग—पीपर-
 पत्र सी । (१०) भग का मध्य भाग—गुप्ता । (११)
 पेड़ू—कूर्मपृष्ठवत् (१२) नितम्ब—मांसल, मांस-युक्त ।
 (१३) नाभि—गभोर । (१४) नाभिका ऊपरी भाग—
 त्रिवली-युक्त । (१५) स्तन—सम, गोल, कठोर ।
 (१६) पेट—मृदु, लोभ-रहित । (१७) ग्रीवा—कंबु-
 वत् । (१८) ओष्ठ—लाल । (१९) दाँत—कुंदवत् ।
 (२०) वाणी—मधुर । (२१) नासिका—सोधी, ऊँची ।
 (२२) नेत्र—कंजवत् । (२३) भौह—धनुषवत् ।
 (२४) ललाट—अर्द्धचंद्रवत् । (२५) कान—कौमल ।
 (२६) केश—काले, सटकारे, सुकुमार । (२७) शीश—
 सुडौल । (२८) कलाई—गोल, कौमल । (२९)
 हथेली—रक्तवर्ण, शुभ लक्षणयुक्त । (३०) बाहु—
 सुडौल । (३१) मणिबंध—नीचे को दबा हुआ ।
 (३२) हाथ की अँगुली—पतली, सुडौल ।

दो० २६ सलोनी=सुंदर । बरा=प्रदीप्त हुआ, जला ।
 घट=हृदय । ओदर=उर, गर्भ । अवधान=गर्भ ।

उपना=उत्पन्न हुआ ।

दो० २७ हुति (हुंतो)=से । घाटि=कम । छीन=क्षीण ।
 निरमई (निर्मितः)=निर्माण किया ।

दो० २८ छठि राति=छठी की रात । विहानि=समाप्त हुई ।
 विहान (विभात)=प्रभात, सबेरा । अरथाए=अर्थ
 किया । बैसारी=बैठाया । ओनाहीं=आधे, कुंठे । बोक=
 बरेखी, वररक्षा, विवाह ।

दो० २९ सहयोग मयानी=विवाह के योग्य । कोई=कुसु-
 दिनी । सोहागहिं=सोहागा में । सासतर=शास्त्र ।

दो० ३० उनंत = अनंत, यौवनभार से झुकी । बेधा = विद्ध
हुआ, फैला । दूइज = द्वितीया का चंद्रमा । कनक-
जँभीरा = सोनहला नीबू ।

दो० ३१ तई = तें, से । मोहिं = मेरे लिये । आँखि लगा-
वहिं = आँख लगाना, किसी की ओर देखना, किसी पर
अनुग्रह करना । अनंगा = मदन । अग्या = आज्ञा । निवारि =
रोककर ।

दो० ३२ ऊआ = उगा । मँजारी (माजोरी) = बिल्ली । सुजान
= सज्ञान, बुद्धिमान् । दारिउँ = दाड़िम, अनार । दाख
= दाक्षा, अंगूर ।

दो० ३३ उतर = उत्तर । उबारा = उद्धार । मायो = प्रेम ।
परेवा = पत्नी । धोख न लाग = धोखा नहीं लगा, चूक
नहीं हुई । आखौं = चाहैं । हिये घालि = हृदय में डालकर ।
केइ = किसने । खुरुक = खुटका । करिया = कर्णधार, केवट ।

दो० ३४ सारी = साड़ी, वस्त्र । बाद मेलि = बाद लगाकर,
बाजी लगाकर । हेरै = ढूँढ़ने ।

दो० ३५ परसे = स्पर्श किया । ओप = कांति । भा = हुआ ।

दो० ३६ ताकि = देखकर । बन-ढाँखा = पलाश का वन ।

मुकदाता = भोजन देनेवाला । तुई = तूने । सोग = शोक ।

बिछोह = वियोग । बिसरन = विस्मरण । सुभिरना = स्मरण ।

दो० ३७ पहुँ = पास । छूँछा = खाली । गहने गही =

ग्रहण लगा । पाल = बाँध । आँसु = अश्रु । उए =

उगे । चिहुर (चिकुर) = बाल, केश । सँकेत = सँकरा, संकीर्ण ।

सुअटा = शुक, सुआ । बासु = स्थल । दहुँ = (संदेहवाचक
अव्यय) न जाने ।

दो० ३८ पँखी = पक्षी (शुक) । लहि = लौं, तक ।

बंदि = कैद । उड़ान-फर = उड़ने का फल । केतन =

कितनों को । यह धरती.....ढोला = इस धरती ने ऐसे कितनों को निगल लिया, इसका पेट इतना गहरा है कि एक बार जिसे निगल लिया उसे फिर न छोड़ा । गाढ़ = कठिन, तंग ।

दो० ३९ कल = चैन । बियाध = व्याध । टाटी = टट्टी, आड़ । डेली = डलिया, टोकरी । खरभरहीं = खड़बड़ करते हैं ।

चारा = दाना, भोजन । चिरिहार = चिड़ीमार । लासा = गोंद, जिससे पत्ती फँसाते हैं । विख = विप । बाभा = विद्ध हुआ, फँसा ।

दो० ४० ज़िउलेवा = जीव लेनेवाला । तिसना (तृष्णा) = लोभ, लालच । खाधू = खाद्य । अपाना = अपना । मस्ट = मौन ।



(२) रतनसेन खंड

दो० १ वारा = बालक, पुत्र । ओहि लागि = उसके लिये । पारखी = परखनेवाले, जौहरी ।

दो० २ बैपारी = व्यापारी । रिन = ऋण । मकु = शायद । बेसाहना (व्यवसाय) = खरीद-फरोख्त । साँठि = पूजी, धन ।

दो० ३ भूरै = निष्फल, व्यर्थ । वनिज = वाणिज्य । कुवानी (कु + वाणिज्य) = बुरा व्यापार । मूर = मूलधन, पूँजी ।

दो० ४ मँजूसा = मंजूषा, पेटारी । परावा = पराया । पर-मँस = पराये का मांस । खाधू = खानेवाले ।

दो० ५ सब साजा = चिता पर शव सजाकर रखा अर्थात् मृतक-कर्म किया । कौठा = कंठा, गले में लाल लकीर । डहन = डैले, पंख ।

दो० ६ रजाइ = राजाज्ञा । निरारा = अलग । जोहारा = प्रणाम किया, आदर किया । मेरवौ = मिलाऊँ ।

दो० ७ चीन्हा = पहचाना । परोवा = पिरोया हुआ, गुथा हुआ । अगाहु = अगाध, गंभीर ।

दो० ८ नाहाँ = नाथ को । ओपनवारी = चमकनेवाली, सुंदर । बानि कसि = कसौटी पर कसकर । आन = कसम, शपथ ।

दो० ९ आगरि = बढ़-चढ़कर । बिलानि = लावण्य-रहित । लोनी = सुंदर । पूजै = बराबरी कर सके । पुहुप = पुष्प सोंधे = सुगंध ।

दो० १० अँकूरु = अंकुर । मुर्गा कहीं पदमावती-रूपी प्रभात की सूचना न दे दे कि राजा उठ, दिन की आर देख ! पाला = पाला हुआ, पोसा हुआ । तमचूरु (ताम्रचूड़) = मुर्गा । साखी = साक्षी, गवाह । सूर और कँवल से क्रमशः पल्लव और पदमावती की ओर संकेत है । नाग (सर्प) का शत्रु साँप होता है अतएव नागमती शुक को अपने लिये मयूर सदृश बतलाती है ।

दो० ११ विसरामी = विश्राम देने वाला, मनोरंजन करनेवाला । खंडित-वैरागू = वैराग्य में चूर गया इसी से शुक का जन्म पाया है । तुरय.....जाए = घोड़े का राग बंदर के सिर मढ़ना । कहते हैं कि यदि अस्तबल में बंदर रखा जाय तो घोड़ों का रोग बंदर के सिर जाता है और वे नागंग रहते हैं । सेइ = वही ।

दो० १२ कूट = विष । कूटे = भगा हुआ । हानियार = हत्यारा ।

दो० १३ विक्रम पछिताना = कथा है कि राजा विक्रम के यहाँ एक शुक था, उसने उन्हें एक दिन एक फल दिया जिसके खाने से वृद्ध युग हो जाता था । राजा ने वह फल रखवा दिया । किसी साँप ने आकर उसमें अपना मुँह लगा दिया । दूसरे दिन राजा ने वह फल खाने के लिये मँगवाया । मंत्रियों ने सलाह दी कि बिना परीक्षा किए इसे खाना ठीक नहीं । फल का

एक टुकड़ा एक जानवर को खिलाया गया । वह मर गया । राजा ने क्रुद्ध होकर तोते को मरवा डाला । पीछे वह फल फेंक दिया गया । कुछ दिन बाद उसके बीज से एक पेड़ तैयार हुआ और उसमें फल लगने लगा । एक दिन एक बूढ़े आदमी ने मरने की इच्छा से उसके फल को विषैला समझकर खा लिया । मरने के बदले वह युवा हो गया । राजा को यह बात मालूम हुई । वह अपनी गलती से तोते के मारे जाने पर पछताने लगा । कहते हैं कि इस तोते का नाम भी 'हीरामन' था । मती = नागमती । गहन = प्रहण । दोहाग (दुर्भाग्य) = अभाग्य । परहेली = अवहेलना की गई । नाहँ = नाथ ।

दो० १४ रिस (इष्या) = क्रोध । मरम = मर्म, भेद । मैं जानेऊँ.....खोज = परमात्मा की ओर संकेत है ।

दो० १५ सँवर (शाल्मली) = सेमल । भूआ = भूई । सँघाता = समूह । दुआदस (द्वादश) = बारह । कंठा फूट = जब तोते के गले के चारों ओर रक्तवर्ण की चूड़ी सी लकीर पड़ जाती है तब लोग कहते हैं कि वे अच्छी तरह से बोलते हैं । गला खुलना । सवैरौ = स्मरण करूँ । हरियर = हरा ।

दो० १६ भा.....कली = अभी व्याही है कि कुआँरी ।

दो० १७ राता (रक्त) = लाल, प्रेम-पूर्ण । पेम = प्रेम । फाँद = फंदा । मेरवै = मिलावे ।

दो० १८ बिसहर = विषधर । लुरे = भुके हुए । अरधानी (आघ्राण) = सुवास, सुगंध । कौवर = कोमल । लह-रन्हि = लहरों से । भुअँग = भुजंग, सर्प । सँकरै (श्रंखला) = सीकर, जंजीर । फँदवार = फंदेवाले । गिड (ग्रीव) = गला । कुरी = कुल । अष्ट = कुल नाग थे हैं—वासुकि, तक्षक, कुलक, कर्कोटक, पद्म, शंखचूड़, महापद्म और धनंजय ।

दो० १९ परगसी = परगटी, प्रकट हुई । रुहिर = रुधिर ।

करवत (करपत्र) = आरा । बेनी = त्रिवेणी । पूरि = पिरोकर । सोती = सोता, धार । करवत तपा लोहिं = योगी लोग तीर्थ स्थानों पर आरे से अपने को चिरवा डालते थे । काशी में भी लोग इस तरह 'करवट' लेते थे । यहाँ पर "काशी करवट" नाम का एक स्थान अब तक है । गाँग = गंगा ।

दो० २० जोती = ज्योति । ओती = उतनी । गहासा = घास किया । ध्रुव = ध्रुव तारा । अत्र = अस्त्राचक = चक्र, आँख । हए = मारा । "खरग, धनुक, चक, बान दुइ" से क्रमशः नासिका, भौंह, आँख और दोनों नेत्रों के कटाक्षों की ओर संकेत समझना चाहिए ।

दो० २१ सहुँ = ओर, सामने । उलथहिं = उछलते हैं । भवाँ = भ्रमा । अपसवाँ (अपसर्पण) = भागना । अडार = तिरछे । पल = पलक ।

दो० २२ अनी = सेना । सूक = शुक्र तारा । बेसरि = (१) बिना समता का । (२) एक आभूषण । हिरकाई = लगा । बिब = बिबाफल । रम = रमा है ।

दो० २३ अबहिं.....चाखे = अभी अविवाहित है । चौक = आगे के चार (दो ऊपर के, दो नीचे के) दाँत । रँग स्याम = मिस्सी लगाने के कारण । बतीसी = दाँत । निरमई = निरमित हुई । छरकि = छटक । दरकि = तड़ककर ।

दो० २५ कौधा = बिजली । लौकहिं = दिखाई पड़ते हैं । कंबु = शंख । रीसी = ईर्ष्या करनेवाले, प्रतिद्वंद्वी; अथवा कै रीसी (प्रा० केरि सी) = कैसी, समान । कुँदै फेरि = खराद पर

चढ़ाकर । पुछार (पुच्छ) = पूछवाली, मोरनी । सकारे = सबेरे ।
कंठसिरी (कंठश्री) = एक प्रकार का गले का आभूषण ।

दो० २६ भाई (भ्रमित) = फेरी हुई, घुमाई हुई । गाभ
(गर्भ) = नरम कल्ला । लारू = लड्डू । कचौर =
कचोल, कटोरी । जँभीर = एक प्रकार का नीबू । बारी—कन्या,
फुलवारी, बाटिका । मरोरत = मलते हुए ।

दो० २७ कुहुँकुहुँ = कुमकुम, रोली । माती = मतवाली ।
काछे = बनी ठनी, विभूषित । कारी = काली । ओहार
= ओढ़नी ।

दो० २८ पहुमि = पृथ्वी । वसा = भिड़, बरा । भीनी
(चीण) = पतली । परिहँस = ईर्ष्या, डाह ! भँवै =
घूमता है । तीवइ = स्त्री की । समुद लहरि चीरू = लहरिया कपड़ा,
एक प्रकार का वस्त्र ।

दो० २९ बिसँभारा (बि + सँभारा = बेसुध । खिनहिं = क्षण
में । दसवँ अवस्था = मृत्यु । तरासहिं = त्रास देते हैं ।

दो०—३० जावत = बहुत से, जितने । गारुडी = सर्प का विष
उतारनेवाले । बाउर (वातुल) = पागल । अहुठ
(अध्युष्ठ) = साढ़े तीन ।

दो० ३१ सेंति = से । गोपीता = गोपियाँ । जेई = भोजन
किया । पाई = पकाई हुई । कोई = कुमुदिनी । साधन्ह =
साध से, इच्छा से । कलप = काट डाले ।

दो० ३२ हेराइ = खो जाय । कंथा = साधुओं की गुदड़ी ।
दस पंथा = दस मार्ग अर्थात् दस इंद्रियाँ । लेइ सुल-
गाइ = प्रज्वलित कर ले । फनिग = फतिगा, पतंग । भंग = एक
प्रकार का कीड़ा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह और फतिगों
को अपने रूप का कर लेता है । केत = घर ।

- दो० ३३ किँगरी = एक बाजा, छोटी सारंगी । लटा = शिथिल । उदपान = कमंडलु । बघछाला = व्याघ्रचर्म ।
- दो० ३४ गनक (गणक) = ज्योतिषी । सरेखा = चतुर, सज्जान । सैतै = सँभालती या सहेजती है ।
- दो० ३५ साँटिया = डौँडी पीटनेवाला । कटकाई = सेना की तैयारी । माया = माता । लच्छि (लक्ष्मी) = स्त्री ।
- दर = दल । परिगह (परिग्रह) = नौकर-चाकर ।
- दो० ३६ निआन = निदान, अंत में । पोखि (पोषण) = पालकर । पिरीता = प्यारे । अहिबात (सं० अविधवात्व) = सोहाग, सौभाग्य ।
- दो० ३७ मतै = राय में । लेखा = समान । करहि खरिहाना = ढेर लगाती हैं । गिउ-अभरन = ग्रीवाभरण, गले का आभूषण । नाच = नाट्य-प्रदर्शन ।
- दो० ३८ पूरी = बजाकर । मेलिकै = लगाकर । गाँव = ग्राम । मढ़ = मठ । सगुनियै = सगुन विचारनेवाले । माछ = मछली । रूप = रूपा, चाँदी । टाँका = बर्तन, पात्र । गोहराई (गोहरण) = पुकारा ।
- दो० ३९ मिलान = टिकान, ठहरने का स्थान । पौरी = पाँवरी खड़ाऊँ । अँकरौरी = अँकरौड़, कंकड़ी । दंडाकरन = दंडाकारण्य । बीभ (विजन) = निजन ।
- दो० ४० मासेक = एक मास, एक महीना । गजपती = कलिंग के राजाओं की प्राचीन उपाधि जो अब तक विजयानगरम् (ईजानगर) के राजाओं के नाम के साथ देख जाती है । बार = द्वार ।
- दो० ४१ सीस पर माँगा = आपकी आज्ञा सिर पर है । खोंगा = कमी । सकती-सीऊ = शक्ति की सीमा, अनंत

शक्तिवाला । सत बेरा = सौ बार । फिरै नहिँ फेरा = लौटाए नहीं लौटता । कोड़िया = पक्षि-विशेष, कौडिला (King fisher) ।

दो० ४२ दत्त = दान । सँती (प्रा० सु० तो) = से । भरम = भ्रम । पेले = तेजी से चले । ठाटो = समूह । उपराहीं =

बढ़कर, अधिक वेग से । सरग = आकाश । घाल = घलुआ । न घाल गनै = पसंगे बराबर भी नहीं गिनता ।

दो० ४३ सायर = सागर, समुद्र । कुरी = समूह । काँधा = कंधे पर । बेहर = अलग ।

दो० ४४ साधा = सहता है । भाग (ज्वाल) = लपट । लेइ = से । लहि = तक । गै औसान = होश उड़ गए ।

लीलै = निगले ।

दो० ४५ नाहिँ निबाहू = निर्वाह नहीं हो सकता, जा नहीं सकते । साँकर = कठिन । असि = ऐसी । निनारा = निराली (न्यारी) । कान = कर्ण, पतवार ।

दो० ४६ तुखारू = तुखारी घोड़ा जिसकी चाल बड़ी तीव्र होती है । गरियारू = सुस्त, आलसी । हरुआ = हल्का ।

भोला = भूकोरा । अगमन = आगे । खेवा = नाव, बेड़ा ।

दो० ४७ जुड़ान - शीतल हुआ ।

दो० ४८ रामा = स्त्री । सिरी-पंचमी = श्रीपंचमी, वसंत-पंचमी ।



(३) प्रेम खंड

दो० १ संयोग = प्रभाव । केवौंच (कपिकच्छु) = एक प्रकार की बेल जिसकी फलियों के रोओं के छू जाने से शरीर में खुजली होती है । ससि-बाहन = मृग । धनि = स्त्री । उरैहै लागै =

चित्र बनाने लगती । घिरिनि परेवा = गिरहबाज कबूतर । भिरिंग (भृंग) = भौरा ।

दो० २ हेही = देखी । पियर (पीत) = पीला । भौर-
दीठि—भौर सी पुतलियाँ । राता (रक्त) = अनुरक्त ।

भोरा = भ्रम । कस = कैसी, समान । तुई = तूने ।

दो० ३ मैमंतू = मतवाला । सयानी = भीर । साधु =
साधो, साधना करो । सेवाति = स्वाती ।

दो० ४ दाधा = दाह, ज्वाला । असँभारा (अ + सँभारा) =
बेसुध, न सँभालने योग्य । भौर = आवर्त, पानी की
भँवर । पौन = प्राण वायु । सेव = सेवा ।

दो० ५ रोई = रो चुकी । बिछोई = बिछुड़ा हुआ । बिछूना =
बिछुड़ा हुआ । सुहेला = साहिल नामक तारा । यह
नक्षत्र अरब देश में बरसात के पहले दिखाई पड़ता है ।

दो० ६ पंखि जौ डहना = पक्षी को जब डैने निकल आवें ।
बनोवास = बनवास । खेला = उद्यत हुआ । नर = नरसल
जिसमें लासा लगाकर बहेलिए चिड़िया फँसाते हैं, लगी । मीचु =
मृत्तु । चित्र = विचित्र । लीन्ह सब साज = मुर्दे का साज लिया,
मर गया ।

दो० ७ मनियारा (मणि) = सोहावना । हींछा (इच्छा) =
कामना । रतनागर = रत्नाकर, समुद्र । फेर = बहाना ।

दो० ८ चिनगी = चिनगारी । कंचन-करी = स्वर्ण-कली ।
ओप = चमक, ताप । पतार = पाताल । प्रिथिमी = पृथ्वी ।

दो० ९ बजागि = बज्राग्नि । कया = काया, शरीर । मयन
(मदन) = काम । बानू = वण, चमक । छाला =
मृगछाला । मिस = बहाने ।

दो० १० पावा पान = बिदा होने का बीड़ा पाया । राधा =
पूजित होकर । मारग नैन = मार्ग में लगे हुए नैन ।

आदि=प्रेम का मूलमंत्र । भिंग=भृंगी । फनिग=फतिगा ।
रितू=ऋतु । समापत=समाप्त ।

दो० ११ गवाई=व्यतीत किया । हँकारी=बुलाया । बारी=
स्त्रियाँ । परासहिं=पलाश को । बिगसि=विकसित
होकर । उपने=उत्पन्न हुए । गोहने=साथ में ।

दो० १२ आन=आज्ञा । तारामंडल=एक प्रकार का वस्त्र ।
चोला=वस्त्र, बागे । गीली=सिक्त, भगी हुई ।

दो० १३ कुरि=कुल । धमारी=क्रीड़ा । मनोरा भूमक=
एक गीत, जिसमें स्त्रियाँ मुँड बाँधकर गाती हैं ।
सैतव=संचय करेंगी । भोरी=भोली ।

दो० १४ विरह अति भारा=विरह की ज्वाला से कुलसी
सी । बीनहिं=चुनती हैं । मादर=एक प्रकार का बाजा,
मृदंग । तूर=तूही । बुक्का=अबीर । चाँचरि=होली में एक
स्वर्ग । राते=रक्तवर्ण हुए, लाल हुए ।

दो० १५ तुलानी=पहुँची । पैसारा=पैठारा, प्रवेश ।

दो० १६ तंत=तत्त्व । दसएँ लछन=योगियों के ३२ लक्षणों
में से दसवाँ लक्षण 'सत्य' है । पिंगला=पिंगला नाड़ी
सिद्ध करने के लिए अथवा पिंगला नाम की अपनी रानी के कारण ।
कजरी-आरन=कदली-वन । मुद्रा=लक्षण । अवधूत=साधू ।
पूत=पुत्र ।

दो० १७ सहुँ=सम्मुख । किंकरी (किंकरी)=एक प्रकार
का बाजा ।

दो० १८ सीर=शीतल, ठंडा । कूरा=समूह । कहाँ.....
भीड़=बलि और भीम कहलानेवाला जीव कहाँ है ?

बाज (सं० वर्ज्य)=बिना ।

दो० १९ बिहारी=विहार या सैर की । छेका=घेर लिया ।
निखेधा-निषिद्ध है । हनुवै=हनुमान् ।

दो० २० वारू = द्वार । परसन = प्रसन्न । पुरबिला = पूर्व का, पूर्व-जन्म का । सैयोग = फल ।

दो० २१ सिरावा = ठंढा करे । दुहेला = दुखी । आँक = अक्षर । परजरे = प्रज्वलित हुए ।

दो० २२ बिसवासी = अविश्वासी । सुफल लागि = अच्छे फल के लिये । जनम.....भीजा = जन्म भर यदि भीगे तो भी पानी उसके अन्दर न जाय । तरेंदा = तैरनेवाला, तैराक ।

दो० २३ हता = था । सर = चिता ।

दो० २४ कुस्टि = कोढ़ी । धनि = धन्या, स्त्री, नारी । जेहि लागी = जिसके लिये ।

दो० २५ विलमाँवा = विलंब किया, भरमाया । निस्तर = निस्तार, छुट्टी । गइ सो पूजि = वह (पदमावती) पूजा करके चली गई । डाढ़े पर दाधा = जले पर जलाया । अधजर = आधा जला ।

दो० २६ आँचर = अंचल । तोका = तुमको । तो पहुँ = तुम्हारे पास । अछरी = अप्सरा ।

दो २७ निहचै = निश्चय । डभकहिं = डबडबाते हैं, जल-पूर्ण होते हैं । परगट = प्रकट करते हैं । दुवौ = दोनों, वदन और नयन । सूत = सूत्र ।

दो० २८ मयारू = दयालु । ईसर = ऐश्वर्य । ओका = उसको । सिवलोका = शिवलोक, स्वर्ग । बाँक = बाँका, सुंदर । कोतवारा = कोतवाल, रक्षक । पाँच कोतवारा = पंच-वायु । दसवैँ दुवार = ब्रह्मांड । मरजिया = जीविकिया, वह मनुष्य जो समुद्र में गोता लगाकर मोती आदि निकालता है ।

दो० २९ ताल कै लेखा = ताड़ के समान ऊँचा । गुटेका = गुटिका, गोली । परी हूल = शोर हुआ, हल्ला मचा । खेला = विचरता हुआ आया । बसीठ = दूत ।

दो० ३० बनिजारे = व्यापारी । जुगुति (युक्ति) = अवसर,
ढंग । भुगुति = भिक्षा, भोजन । आनु = ले आ ।
भूजा = भोग । बार = द्वार, रास्ता । ओरा = ओर से, तरफ से ।
साखि = साक्षि । निहोरा = लिये, वास्ते ।

दो० ३१ रीसा (ईर्ष्या) = क्रोध । जोग = उचित । धरती...
चाट = पृथ्वी पर रहकर आसमान चाटना । मिलाओ
—रहै भूइ औ चाटै बादर । अस्ति नास्ति = बनाना-बिगाड़ना,
सृष्टि और प्रलय । बारा = देर । छारा = धूल । नए = भुके, नम्र
हुए । कोह = क्रोध । तंत = तत्त्व ।

दो० ३२ बसिठन्ह = दूत । ठाँव = स्थान । माखे (अमर्ण) =
अमर्ण हुआ, क्रुद्ध हुआ । सँजोऊ = युद्ध की तैयारी ।
पति = प्रतिष्ठा । मोखू = मोक्ष । दोखू = दोष । जोगी.....
खेले = बिना विचरण किए योगी (एक स्थान पर) कहाँ रहते हैं ?
आछै = रहने । भख = भक्षण ।

दो० ३३ लाए = लगाए । चाहा = खबर, सूचना । माभी
(मध्य) = बीच में पड़नेवाला, केवट, रास्ता दिखाने-
वाला । राती = रक्त, लाल । नाठा = नष्ट । मसि = स्याही ।

दो० ३४ राती = अनुरक्त । बसंदर (वैश्वानर) = अग्नि ।

दो० ३६ ताती = तप्त, जलती हुई । पवारी = फेक ।

दो० ३७ हौ = मैं । धिर = स्थिर, निश्चल ।

दो० ३८ आंगी = चोली । भोरी = भोली । घाला = डाला ।

दो० ३९ तहुँ = तू भी । निबाहै आँटा = निबाह सकता है ।

केत = केतकी । लेंसि = लो । महुँ = मैं भी । ओर =
अंत में । राहु = रोहू मछली ।

दो० ४० भूरा = दुःखित हुआ । कूरा = ढेर । केवा = केतकी ।
सामि = स्वामी ।

दो० ४१ पाति = पत्र । बेहराना = अलग हुआ । सँभारा
(स्मृ) = स्मरण किया । सँधि (संधि) = नकब ।

दो० ४२ सबद = व्यवस्था । जोगि...भेदी = योगी भौरे
के समान मालती का पता ले लेते हैं । राँध = परिपक्व
बुद्धि में परिपक्व । अपसवहिं (अपसरण) = जायँ । पारा =
पारद (mercury) । छरहिं = छलें, छल करें । छर = छल ।
बसाइ = बस ।

दो० ४३ गुदर = दरबार की हाजिरी । कटक = सेना ।
जूझा = युद्ध । गाढ़ = कष्ट । सौह = सामने । भारत = महाभारत
के युद्ध के समान । बाचा = वाणी ।

दो० ४४ बिसमौ = विस्मय, दुःख । नासी = नष्ट हुई ।

दो० ४५ इतराहीं = इतराते हैं । तरौ = तर जाऊँ । करवत
(करपत्र) = आरा ।

दो० ४६ बिहानी = सबेरा हुआ, व्यतीत हुई ।

दो० ४७ गरासी = प्रसित हुई । निसँस = निःश्वास लेकर ।
गंहेली = हठीली । हारि करति है = निराश होती है ।
निछोहा = निष्ठुर ।

दो० ४८ भौर.....बासा = काली पुतलियाँ खुलीं । उघेली
= उघाड़ी । दवैं = दबाता है । भाँपा = ढपा हुआ ।
चख = नेत्र । जिउ न पियार = जब प्यारा ही नहीं जीता है । सँकेत
= संकीर्णता, कष्ट ।

दो० ४९ बैद = वैद्य । धनि = स्त्री । झारा = ज्वाला ।

दो० ५० दुहेली = दुःखित । दमनहिं = दमयंती को ।

दो० ५१ पौरि = पौल, दरवाजा । भोरू = प्रभात । सूरी =
वह स्थान जहाँ मृत्युदंड दिया जाता है, सूली । रूप...
...फेरि = तुम्हारे रूप (शरीर) में अपने जीव को करके (पर-काय-

प्रवेश करके, जैसा योगी लोग प्रायः किया करते हैं) मानो उसने दूसरा शरीर प्राप्त किया ।

दो० ५२ गगनेहा = स्वर्ग में । परसेद (प्रस्वेद) = पसीना ।
तुम्ह जिउ कहँ = तुम्हारे जी को ।

(४) भेंट खंड

- दो० १ सिघलपूरी = सिघलपुरवाले । आना = लाए ।
तूरू = तुरही । मंसूरू = एक मुसल्मान फकीर जो 'अन-लहक' अर्थात् 'ब्रह्मास्मि' कहा करता था । इसी कारण काफिर वतलाकर लोगों ने उसे सूली पर चढ़ा दिया था । मसूरू ने प्रसन्नता-पूर्वक यह वंद स्वीकार किया था । भाव = कारण, उद्देश से ।
- दो० २ निबेरा = निपटारा, उद्धार । पुहुमी = पृथ्वी ।
- दो० ३ गाढ़ = कष्ट । साजू = समान, तैयारी । गुपुत = छिपकर । कटक = सेना ।
- दो० ४ बिपति = विपत्ति । दसौंधी = भाटों की एक जाति ।
भए जिउ पर = जी देने पर तुल गए ।
- दो० ५ औंधी = उलटी, नीची । बरम्हाऊ = आशीर्वाद ।
असाई = अतार्ई, बेढंगा ।
- दो० ६ अभाऊ = अशिष्ट । खरि = खरा ।
- दो० ७ भौंट करा = भौंट की भौंति । तोका = तुम्हें ।
- दो० ८ ओहठ = ओट, दूर, आँख के सामने से दूर । जा सहुँ
हेरौ = जिसकी ओर देखता हूँ । चालौ = चलाऊँ । ठाट
= मुंड, समूह ।

- दो० ९ दर=दल । ईसर=महादेव, ईश्वर । सो.....
साजा=उसी ने बैर साधा है । बारि=बाला, कन्या ।
- दो० १० जग पूजा=संसार से पूजित । हुतें=से । सहस्रक
=सहस्रों, हजारों । चढ़ाएहु=चढ़ा लाए हो ।
- दो० ११ रसना=जिह्वा, जाभ । करमहि=कर्म में ।
पति=मालिक, स्वामी । बाजा=प्रमिद्ध हुआ ।
- दो० १२ बरोक=बरच्छा, वर-दक्षिणा, फलदान । ओनाहँ
=उलटे आए ।
- दो० १३ सगरौं (सकल)=सब । लाए=लगे हुए, युक्त
दर=दल, पक्ष । गोहने=साथ में । नइ=नमित होकर,
सिर मुकाकर । ममियर=मशाल । ताईं=तक, पास ।
- दो० १४ चित्तर-सारी=चित्रमारी । माँझ=बीच में ।
बैसारा=बैठाया । पसारा=फैलाए थे । पनवार=पत्तल,
पुरइन के पत्ते की पत्तल । खड़गानी (खाँड़=पानी) शरबत,
रस । अरगजा=चंदन । कुँहकुँह=कुंकुम, केसर ।
- दो० १५ बारा=बाला, कन्याएँ, स्त्रियाँ । तरइन्ह=
ताराओं । हार.....:पाई=हार क्या पाया मानो चंद्रमा के
साथ तारों को भी पाया । सत भाँवरि=विवाह के अवसर पर दी
हुई सात भाँवरें । घुटै कै=दृढ़ करक ।
- दो० १६ छार छुड़ाई=धूल में से निकाला अर्थात् मैं
राख लपेटकर योगी बना था, अब आपने मुझे राजा बनाया ।
- दो० १७ अथवै=अस्त होता है । मँवारै=श्रृंगार को ।
पत्रावलि पत्रभंग कशविन्यास को एक विधि । मानहुँ
.....देखाव=मानो आकाश-रूपी दपेण में जो चंद्रमा और तारे
दिखाई पड़ते हैं वे इसी पदमावती के प्रतिबिंब हैं ।

- दो० १८ सदूरू = शादूर्ल, सिंह । पहुँचा = कलाइ ।
पौनारी = पञ्चनाल । होइ बारी = बगीचे में जाकर । गरब-
गहेली = गर्व धारण करनेवाली । लाजि = लजाकर ।
- दो० १९ बाचा = प्रतिज्ञा । सारी = गोटी । पैत लाएउं
= दाँव लगाया । पाकि = पक्की गोटी ।
- दो० २० तुम्ह हूँत = तुम्हारे लिए । पुहुप = पुष्प । दाधा
= दग्ध हुआ, अनुरक्त हुआ ।
- दो० २१ हेम = सोना । तयऊ = तपा । उदोती = प्रकाश ।
- दो० २२ चरचिउं = परीक्षा की, चर्चा की, भौंप लिया ।
ओनाई = अवनत की, नवाई । बानू = वर्ण । औटि =
औटकर ।
- दो० २३ दीन्ही हाथी = हाथ मिलाया । अंतरपट साजा
= आँख की ओट हो गए । सेराने (शीत) = ठंडे हुए ।
- दो० २४ अहक = लालसा । खाँगी = घटी, कम हुई ।
कापर = कपड़े ।
- दो० २५ नए चार = नई चाल से । कूईं = कोई, कोका-
बेली, कुमुदिनी । ऊईं = उगीं । नाहू = नाथ । जेहि =
जिसकी बदौलत ।
- दो० २६ बेवानू = विमान, पालकी । चौडोला = एक
प्रकार का बाजा । सोधे = सुगंध । खरी = खड़ी । घिरित
(घृत) = घी । बंदन = सिंदूर ।

—

(५) नागमती-खंड

- दो० १ नागर = नायक, रतनसेन । नरायन बावँन करा =
वामन-कला के रूप में ईश्वर । करन = राजा कर्ण । छंदू =

छल । मिलमिल = कवच । अपसवा = चल दिया । पींजर = पंजर, ठठरी ।

दो० २ रामा = नारी । नारी = नाड़ी । चोला = शरीर ।
पहर.....बोला = एक प्रहर में मुख से निकली हुई
बात समझ पड़ती है । पयान = प्रयाण, जाना । आहि = आह ।
हंस = हंस, जीव ।

दो० ३ पाठ-महादेइ (पट्टमहादेवी) = पटरानी । हारू = हार ।
मेरावा = मिलाप, मेल । टेकु = रोक । थीती (स्थिति) =
स्थिरता । वारी = (१) स्त्री, (२) बगीचा । साजन = प्रिय । अंकम =
अंक, अँकवार । पलुहंत = पल्लवित होते हैं ।

दो० ४ धूम = धूमिल । साम (श्याम) = काला । धौरे =
धवल, श्वेत । ओनई = अवनत हुई, झुकी, घेर ली । लागि
भुईं लेई = खेतों में लेवा लगा, खेत पानी से भर गए । गारौ =
गौरव । बाहिरै = (१) बाहर, (२) बिना ।

दो० ५ मेह = मेघ । भरनि परी = पानी भर गया ।
सरेखा = चतुर, श्रेष्ठ । भँभीरी = एक पतिंगा । ताकी =
देखी । थाकी = थकी ।

दो० ६ दूभर (दुर्वह) = कठिन । भरौ = काटूँ, बिताऊँ ।
अनतै (अन्यत्र) = अलग, दूसरी जगह । तरासा =
त्रास देता है । ओरी = ओलती, छाजन का किनारा । धनि = (१)
स्त्री, (२) धान । पुरबा = पूर्वा नक्षत्र ।

दो० ७ लटा = निर्बल हुआ । पलुहै = पल्लवित होती है ।
उतरी चित्त = मैं तुम्हारे चित्त से उतर गई हूँ अर्थात् तू
मुझे भूल गया है । तुरय = तुरंग, घोड़े । पलानि = कसकर । साले
(शल्य) = दुःख दे । वाजहु = लड़ो । गाजहु (गर्ज) = गर्जन करो ।
सदूर = शार्दूल, सिंह ।

दो० ८ चौदह करा = मुसलमान चंद्रमा की चौदह कलाएँ
मानते हैं क्योंकि वह एक पक्ष में केवल चौदह दिन
दिखाई देता है। अगिदाहू = अग्नि के समान दाह, ताप। भूमक =
मनोरा भूमक नाम का एक गीत। तिउहार = त्योहार। देवारी =
दिवाली।

दो० ९ बहुरा = लौटा। बिछोई = छोड़ करके, बिछोह
करके। सुलुगि = सुलगकर, जलकर। सँदेसड़ा = संदेश।

दो० १० लंका दिसि = दक्षिण की ओर। चाँपा जाई =
दबाकर पहुँचा। हियरे = हृदय में। सौर = चद्दर।
सचान = बाज, श्येन। विरह-सचान.....जाड़ा = विरह-रूपी
बाज इस जाड़े में शरीर-रूपी पत्नी को खा जाना चाहता है।
गरा = गल गया। ररि = रटकर।

दो० ११ पहल.....भाँपै—जहाँ तक रुई की तहों से शरीर
ढका जाता है। माहा = माघ में। महवट = मघवट,
माघ की मढ़ी। सर-चीरू = बाण का घाव। भोला मारना = वात
के प्रकोप से अंग का सूना हो जाना। पटोरा = रेशमी वस्त्र।
डोरा = चीण होकर डोरे के समान पतली। तिनठर = तिनका।
भोल = राख, भस्म।

दो० १२ चाँचरि जोरी = सब कुण्ड बाँधकर फाग खेलती हैं।
लगौ निहोर तोरे = तुम्हारे काम आऊँ।

दो० १३ उजारी = उजाड़ दिया। पंचम = कोकिल का स्वर।
मजीठ (सं० मंजिष्ठ) = लाल रंग का एक फल। बौरे =
बौरना। परु टूटि = टूट पड़ा। नारि = (१) स्त्री, (२) नाड़ी।
छूटि = मुक्ति, उद्धार।

दो० १४ चोआ = एक सुगंधित द्रव्य। हिवंचल ताका =
उत्तरायण हुआ। भारू = भाड़। भड़भूजों के भाड़ की

आग जो बड़ी तेजी से जलती है । बिहरत = विदीर्ण होता हुआ ।
दवँगरा = वर्षा के आरंभ की झड़ी ।

दो० १५ लुवारा = लू । गाजि = गर्जन करके । पलंका =
पर्यंक, पलंग; अथवा लंका के और आगे का स्थान ।

मंदी = धीरे धीरे जलानेवाली । अधजर = आधी जली । हाड़न्ह =
हड्डियों में । सराहिए = सराहना कीजिए ! लागि = लिये ।

दो० १६ छाजनि = छाजी, छप्पर, छत, । गाढ़ी = कठिन ।
तिनउर = तिनका । भूरौ = सूखती हूँ । बंध = ठट

बाँधने के लिये रस्सी । कंध = कर्णधार, सहायक । साँठि नाठि =
पूँजी नष्ट हो गई । मूँज तनु छूछा = मूँज के समान खोखला
शरीर । दुहेली = दुखी । टेक — आधार । बिहूनी = बिना ।
थाँभ = स्तंभ । थूनी = लकड़ी की टेक । छपर छपर = सराबोर,
पानी से लथपथ । कोरौ = काँड़ी, बाँस या लकड़ी जो छप्पर में
लगती है । जव कै = नए सिरे से ।

दो० १७ सहस सहस.....साँसा = एक एक साँस अर्थात्
पल सहस्रों दुःखों से भरा था (फिर बारह महीने
कितने दुःखों से भरे बीते होंगे ?) । तिल तिल.....जाई = तिल
भर समय एक वर्ष के इतना पड़ जाता है । सेराई = व्यतीत हुआ ।
सुनारी = नागमती । भुरि = सूखकर । गरा = गला । नेह = स्नेह ।
जुड़ावहु = शीतल करो । भंखि = दुःखित होकर । बूझि = पूछकर ।
पंखि = पत्नी ।

दो० १८ पुझार = (१) पूछनेवाली, (२) मयूर, मोर ।
चिलवासू = फंदा, चिड़िया फँसाने का फंदा । खर =
तीक्ष्ण । हारिल = (१) थकी हुई, (२) एक पत्नी । रोख = रोष ।
बया = एक पत्नी । गौरवा = चरक पत्ती । तिलोरी = देसी मैना ।
कटनंसा = काटने तथा नाश करनेवाला, कटनास या नीलकंठ ।
निअर = समीप ।

दो० १९ करमुखी = कलमुँही, काले मुखवाली । सेराव = ठंडा करे । ताती = तप्त । रासी = ढेर, समूह । परास = पलाश । देसरा = देश । हेवंत = हेमंत ऋतु ।

दो० २० न लावसि आँखी = आँख न लगना, नींद न आना । कारन कै = करुणा करके, दुःख से । कंत-बिछोही = जिसका कंत से वियोग हो, विरहिणी । सेवात कहँ = स्वाती के लिये । नाहू = पति, स्वामी । तब हुँत = तब से । टेक = ऊपर लेता है ।

दो० २१ बीरा = भाई । भिउँ = भीम । आँगवै = सह । चाहा = खबर । किँगरी = किंकरी, चेरी । पाँवरी = जूती । खप्पर = पात्र, जिसे कापालिक लोग लिए रहते हैं । किँगरी = चिकारा, एक बाजा ।

दो० २२ बरता = व्रत । रावट = रावटी, महल । रावट लंक = जलती हुई लंका । बारी = बाला । चाहनहारी = देखने वाली ।

दो० २३ बराहीं = जलते हैं । सरवन = श्रवणकुमार । (श्रवण-कुमार की कथा उत्तर भारत में प्रचलित है । यह कथा वाल्मीकीय रामायण में मरने से पहले दशरथ ने कौशल्या से कही है । कहते हैं कि श्रवण अपने अंधे माता-पिता को बहंगी पर लिए हुए फिरता था और उनकी सेवा करता था । राजा दशरथ ने अनजान में उसे मार डाला । तब श्रवण के बूढ़े माता-पिता के शाप से उन्हें पुत्र-वियोग के कारण मरना पड़ा । थोड़े परिवर्त्तन के साथ यह कथा बौद्धजातकों में मिलती है और एक प्रकार के साधु इसे गाते फिरते हैं ।)

दो० २४ उत्तंग = ऊँचा । गँभीर = गहन, घनी । तुरय (तुग) = घोड़ा । पंखिन्ह = पक्षियों की । सामा = श्यामा । मासक दुइ = दो मास के लगभग । दाढ़े = दग्ध हुए ।

दो० २५ निसरा = निकला । धुँध = अंधकार । बाजा = छाया । कोइल-बानी = कोकिल के से वर्णवाली, काली । भारा = उवाला । बेसा = भेस । महूँ = मैं भी । भरौ = गिनता हूँ, बिताता हूँ ।

दो० २६ घमोई = सत्यानाशी नामक वनस्पति, भँड़भौड़ । बँधा = बाँधकर । काँवार = बहँगी, जिसे कंधे पर रखते हैं । इसके दोनों छोरों पर दो छींके लगे रहते हैं । पाँजर = पंजर, कंकाल, ठटरी । जरी = जड़ी, ओषधि ।

दो० २७ सगरौ = सब । गोहरावा = पुकारा । अलोप = लुप्त । साँखा = शंका । बिसँभर = बेसुध । बारा = द्वार पर । दो० २८ काँच = शीशा । पाती = पत्र । हम्ह = मेरी । आउ = आयु ।

दो० २९ सवारी = सब । बिरवा = विपट । भावा = अच्छा लगता है । दिवस देहु = दिन नियत कीजिए । सिधा-वहि = सिधारें । गवने कर = गमन का, चलने का ।

दो० ३० नेवारी = जूही की जाति का एक फूल । नागसेर = (१) नागमती, (२) एक प्रकार का फूल । बोल = एक प्रकार की भाड़ी जो अरब की ओर होती है । सदवरग = गेंदा । उठा धसकि = दहल उठा । निछोह = स्नेह-रहित ।

दो० ३१ गरब = गर्व । किरोध = क्रोध । तूरै = तोड़े ।

दो० ३२ टेक = रोक । गुरेरा = साक्षात्, देखादेखी । देइ पारै = दे सकता ।

दो० ३३ बाउ = वायु । उलथाना = उमड़ा । ताके = देखते हुए ।

दो० ३४ पाटा = पटरा, तख्ता । लच्छि = लक्ष्मी । सेंती = साथ । तीवइ = स्त्री को ।

दो० ३५ कागर = कागज । पतरा = पतला । झीजा = कम हुआ । कोरै (कोड़) = गोद में । बोलि कै = बुलाकर

दो० ३६ पसारि = फैलाकर । चेती = चेत करके, होश करके ।

बही = बहती हुई । आथि = सार, पूँजी । निआथि = निर्धनता । आथि निआथि = धन और निर्धनता दोनों में ।

दो० ३७ भहर भहर = भर भर करता हुआ, आग जलने का शब्द ।

बरा = बला, जला । माँग = माँगती थी । पाहुन... कोई = अतिथि समझकर सब पानी देती हैं और हवा करती हैं । खीन = क्षीण । बर = बल, सहारे । खरी = खड़ी । आरंभ = नाद, कूक । सो = वह ।

दो० ३८ लागि बुझावै = समझाने-बुझाने लगी । खटवाटू = खटपाटी । स्त्रियाँ प्रायः रुठकर खाट पर जा पड़ती हैं ।

सेसा = शेष । चालि = चलाई ।

दो० ३९ मेरवसि = मिलता है । आउ = आयु । बिछोहा = वियोग ।

दो० ४० गीउ = गला, ग्रीवा । बैसाखी = लाठी । अपघाता = आत्मघात । परिहँस = ईर्ष्या ।

दो० ४१ भाँ डे = शरीर में । निरमर = निर्मल । हुती = थी । बहल = बहली, गाड़ी । दुहेल = दुःख ।

दो० ४२ बेरा = बेड़ा । तहूँ = तू भी । अनु = हों । मोकाँ = मुझे, मुझको । सिवलोक = स्वर्ग । बाउर = बावला । भा बाट = रास्ता पकड़ा ।

दो० ४३ निछोई = स्नेह-रहित ।

दो० ४४ परमा = स्पश किया । रज = धूल । अचरज = आश्चर्य्य । रज मेट = आँसू से पैरों की धूलि धो डाली ।

दो० ४७ सरवन (श्रवण) — कान । बंसू = वंश । सावक = शावक । सादूग, (शादू ल) = सिंह । परस = स्पशे-मणि, पारस पत्थर । मूरू = मूल । कटक = सोना । पयान = प्रयाण । सकान = डर गए ।

- दो० ४७ अँदोरा = आंदोलन, हलचल । तुचा = त्वचा । सुचा
= सूचना, सुध । सहेलरी = सहेली । उवा = उगा ।
- दो० ४८ सोअर = शीतल । नए चार = नए सिर से । खन
= क्षण । दर = दल । ओनए = घेरे । अठारह गंडा =
अवध में जनसाधारण के बीच यह बात प्रसिद्ध है कि समुद्र में ७२
नदियाँ मिलती हैं ।
- दो० ४९ बेवान् = विमान, पालकी, सवारी । आनू = दूसरा
ही कुछ (भाव) । झार = ज्वाला, जलन । हैम सेत
= सफेद हिम, पाला । उघरि गा = खुल गया ।
- दो० ५० निधनी = निर्धन । बोहारा = बटोरा । मैंगतन्ह =
मंगनों को । डाँग = डौड़ी ।
- दो० ५१ दाही = अग्नि । पोढ़ = कड़े, पुष्ट । पलुहाई =
पल्लवित की । ठावँ = स्थान ।
- दो० ५२ डफारा = दाढ़ मारती है । नखतन्ह-मारा = नक्षत्रों
की माला । निसौंसी = निःश्वास । रहँट = रहट, जलयंत्र ।
घरी = घड़ा । पंक = कीचड़ ।
- दो० ५३ नागिनी = (१) नागिन, (२) नागमती । हिरकै =
पास जाय । करिया = काला ।
- दो० ५४ गहगहे = प्रसन्नतापूर्वक । सारिउँ = सारिका ।
रहसत = केलि करते हुए । खूसट = उल्लू, मनहूस ।

(६) राघव चेतन खंड

- दो० १ चेतन = चेतना-युक्त, पंडित । आऊ सरि = आयु
पर्यंत । बाउर = वातुल, पागल । सरेखा = होशियार,
सचेत, चतुर । जाखिनी = यक्षिणी ।

दा० २ कौन अगस्त...सोखा = इतनी प्रत्यक्ष बात को कौन

पी जा सकती है ? दिस्टिबंध = कौतुक, इन्द्रजाल । कल्ह = कल । चेटक = कलाबाजी, माया । चमारिनि लीना = कामरूप की प्रसिद्ध जादूगरनी लीना चमारी । काँवरू = कामरूप । एक दिन... लावै = (१) जब चाहे, चन्द्र ग्रहण कर दे, (२) पद्मावती के कारण बादसाह की चढ़ाई का संकेत भी मिलता है । छला = छल किया ।

दो० ३ बानि = वर्ण, रंग । निसारा = निकाला ।

दो० ४ निहकलंक (निष्कलंक) = कलंक रहित । मारा = माला ककन = कंगन । कोरी = कोटि, करोड़ । पवारा = फेंका ।

दो० ५ दोखा = दोष । परेतू = प्रेत । सनिपातू = सन्निपात रोग । मिरगी (मृगों) = एक प्रकार का रोग । वातू = वायु । धूत = धूर्त ।

दो० ६ सँकेता = सकट । पराइ = दूसरे की । लाई ठगौरी = मोह लिया; बेसुध कर दिया । बौरी = पागलपन की । बटपारा = हरजन, रास्ते में लूट-मार करनेवाले । बरज = रोके । गोहारी = मदद को दौड़े । बटपारी = लूट । ठगलाडू = वे लड्डू जिन्हें खिलाकर ठग पथिकों को बेसुध कर देते हैं । और उनका धन लूट लेते हैं । अलक = बाल ।

दो० ७ दच्छिना (दक्षिणा) = दान । हँकारी = पुकारकर, बुलाकर ।

दो० ८ एता = यहाँ । संसौ = संशय । रहनि = रहना । सबेरा = शीघ्र । एत = इतना । खाँगौ = मुझे कमी हो । ठरै = ठले । टकसारा = टकसाल, जहाँ मुद्रा बनाई जाती है । बारह बानी = द्वादश वर्ण का, खरा सोना । दिनारा = दीनार नामक स्वर्ण = मुद्रा ।

दो० १० मया = मेहरबानी की । हँकारी = बुलाकर । पूजा = वराबरी कर सका । मनि = मणि । अछरी = अप्सरा ।

दो० ११ परगसा = प्रकाशित हुआ । जोग = योग्य । नावें भिखारि.....बाँची = भिखारी समझकर अभी तक तेरी जीभ खींच नहीं ली गई । सँभारि = स्मरण कर, होश कर । जोरे = एकत्र किया । देखि लोन...बिलासी = लावण्य को देखकर लवण की भाँति तू गल जायगा । चक्कवै = चक्रवर्ती राज करता हूँ ।

दो० १२ अनु = यह ठीक है । कहवावा = कहलाया । चितेर = चित्रकार । चित्र कै = चित्र बनाकर ।

दो० १३ बेकरारा = बेकरार, विकल । डासहिं = बिछाती हैं । सौर - चद्दर । जो जो.....देखी अपने रनि-वास की जिन जिन रानियों को उसने पद्मिनी समझा था वे पद्मिनी का वृत्तांत सुनने पर कोई सी जान पड़ने लगीं । कै चूरु = चूर करके । मलिन = हतोत्साह ।

दो० १४ पाहाँ = से । पदारथ = उत्तम । परस = पारस । रोभ = घोड़रिच, नीलगाय । लागना = लगनेवाला, शिकार करनेवाला । सचान = बाज पक्षी । सायर = सागर ।

दो० १५ पहिरावा = वस्त्र पहनाया । जोरा = जोड़ी । कोरी = कोटि, करोड़ । दिनार = दीनार नामक स्वर्णमुद्रा । जेंवा = दक्षिण में । सरजा = दूत का नाम । ताजन = कोडा । करा = कला । अनेग = अनेक ।

दो० १६ दैउ = दैव, आकाश । बोल्हू = वचन ।

दो० १७ घरनि = घरनी, स्त्री । सक-बंधी = साका चलाने-वाला । रोहू = मछली । सैरंधी (सैरिंधी) = द्रौपदी । ताका = देखा, दृष्टि डाली । मोछा = मूँछ ।

दो० १८ आपु जनार्ह = अपने को जनाकर, अपनी बड़ाई करके । छिताई = स्त्री-विशेष । बारा = देर । माख = अमर्ष, रोष, वैर । अगमना = आगम, भविष्य में होनेवाली घटना ।

दो० १९ बूझा (बुद्ध) = बोधित हो । बर खाँचा = हठ दिखाता है । दुंद = दुंदुभी, डंका । सकाना = शंकित हुआ । बारिगह = डेरा, खेमा । बेसरा = खचचर । लीन्ह पलानै = घोड़े कसे । सरह = शलभ, टिट्डी ।

दो० २० पैगड़ = परिग्रह । बाँक = बाँके, तीखे । कनकानी = एक प्रकार के घोड़े । लोहसार = लोहे का सार, फौलाद । बाने = बाना, पहनावा । पाग = सकता है । जँबुर = एक प्रकार की तोप । खदंगी = खदंग, वाण, तीर । बेहर बेहर = अलग-अलग । पयान = प्रयाण, यात्रा ।

दो० २१ दर = दल । दौराई = दौड़ाया, शीघ्र भेजा । मेंड़ = बाँध, रोक । पार छँड़ाई = छुड़ा सकता है । बारि = पानी ।

दो० २२ परेवा = दूत । एकमते = एकमत । नाता = संबंध । जौहर = राजपूतों में प्रथा थी कि उनके हारने पर उनकी स्त्रियाँ आग में कूदकर जल मरती थीं । इसे जौहर कहते थे । लेखा = नाई, दशा ।

दो० २३ खाँग = कमी । बाँके चाहि बाँक = विकट से विकट । धानुक = धनुषवाले । आँटी = पर्याप्त हुई । अँगुरन = अंगुल । ठारे = खड़े । लेखे लाव = गिनती में आवे ।

दो० २४ जूहा = यूथ, समूह । रूहा (आरूढ़) = चढ़ा । की धनि..... राजा = या राजा रत्नसेन तू धन्य है । ब्रैरख = भंडे । छार = धूल । जेवनार = लोगों की रसोई में ।

दो० २५ सँजोऊ = तैयारी । अकूत = अगणित । असु = अश्व । धुजा = ध्वजा, पताका ! अनी = सेना ।

दो० २६ सेन = सेना । अवाई = आगमन । लोहे = हथियार । अगाऊ = सामने । सकति... पोखि = शक्ति भर सब

पोषण करते थे । ओछ...जानब = ओछा पूरा (भली भाँति) उसे समझो । थिर = स्थिर । आवत जोखि = समझता है ।

दो० २७ अथवा = अस्त हुआ । भा बासा = डरा हुआ ।
नखन = नखत्र ।

दो० २८ गरेरा = घेरा, धावा । छेंका = छेंक लिया, घेर लिया ।
गरगज = बुज जिस पर तोप रखी जाती है । दारू =
वारूद । ओदरहि = विदीर्ण होते हैं, ढह जाते हैं । रावटी = महल ।

दो० २९ राजगीर = थवई, मेमार । थवई = मेमार । गाजा =
बिजली, वज्र । परलै = प्रलय । जूझ = युद्ध । सौह =
सामने । घन-तारा = बड़ा झोंझ ।

दो० ३० गूँजा = गरजा । मिरिग = मृगनयनी । चाँद = चंद्र-
मुखी । भूजा = भोगेगा । साँचा = शरीर । उड़सा = भंग
हो गया । तारा = ताली ।

दो० ३१ अरदासैं = पत्र । हरेव = देश-विशेष । थाने =
चौकियाँ । परावा = दूसरे का । जिन्ह.....बबूर =
जिन रास्तों में इतनी सफाई थी कि तिनका भी नहीं जमता था
वहाँ बेर, बबूर उगे हैं ।

दो० ३२ आन = दूसरी । गढ़ सौ...छूटै = गढ़ से जब उलझ
गए तब या तो सन्धि होने पर या किला टूटने पर ही
छूट सकते हैं । भेऊ = भेद । सेऊ = सेवा । चूरा कीन्ह = तोड़ा
हुआ । अग्या = आज्ञा । छाजा = सोहता है, उचित है ।

दो० ३३ ऐगुन = अवगुण । भँडारा = भाँडार, धन । इसकदर =
सिकंदर । दारा = फारस का राजा जिस पर सिकंदर ने
चढ़ाई की थी । इसकंदर...दारा = अर्थात् यदि मैं बादशाह की
चढ़ाई से बच जाऊँ । बाचा-परवाना = वचन-प्रमाण । नाव = नवाए ।

नाव...ग्रीवा = जो भार सिर पर रखकर गर्दन हिलाता है अर्थात् जो उत्तरदायित्व लेकर हिचकता है । सरजै = सरजा नामक दूत ।

दो० ३४ हुत = से सोनहार = समुद्र का पत्नी । ढाँड़ा = पालकी । रूपै कै = चाँदी की । काँड़ी = पींजरा । जोरे

धनुक...वानू = जो अब वह किले में जाने पर किसी प्रकार की कुटिलता करेगा तो उसके सामने फिर बाण होगा (धनुष टेढ़ा होता है और बाण सीधा) कोहू = क्रोध । रसोइ = भोजन ।

दो० ३५ जत = जितने । कहँ = के लिये । जेवाँ = भोजन किया । विवान = विमान । पँवार = दरवाजा । उरेह = चित्र । जिन्ह ते नवहिं करोरि = जिनके सामने करोड़ों आदमी आवें तो डर जायँ ।

दो० ३६ केवरा = किवाड़ । भँवरी = चक्कर, घेरा । छह-राने = छितराए हुए । ओनाहिं = आकर्षित होते हैं ।

दो० ३७ अगोरे = रखवाली करें ।

दो० ३८ गुन = गुण, तागा । खौँच = खींचता है ।

दो० ३९ रावत = सामंत । मेरू = मेल । सिंह मैजूसा = कथा है कि एक ब्राह्मण ने एक सिंह को पिंजड़े से निकाल दिया था । वह उसे खाने दौड़ा । दोनों में वाद-विवाद होने लगा । एक श्रगाल पंच हुआ उसने कहा—पहले सिंह पिंजड़े में चला जाय तो हम न्याय करें । सिंह पिंजड़े में चला गया । ब्राह्मण ने द्वार बंद कर दिया और अपना रास्ता लिया । सिंह अपने किए का फल पा गया । सिंह छान अब गोन = सिंह अब गोन (रस्सी) से बँधा चाहता है ।

दो० ४० निसरीं = निकलीं । रायमुनी = लाल पत्नी । सारँग = धनुष ।

दो० ४१ कहँ केतकी...बासी = वह केतकी यहाँ कहाँ है (अर्थात् नहीं है) जिस पर भौरे बसते हैं । पदारथ =

रत्न । हना...परछाहीं = अजुन ने तेल में मछली की छायादेखकर रोहू मछली को बाण से मारा था और द्रौपदी से व्याह किया था । सँधान = अचार । बूकहि बूक = मुट्ठी भर भर कर ।

दो० ४२ खँडवानी = शरवत, रस । अरगजा = चन्दन । कुहँ, कुहँ = कुमकुम, कंसर । थारहि = थाली में । घालि... पागा = गले में पगड़ी डालकर, नम्रता तथा विनय-सूचक चेष्टा है । सीउ = शीतल, शांत । सुदिस्टि = कृपादृष्टि । माँडौ = एक प्रांत ।
दो० ४३ भीति = दीवाल । लावा = लगाया । तरई = तारागण । परगासी = प्रकट किया : कहा । कित... आव = चित्तौर में कहाँ आता है । जेहि = जिससे ।

दो० ४४ सरेखी = चतुर । परस भा लोना = पारस का स्पर्श सा हो गया । रुख = शतरंज का रुख । रुख = सामना । भा शह मात = (१) शतरंज की बाजी हार गया, (२) पद्मिनी को देखकर बेसुध हो गया अथवा अपना हृदय हार गया । भाँपा = ढाँपा, छिपा । लागि सोपारी = सुपाड़ी लगी । कभी कभी सुपाड़ी खाने से अधिक गर्मी होती है और मनुष्य बेसुध हो जाता है । इसे सुपाड़ी लगना कहते हैं । पौढ़ावहि = सुलाते हैं ।

दो० ४५ विसमयऊ = विस्मय हुआ । अंतरपट = पदों । पानि न होई = हाथों में नहीं आता था । करन्ह अहा = हाथों में था । लौकि गई = दिखाई पड़ गई । पतीजु = पतियाओ, विश्वास करो ।

दो० ४६ चित कै चित्र = चित्त में अपना चित्र पैठाकर । जोरू = जोड़ा । आँकुस = अंकुश । नाग = साँप (बाल की लटें) । महाउत = हाथीवान । मिरिग = मृग, यहाँ नयनों से तात्पर्य है । गवन फिरि किया = फिरकर चली गई । ससि भा

नाग = जब लौटकर चलो तब शशि (मुख) के स्थान पर नाग (बेणी) मेरे सम्मुख हो गया । सूर भा दिया = उस नाग (बेणी) को देखते ही सूर्य (बादशाह) दीपक के समान तेजहीन हो गया (ऐसा कहा जाता है कि साँप के सामने दीपक की लौ फिलमिलाने लगती है) । उचका = कूदा, ऊपर उठा । हेरत = ढूँढ़ते हुए, देखते ही । आछत = है, अस्तित्व है । असाध = असाध्य । यह तन... सकै न = यह शरीर पंख लगाकर क्यों नहीं उड़ जाता ।

दो० ४७ निसचै = निश्चय । बेधिया = अंकुश । दिया चित भयऊ = उस नागिन के सामने तुम्हारा चित्त दिए के समान तेजहीन हो गया । अब सोई मति कीज = अब वही विचार कीजिए । रस लीज = रस लीजिए ।

दो० ४८ मोत पै = मित्र से । अगाह = आगे, पहले से । अगूठी = घेरा । माछू = मत्स्य । काछू = कच्छप । चीत = चेतता है, विचारता है । दोह = द्रोह । चांत सामि कै दोह - जिसके चित्त में स्वामी का द्रोह होता है ।

दो० ४९ साँकर श्रृंखला । मँजूषा = पिंजड़ा, कैदखाना । ऐस'... दुहेला - शत्रु को भी ऐसा दुःख न हो (जैसा दुःख राजा को हुआ) । बखाना = चर्चा, हाल । खूँदा = कूदा । मूँदा = बद्ध किया । मीन = मत्स्यावतार । पडव = पांडव । अथवा = अस्त हुआ ।

दो० ५० निचिंत = निश्चित । छाए = रहे । निबहुर = वह स्थान जहाँ जाकर कोई न लौटे । लेजुरि (रज्जु) = रस्सी । ढारै = ढालै, गिरावे ।

दो० ५१ नागा = नागमति । पलुहै = पल्लवति हो । तचा = तप्त, दुखी । नाह = नाथ ।

(७) गोरा बादल खंड

दो० १ हिय-सालू = हृदय में सालनेवाला, खटकनेवाला ।
छर = छल । नेबरै = निपटे, पूरी हो । जोई = जोय, स्त्री ।

बिरिध = वृद्ध, बूढ़ी । बर = बल । कर बर छर = कल बल छल ।

दो० २ खेरौरा = एक प्रकार की मिठाई । डाल = डाला
या बड़ा थाल । पै न = प्रतिज्ञा । बैस = बयस । बेवसाई =
व्यवसाय, काम । हेरान = खो गया ।

दो० ३ जोहन मोहन = देखते ही मोहनेवाला (मंत्र) ।
बरोठा = बैठक । लीन्हें = गोद में लेकर । सीपा = सीप से ।

दो० ४ गोई = गोत्री, गोत्रवाली, संबंधी । गोउ तूरि = गला
मरोड़कर । कंत = पति । कुहुकि = कूकभरकर ।

दो० ५ सुठि = अच्छी तरह । रूप-डार = चाँदी का थाल ।
करमुखी = कलमुँही । जिसका मुख काला हो । आन
(अन्य) = दूसरा । बैन = वचन, बकवाद, बक-बक ।

दो० ६ खभारू = खँभार, शोक । कस = कैसे । सँकेती =
समेटकर । और...सँकेती = उस हाथ से और वस्तु
नहीं छुऊँगी जिस हाथ को एक बार समेट चुकी हूँ । ओहि.....
दीठी = उस रत्नसेन-रूपी रत्न के स्पर्श से मेरा हाथ लाल हो गया
है । जब हाथ पर मोती लेती हूँ, तब आँखों के तिल की छाया पड़ने
पर वह मोती, जो हाथ के स्पर्श से लाल हो गया है, काले दागवाला
हो जाता है और गुंजा के समान दिखाई पड़ता है । पारे = सके ।
करुवा = कड़ुवा । रूख = रूखा । सवाद = स्वाद ।

दो० ७ रहसि = रहती है (तू) । कोरैर = कोमल । बैस =
बयस । पौनारी = पद्मनाल । तमोरा = तांबूल । सँभार =
चित्त को ठिकाने करना । बार = देरी ।

दो० ८ उजार = उजाड़ । माढ़ी = मंच, मचिया । जामी =
लगी ।

दो० ९ काहँइ = क्रोध करता है । भँवर...परगटा = भँवर के
हटने पर (वर्षा बीतने पर) हंस आते हैं । अर्थात् काले
बालों के बाद सफेद बाल दिखाई देते हैं) छपान = छिपा । विरासी
= विलासी । परासी = भागेगी । विरिध = वृद्धावस्था । बान =
बाण । धनुक = टेढ़ी कमर ।

दो० १० खेरा = घर, बस्ती, स्थान । थर = स्थल, स्थान ।
सेवा = सेवा करते समय । पछितासि = पछताएगा ।
लोना = सुंदर । कोप = कॉपल ।

दो० ११ रँग = भिखारी । रँचा = आसक्त हुआ । बाटा =
रास्ता । दिढ़ = दृढ़ । सोहाग = सौभाग्य । सँवरा =
स्मरण किया । हेरा = हूँदा ।

दो० १२ रसोई = भोजन । जेहि...होई = जिसमें दूसरा
प्रकार न हो, जो एक ही प्रकार की हो । भरै न हीया =
जी नहीं भरता, संतोष नहीं होता ।

दो० १३ मसि चढ़ावसि = कालिख पोतती है । कापर =
कपड़ा । माखी = मक्खी । बिलाइ = विलीन हो, नष्ट हो ।

दो० १४ मसि = दुष्ट, बुरा । मुद्रा = मोहर । भँवाहीं =
भ्रमते हैं । केसहि = केश में । उरेही = उल्लिखित ।
मसि बिनु...देही = बिना मिस्सी के दाँत मुख में अच्छे नहीं
लगते । पिंड = शरीर । बिसरि गा = विस्मृत हो जायगा ।

दो० १५ पंकज.....फेरी = कमलनयनी ने भौहें टेढ़ी कीं ।
* दुःख भरा...केसा = शरीर में जितने रोएँ या बाल नहीं
हैं उससे अधिक शरीर में दुःख भरा है । बेसा = वेश्या । हरुवा =

हलका । सोन नदी...हरवा = महाभारत में शिला नाम की एक ऐसी नदी का उल्लेख है जिसमें कोई हलकी चीज डाल दी जाय तो डूब जाती है और पत्थर हो जाती है । फेरत नैन = इशारा करते ही । भइ...कूटीं = कुटनी को खूब पीटा ।

दो० १६ छाला = फफोले । सोनवानी = स्वर्ण के वर्णवाली । बार = द्वार ।

दो० १७ पारथ = अर्जुन । बेहरा = फटा, विदीर्ण हुआ । मुकरावौ = मुक्त कराऊँ । गवनब = जाऊँगी ।

दो० १८ पसीजे (प्रस्वेद) = दयार्द्र हुए । रुहिर = रुधिर । कोहाने = क्रोधित हुए । निआन = निदान, अंत में ।

पलानि = जीन । अंकूरु = अंकुर । ससहर (शशधर) = चंद्रमा ।

दो० १९ भुवारा = भुवाल, राजा । आँके = गिने जाते हो । भ्रम = प्रतिष्ठा ।

दो० २० बीरा लीन्हा = बीड़ा उठाया, प्रण किया । बर = बल मसि = अंधकार । जसोवै = यशोदा । पाया = पैर ।

बारा = पुत्र । जुभारा = युद्ध ।

दो० २१ आदि = केवल, सिर्फ । सिंघेला = सिंह का बच्चा । सँकरे = सँकीर्ण अवस्था में । ढार = ढाल । भारा = भाला

छोरौ = छुड़ाऊँ ।

दो० २२ गवन = गौना । फेंट = फेंटा, कमर में बँधा डुपट्टा ।

दो० २३ पेलौ = ठेल दूँ, लात मार दूँ । पुरुष...काछू = जिस प्रकार हाथी का निकला दाँत भीतर नहीं पैठ सकता उसी प्रकार पुरुष का वचन लौट नहीं सकता, पुरुष का वचन कछुए का गला नहीं है कि जो क्षण क्षण बाहर भीतर होता रहे ।

दो० २४ करवाने = क.डवाने । जिउ काँधा = जी को कंधे पर रखकर अर्थात् प्राणों को हथेली पर रखकर । मत्तै =

सलाह करते हैं । छर = छल । बर = बल । आँट = आँटे, पार पा सके ।

दो० २५ चंडोल = पालकी । संजोइल = सजाकर । बैठ लोहार...भानू = इसे सूर्य भी नहीं जानता था कि उसके भीतर लोहार बैठा था । ओल = जमानत । तुरी = तुरंग, घोड़े ।

दो० २६ सौपना = देखरेख में, निरीक्षण में । अगमना = आगे । अँकोरा = घूस, रिशवत । किल्ली = कुंजी । स्यो = साथ ।

दो० २८ जाइ एक घरी = एक घड़ी के लिए जाय । छूँछी... भरी = जो घड़ा खाली था उसे ईश्वर ने फिर से भरा अर्थात् अच्छी घड़ी आई । छूँछि = खाली । खाँडै = खझ । तीख = तेज । गगन सिर लगा = आकाश तक कूदा । जो...सँभारा = जो जान पर खेलकर तलवार उठाता है । छर कै...जाहि = जिनसे छल किया गया था वे उलटे छलकर जा रहे हैं ।

दो० २९ गोइ लेउ जाऊ = चौगान (पोलो) के खेल में बल्ले से गेंद निकाल ले जाना । गोइ = गेंद ।

दो० ३० परति...कारी = अंधकार होता जाता है ।

दो० ३१ हौंका = ललकारा । सोहिल = एक तारा जिसे अगस्त्य कहते हैं । यह वर्षा के अंत में उगता है । डुँगवै (दुर्ग) = किला, धुम्सा । जमकातर = यवन-समूह, राक्षस । मेंड = बाँध । टेकौ = रोकूँ । बेंड़ा = आड़ा, तीखा, टेढ़ा ।

दो० ३२ बान = बाण । बादी = दुश्मन, शत्रु । हरद्वानी = स्थान-विशेष की बनी (तलवार) । उठौनी = धावा । स्यों = सहित । बखतर = कवच । कूँड़ = टोप ।

दो० ३३ बगमेल = हाथों हाथ की लड़ाई । भारत = युद्ध ।

दो० ३४ ठटा = समूह । करवारू = करवाल, तलवार । लावा = लगाया । धूका = दुका, मुका ।

- दो० ३५ छेका = घेर लिया । गाजा = गर्जा । वाजा = लड़ा । खसी = गिरी ।
- दो० ३६ निहाऊ = निहाई ।
- दो० ३७ भूरी = उदास । आरति = भेंट ।
- दो० ३८ परसि = छूकर । तुरय...दाब = बादल के घोड़े के पैर सहलाये ।
- दो० ३९ सालू = दुःख । पेखा = देखा । नेवरै = निपटै ।
- दो० ४० एकौभा = अकेले, एकाएकी । भारा = भाला । मँफवार = रास्ते में ।
- दो० ४१ साँटी = कोड़ा, छड़ी । नेगी = नेग पानेवाले ।
- दो० ४२ पटोरी = वस्त्र । छहरावै = छितराऊँ, बिखराऊँ ।
- दो० ४३ अगूता = आगे, सामने । चाहहि सूता = सोना चाहती हैं ।
- दो० ४४ सर = चिता । पौढ़ीं = लेटीं । सहगवन = सती । अखारा = सभा में । पिरथिमा = पृथ्वी, संसार । जौहर भई = सती हो गई, जल गई । भए संग्राम = लड़ाई में मरे । चूरा = चूर्ण किया । भा इसलाम = मुसलमानी राज्य हुआ ।
- दो० ४५ जोरी = जोड़ी । लेई = वह पदार्थ जिससे जोड़ा जाता है, लासा । भेइ = भिगोई । हम्ह = मुझे । सँवरै = याद करेगा । दुइ बोल = दो बार, दो शब्द ।

